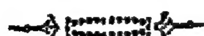
कृतज्ञता के दो शब्द



जिन जिन महानुभावों के जो भी पद्य व गायन एवं इतिहास इस पुस्तक में दिये गये हैं उन-उन महानुभावों के नाम भी वहीं पर अंकित हैं प्रकाशक उनका बड़ा ही कृतज्ञ है। साथ ही जिन महानुभावों के नाम छपने में गलती से रह गये हों वे महानुभाव कृपया अपना नाम लिख भेजें ताकि अगले संस्करण में उनका नाम मुद्रित हो जाय।

प्रार्थी :—

रमाकान्त पाण्डेय

प्रवन्धकर्ता निःशुल्क—"सङ्गीत सदन"

मु० पो० श्री अयोध्या जी (उ० प्र०)

❀ ध्यान से पढ़ें ❀

नोट— इस पुस्तक में ६३ इतिहास १२ भागों में प्रकाशित किये गये हैं जो भारत के बड़े बड़े उपदेशकों तथा विद्वानों के बनाये हुये इतिहास पद्यों काव्य इस पुस्तक में मिलेंगे। द्रव्यहीन संस्थाओं तथा गरीब विद्यार्थियों से इस पुस्तक का केवल २॥) अढ़ाई रु० लिया जायेगा डाकखर्च अलग।

प्रार्थी—प्रकाशक—

निःशुल्क संगीत सदन

पो० श्रीअयोध्याजी धाम (उ० प्र०)



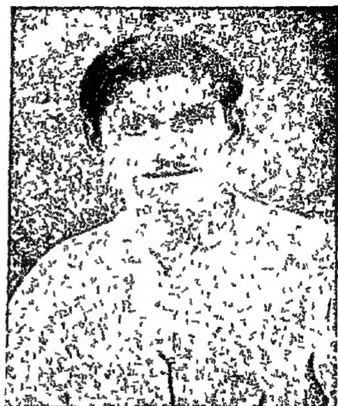
संगीतसम्राट—श्री पं० भगवतकिशोरजी 'व्याकुल' स० ध० प्र० भू० पू० स्पेशल गायनाचार्य एवं हा० प्रो० टी० न्यू० अलफ्रेड थि० कं० बम्बई।

* लोकोपकारार्थ *

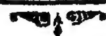
संस्थापक—

निःशुल्क-संगीतसदन

तन लड़कपन और जवानी,
सब बदलता जायगा।
यादगारी के लिये फोटो,
फकत रह जायगा॥



श्री 'व्याकुल' जी महाराज के प्रधान शिष्य श्रीसीतारामजी गुप्त 'कोकिलकण्ठ' मु० पो० शुम्हाँ जि० मुजफ्फरपुर (विहार)



ताल तत्व बोध

ताल सम्बन्धी चिह्न

सम-जहाँ लय का विश्राम होता है उसे सम कहते है। उसका चिन्ह इस प्रकार है +

खाली-जहाँ पर शून्य हो उसको खाली समझना चाहिये वह चिह्न इस प्रकार है। ०

ताली-जहाँ पर अंक लिखे हों उन्हें अङ्कानुसार ताल समझना चाहिये। जैसे २-३-४-५-६-७ इत्यादि ध्यान रहे। सम पहले ताल पर होता है। १ + नहीं लिखा जाता बल्कि + यह चिन्ह दिया या लिखा जाता है—भूले नहीं।

१-१ मात्रे का बोल

धा धिन्ता तृकिट तिटकत गिद् गिन धा इत्यादि

खासबात

ताल प्रकरण में ताल नाम मात्रा ताली खाली भाग सम विसम अतीत अनाघात आड़ी कुआड़ी लय विलय द्रुतलय अणुद्रुतलय अणुअणुद्रुतलय इत्यादि बातें जानना जरूरी है जो गुरुओं द्वारा ही प्राप्त हो सकी है वैसे नही। इस पुस्तक में सिर्फ साधारण ताल मात्रा सम ताली खाली भाग दिये गये हैं जो विद्यार्थियों के लिये लाभदायक हैं।



१-इकवाई यानी इकताला मात्रा १२ ताली ४ खाली २ भाग ६

धिन धिन	ना तृक	तू ना	क त्ता	धागे तृक	धि न्ना
१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
+	०	२	०	३	४
सम	खाली	ताली	खाली	ताली	ताली

२-दुताला यानी रूपक मात्रा ७ ताली २ खाली १ भाग ३

धि न्ना	धि न्ना	तिन तिन ता	ध्यान दें-इस ताल में
१ २	३ ४	५ ६ ७	सम पर खाली और खाली
+	२	०	+ ०
सम	ताली	खाली	० +
			पर सम माना जाता है।

३-गणमन्ठ यानी तिताला मात्रा १६ ताली ३ खाली ० भाग ४

न धिन धि न्ना	ना धिन धिन्ना	ना तिन तिं न्ना	नाधिन धिंन्न
१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
+	२	०	३
सम	ताली	खाली	ताली

४-ध्रुवपद यानी चौताला मात्रा १२ ताली ४ खाली २ भाग ६

धा धा	धि न्ना	किट धा	धिन्ता	तिट कत	गिद् गिन
१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
+	०	२	०	३	४
सम	खाली	ताली	खाली	ताली	ताली

५- चक्रव्यूह यानी झपताला मात्रा १० ताली ३ खाली १ भाग ४

धि	न्ना	धिं	धिं	न्ना	क	त्ता	धिं	धिं	न्ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
+		२			०		३		
सम		ताली			खाली		ताली		

६--त्रिपुन्ड यानी चाचर मात्रा १४ ताली ३ खाली १ भाग ४

धा	धि	न	धा	गे	धि	न	ता	ति	न	धा	गे	धि	न
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
+			२				०			३			
सम			ताली				खाली			ताली			

७-सूर यानी शूलताल मात्रा १० ताली ३ खाली २ भाग ५

धा	धा	दिं	दिं	ता	ता	तिट	कत	गिद्	गिन
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
+		०		२		३		०	
सम		खाली		ताली		ताली		खाली	

८--वक्रतुण्ड यानी आड़ा चौताला मात्रा १४ ताली ४ खाली ३ भाग ७

धिं	धिं	ना	तृक	तू	ना	क	त्ता	धिं	धिं	ना	धिं	धिं	न्ना
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
+		२		०		३		०		४		०	
सम		ताली		खाली		ताली		खाली		ताली		खाली	



९--ताल उचङ्ग यानी कंहरवा मात्रा ८ ताली २ खाली २ भाग २

धा	गि	न	धि	न	क	धि	न
१	२	३	४	५	६	७	८
+		०		२		०	
सम		खाली		ताली		खाली	

१०--ताल दहकी यानी दादरा मात्रा ६ ताली २ खाली २ भाग २

धा	धि	न्ना	धा	ति	न्ना
१	२	३	४	५	६
+	०		२	०	
सम	खाली		ताली	खाली	

१० तालों की न भूलने वाली बातें

इस पुस्तक में केवल १० तालों के प्राचीन तथा अर्वाचीन व्यौरेवार नाम ठेका बोल मात्रा ताली खाली भाग इत्यादि दिये गये हैं विद्यार्थी इसे ध्यान पूर्वक मनन करें।



दोहा—गिरिजा नन्दन गजवदन, शंकर तनय गणेश।
जै जै माता सरस्वती, जै जै भारत देश॥

* बोलो श्रीसनातन धर्म की जय *

राम नाम को अंक है, सब साधन है सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दसगून॥

❀ प्रभात प्रार्थना ❀

(१)

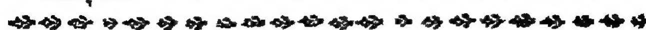
प्रातः स्मरामि जननी-चरणारविन्दं,
संसार—सागर-समुत्तरणैक—सेतुम्।
प्रातः स्मरामि गुरुदेव-पदारविन्दं,
अज्ञानघोरतिमिरान्ध-विनाश-हेतुम्॥

(२)

प्रातः स्मरामि गणनाथ—पदारविन्दं'
देवै नुतं सकल—विनाश-—हेतुम्।
प्रातः स्मरामि भुवनेश—पदारविन्दं,
मुक्तिप्रदं सकल-कल्मष-नाश हेतुम्॥

(३)

प्रातः स्मरामि गिरिजा-चरणारविन्दं,
कामादि-दोष जल-पूर्ण-भजाब्धि पोतम्।
प्रातः स्मरामि गिरिजेश--पदारविन्दं,
धर्मार्थकाम--भव-मोक्ष-विधान-हेतुम्॥



(४)

प्रातः स्मरामि मिथिलेश-सुतांघ्रि-पद्मं,
अज्ञान नाश-हरि भक्ति विकास हेतुम्।
प्रातः स्मरामि रघुनाथ-पदारविन्दं,
ब्रह्मा-सुरेश-शिव-नारद-सेव्यमानम् ॥

(५)

प्रातः स्मरामि वृषभानु--सुतांघ्रिपद्मं,
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
प्रातः स्मरामि मधुसूदन—पादपद्मं,
प्रेमास्पदं सजल-मेघरुचिं मनोज्ञम् ॥



❀ याद रक्खें ❀

हम हम करते सर्वनाश ही घमण्डी हुए,
लुचते ही रहे जब तक हमको अपनाया है।
मान हीन, शान हीन, दान हीन, कान हीन,
नहीं कुछ रहा जगमें, अपयश ही पाया है।
जीवन अमोल को बेमेल क्यों खोवे गुणी
कीर्तन में ढूंढ़ प्रभु-प्रीतम की छाया है।
जन्म मरण बन्धन से चाहे जो मुक्त होना ॥
यही समय है सम्हल "नश्वर" यह काया है।

❁ नित्य-प्रार्थना ❁

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दीन दयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा ।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृन्दा ।
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चित हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन विपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव वारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुनमंदिर सुख पुन्जा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ-पदकंजा ॥

(श्रीरामचरितमानस से)



(नज़र कीजिये) ताल कंहरवा वो दादरा

मुर्ली वाले हमारी खबर लीजिये । कंहरवा ।

शैर-दुःखी जनों के सदा दुख को तुम्हीं हरते हो ॥ दादरा ॥
भक्त का काम बने वह ही काम करते हो ॥
तुम्हारे नाम का भक्तों को एक सहारा है ।
अनेक पापियों को आप ही ने तारा है ॥
मै हूँ पापी मेरा पाप हर लीजिये । मुर्ली । कंहरवा

शैर-कष्ट से पाण्डवों को आपने बचाया था ॥ दादरा ॥
कैद से देवकी वसुदेव को छुड़ाया था ॥
तुम्हीं भक्तों के हो प्रभु मान बढ़ाने वाले ।
विदुर के साग को भी आप हैं खाने वाले ॥
अपने चरणों का चाकर तो कर लीजिये ॥मुर्ली कंहरवा

शैर-तुम्हें पुकारके गौवें भी आह भरती हैं ॥ दादरा ॥
करोड़ों गाय इस भारत में रोज कटती हैं ॥
कहाँ हो नन्द के नन्दन कुंवर कन्हैया तुम ।
जल्द आओ मेरे मुर्ली मधुर बजैया तुम ॥
दीन दुखियों के दामन को भर दीजिये । मुर्ली । कंहरवा

शैर-तुम्हारे नाम का निश दिन तो रट लगाता हूँ । दादरा ।
मेरे गोविन्द मैं गुण आप ही का गाता हूँ ॥
कभी तो मेरी तरफ एक नजर उठा देना ।

पाप भव सिन्धु से प्रभु आपही छुड़ा लेना ॥
'व्याकुल' विरही पै अबतो नज़र कीजिये ॥ मुर्ली

❀ पहिला भाग ❀

राग आसावरी ताल तीन

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी ॥ १ ॥
भरि भरि उदर विषय को धायो, जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छाँड़ि हरी विमुखनकी, निसदिन करत गुलामी ॥ २ ॥
पापी कौन बड़ो जग मोते, सब पतितन में नामी ।
'सूर' पतित को ठौर कहाँ है, तुम बिनु श्रीपति स्वामी ॥ ३ ॥

❀ १—राजकन्या श्वपच ❀

घर में एक राजा के जाया करती थी भंगी की नार ।
झाड़ू देना रोज़मर्रा अपना करती थी वो कार ॥
एक दिन बीमार थी उसने पती से यूँ कहा ।
मेरे बदले आज के दिन आपही जायें वहाँ ॥
ड्योढ़ी में राजा के भंगी जो पहुँचा सरबशर ।
तो पड़ी नंगी नहाती राज कन्या पर नज़र ॥
देखते ही होश से बेहोश वो होने लगा ।
फेंक झाड़ू टोकरी घर लौटकर रोने लगा ॥



नारी ने समझाया बेहद पर तो न मानी उसने एक।
फिर गई शहज़ादी पैहाँ स्वामी की रखने को टेक॥
तरस खा शहज़ादी ने (कहा) मतकर उसको तू मना।
बोल अपने स्वामी से ले भेष योगी का बना॥
त्याग कर घर बार को जंगल में दे डेरे लगा।
साधे गर ४० दिन मिल जाये जिससे लौ लगा॥
सुनते ही भंगी ने फौरन भेष ऐसा कर लिया।
लीन होकर उसकी लौ में समय पूरा कर दिया॥
रोज मर्रा सैकड़ों जाते थे आते उसके पास।
राजकन्या को हुई तब उसके दर्शन की भी प्यास॥
जाके क्या देखा कि है जरों जवाहिर के अम्बार।
'किन्तु' मस्त है मेरी लगन में और मुझसे ही है प्यार॥
जोर से बोली मैं आई हूँ मेरे सच्चे फकीर।
ज्यूं ही खोली आंख उसने मालोज़र–देखे कसीर॥
दिलमें सोचा एक इन्सां से मुहब्बत करके क्या।
गर लगाता ईश्वर से लव होता तो क्या से क्या॥
राजकन्या को बना अपना गुरू सर धर दिया।
ईश्वर की याद में मुक्ति को हासिल कर लिया॥ अ० ॥

❀ रागिनी प्रदीपकी ताल तीन ❀

भला मोसे कौन बड़ा परिवारी ।
सत सा पिता धर्म सा भाई लज्जा सी महतारी ॥
शील बहिन संतोष पुत्र है चमा हमारी नारी ।
आशा सासु तृष्णा सरहज है लोभ मोह से यारी ॥
अहंकार हैं ससुर हमारे इन सबके हितकारी ।
मन वजीर और सुरत है राजा दोनों की मतिमारी ॥
काम क्रोध दुइ चोर बसत हैं इनकी डर मोहे भारी ।
ज्ञानगुरू और भाग्य है चेला दोनों की गति न्यारी ॥
कहत "कबीर" सुनो भाई साधो हम हैं अगम अपारी ।

❀ २—फूलों की शैय्या ❀

एक लौन्डी शाह के महलों की ख़िदमतगार थी ।
शाह के सोने का बिस्तर कर रही तैय्यार थी ॥
उसका जी चाहा कि ऐसी नर्म नाज़ुक सेज पर ।
सोके देखा चाहती थी इसका मुझपर क्या असर ॥
इम्तहाँ करने लगी वो होगई ख़ुद इम्तहाँ ।
नर्म नाज़ुक सेज से अब नींद उठने दे कहां ॥
शाह भी आराम करने के लिये आये वहाँ ।
सो रही है सेजपै लौन्डी को तब देखी वहाँ ॥

शाह ने लौन्डी को तब कोड़ों से अधमुई किया।
ता हशर भूले नहीं ऐसा सज़ा उसको दिया॥
खून चलता था जिस्म से इस क़दर पीटी गई।
तो भी उसने एक भी आँसू को गिरने ना दई॥
खिल खिला हँसती रही इस मार की बौछार में।
तो परेशां होके पूंछा हजरते दरबार में॥
हंस के लौन्डी ने कहा मैं दो घड़ी सोई यहां।
तो मेरी इस खाल के टुकड़े हुये हैं अब यहाँ॥
जो हमेशा सोते आये इस पै ला परवाह से।
जाने ईश्वर क्या सज़ा उसको मिले दरगाह से॥
सुनकर सखुन लौन्डी की तब ये बात मान ली।
और लात मारी तख्त पर जंगल की फ़ौरन राहली॥ अ०

❀ रागिनी भीमपलासी ताल तीन ❀

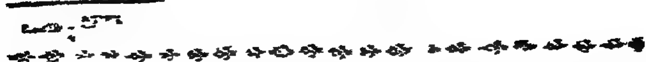
जाके प्रिय न राम-वैदेही।
सो छाँड़िये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही॥ १॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, बिभीषन—बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कन्त ब्रज-बनितनि भये मुद-मंगलकारी॥२॥
नाते नेह राम को मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटैं बहुतक कहौं कहां लौं॥ २॥



तुलसी सो सब भांति परमहित पूज्य प्राणतें प्यारो।
जासो होय सनेह राम पद ऐसो मतो हमारो ॥ ४ ॥

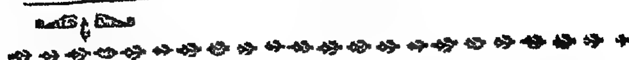
❀ ३—पूज्यपाद १०८श्रीस्वामी रामतीर्थजी ❀
❀ महाराज ❀

राम तीरथ छोड़कर घरबार जब जाने लगे।
स्त्री के नयन छम छम नीर बरसाने लगे॥
बस पतिव्रता ने स्वामी राम के पाऊं गहे।
पकड़कर दामन पती का शब्द उसने ये कहे॥
नाथ अपनी दीनदासी पर यह किरपा कीजिये।
साथ रखकर मुझको भी सेवाका मौका दीजिए॥
राम जब बनको गये थे साथ थी उनके सिया।
आप मेरे राम हैं फिर क्यों मुझे पीछे किया॥
तब स्वामी राम तीर्थ ने कहा कुछ बात है।
साथ ले जाना नहीं तुझको कि औरत जात है॥
तुझको घरसे और पिसर से और ज़र से प्यार है।
बस इसी कारण मेरी प्यारी मेरा इन्कार है॥
तब कहा देवी ने जो कुछ है गवां देती हूँ मैं।
आपके सदके मैं सारा धन लुटा देती हूँ मैं॥
सम्पति को ए पति! आतिश लगा देती हूं मैं।



आज्ञा दें तो यह भार सर उठा लेती हूँ मैं ॥
तब स्वामी रामचन्द्र ने कहा इन्कार है ।
सहज है कहना मगर करना बहुत दुश्वार है ॥
जब यह सुना तो जोश उसने वस्त्र धार कर लिये ।
अपने भूषण और वस्त्र सब थाली में धर दिये ॥
अपने केश भी उतार के सारे धर दिये ।
सांपने चालों के वैराग्य से रङ्ग भर दिये ॥
इस पर भी स्वामी रामचन्द्र मुस्करा पड़े ।
कहते हैं कि प्यारी है अभी संकट तुझे बड़े ॥
पत्थरों की भी हो मार तो सहोगी किस तरह ।
बच्चों को अपने लाडले छोड़ोगी किस तरह ॥
सीता देवी साथ उनको नहीं है कुछ फिक्र ।
मगर यह नहीं है वर इनका तो इक और भी है वर ॥
नल राजा ने जब जंगल का रास्ता लिया था ।
दमयन्ती ने भी दामन पकड़ा था पिया का ॥
बच्चों का वही फैसला राजा ने किया था ।
दमयन्ती ने ननिहाल उन्हें भेज दिया था ॥
अब मैं भी साथ साथ आपके सिधाऊंगी ।
बच्चों को अपने मैके में मैं छोड़ आऊंगी ॥
इस पर भी कहा रामने शामिल नहीं है तू ।

हमराह मेरे जाने के काबिल नहीं है तू ॥
प्यारी तू अपने प्यारों का नाता हि तोड़ दे ।
और रिश्ता अपना सर्व व्यापक से जोड़ दे ॥
जो सबकी माता है उनका मुंह उस तरफ मोड़ दे।
बाज़ार में ले जाके तू बच्चों को छोड़ दे ॥
सुनते ही दिल धड़क गया खामोश रह गया ।
और मामता के मारे माँ का नीर बह गया ॥
खामोश होगई थी या बेहोश सी हुई ।
कुछ सोचकर वह यकबयक खड़ी हुई ॥
लख्ते जिगर उठाये तो खूने जिगर पिया ।
लेकर चली तो माँ का धड़कने लगा जिया ॥
उंगली लगाया दूसरा गोदी उठा लिया ।
बिपता की मारी मां ने रुख बाज़ार का किया ॥
बच्चे से हाथ भीड़ में आकर छुड़ा लिया ।
और लाल दूसरा भी इक जानिब बिठा दिया ॥
हसरत से देखा और मुंह अलविदा कही ।
आखों से आसुओं की नदी खुदबखुद बही ॥
बच्चे थे दो ग़रीब के पुंजी रही सही ।
प्यारे पती के प्यार ने हाय वह भी छीन ली ॥
कुछ न रहा सब कुछ गया कंगाल हो गई ।



सद् आफरीं कि मुँह से "सी,, तक नहीं कही ॥
दिल में थी इक विचारी के बस आरजू यही ।
कि रखी थी लाज जानकी ने राम नाम की ॥
बन कर दिखाऊंगी सिया मैं अपने राम की ।
हिरणी का बच्चा जैसे शिकारी हो ले गया ॥
देखा स्वामी रामतीर्थ ने वही दशा ।
बच्चों को छोड़ आई हो देखा तो रो दिये ॥
त्यागी ने इस बैरागी के कपड़े भिगो दिये ।
लेने लगे वह इमतहां मगर रहा सहा ॥
कहते हैं प्यारी एक और मान लो कहा ।
मुंह से कहो कि स्वामी रामतीर्थ मर गया ॥
जो था पती मेरा वह मुझे विधवा कर गया ।
सुनते ही चीख मारके चरणों पे गिर गई ॥
कोई कटार थी जो कलेजे में फिर गई ।
बोले स्वामी राम फिर इनकार है मेरा ॥
क्यों कर अभी पती से प्रेम प्यार है तेरा ।
देवी के दोनों नैन आंसुओं से भर गये ॥
खुलने जो लब लगे तो गाल पीले पड़ गए ।
रुकते हुए कहा कि तीरथ राम मर गए ॥
जीते जी मेरे नाथ मुझको विधवा कर गए ।

ऐसा सुना तो राम तीरथ झट उछल पड़े ॥
कुछ रहता था न जिसका वह उसकी तरफ बढ़े ।
कहने लगे कि छोड़ दो दुनिया के भोग को ॥
तू ने सहा है पुत्र पती के वियोग को ।
मेरी तरह लुटा चुकी पूंजी रही सही ॥
गङ्गा इधर से चल पड़ी जमुना उधर बही ।
तेरा पती गया है मेरी पत्नी खो गई ॥
बस देवी आज से तू मेरी माता हो गई ।
फिर राम तीरथ पकड़ कर देवी के हाथ को ॥
बोले अब आओ मां मेरी हमराह तुम चलो ।
हाए वह राम तीरथ स्वामी कहाँ गए ॥
बैराग के वो त्याग के पुतले कहाँ गए ।
रहमत के "लालचन्द" फरिश्ते कहाँ गए ॥
उजड़े हुए चमन के अब आसार बाकी हैं ।
जो फूल थे मुर्झा गए अब खार बाकी हैं ॥

❀ रागनी बिरहनी पहाड़ी ताल कहरवा ❀

अखियाँ हरि-दर्शन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नैन को, निसिदिन रहत उदासी ॥
केशर तिलक मोतिन की माला, वृन्दावन के वासी ।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल फाँसी ॥





काहूके मनकी को जानत, लोगन के मन हाँसी ।
"सूरदास" प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लैहों करवट कासी ॥

❀ ४ कोठे पर का प्रेमी ❀

पद—रग रग में तेरी याद समाये तो क्या करूँ ।
दिल से तेरा ख्याल न जाये तो क्या करूँ ॥
मुझको जूंनू नहीं है जो जागूं तमाम रात ।
लेकिन तेरा ख्याल जगाये तो क्या करूँ ॥

वार्ता--प्रेमी का प्रश्न महात्मा से--शैर बैठने पर ।

सवाल--जो अबरू के तेगे अलम देखते हैं ॥
वो सर पहले अपना क़लम देखते हैं ।
जो होते हैं दुनियां की सूरत पै आशिक़ ॥
वो वाक़ई रन्जो अलम देखते हैं ।

जवाब-जिस गुल में मैंने देखा प्रभू नज़र आया ॥
हम उसको ही अपना वलम देखते हैं ।
न तुझसे ग़रज़ है न सूरत से तेरी ॥
मुसव्विर की हम तो क़लम देखते हैं ।
क़ुदरत को जो मन्ज़ूर था करना इसे ग़ारत ॥
अभिमान के पुतले को इक सूझी शरारत ।
इस शोख ने दरवेश पै इक पीक गिरा दी ॥
जो शाने शराफ़त थी वो हाथों से मिटादी ॥

महात्मा जी कहते हैं—

इस तौर गरीबों को सताना नहीं अच्छा ।
दर वेश को अभिमान दिखाना नहीं अच्छा ॥
उत्तर—बोला कमीने पागल हमें जानता नहीं ।
ऐसा तू कौन है जो हमें मानता नहीं ॥
गुस्से से भरा कोठे से धड़ धड़ उतर आया ।
मारे तमाचे मूं पर लाठी से गिराया ॥
जब मार पीट करके वो कोठे पै चढ़ गया ।
कोठा गिरा फिर प्रेमी तो फ़ौरन ही मर गया ॥
यह देखते ही नूर की पुतली वो चिप भरी ।
बस आह आह करके वो क़दमों पै गिर पड़ी ॥
धुन—हर हाल में शराब का पीना गुनाह है ।
आंखों से अपनी कोई पिलाये तो क्या करूँ ॥
तेरे खसम को तेरी हिमायत जरूर थी ।
तो मेरे खसम को मेरी रियायत जरूर थी ॥
तेरा खसम जो आया तो डण्डे लगा गया ।
'और' मेरा खसम जो आया तो खाता चुका गया ॥
तो इबरतकीजां है दुनियाँ ये इशरतका घर नहीं ।
मालिक की मर्जियों की किसी को खबर नहीं ॥



तो मुझको तेरे नसीब का शिकवा तो है "व्याकुल"।
तुझको तेरा नसीब रुलाये तो क्या करूँ ॥
ये कहते हुये महात्मा चले गये ॥ अ० ॥

❀ रागिनी जलध रन्जनी ताल तीन ❀

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हमपर, जबतें स्याम सिधारे ॥
अंजन थिर न रहत अँखियन में, कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहीं कबहूं, उर विच बहत पनारे ॥
आँसू सलिल भये पग थाके, बहे जात सित तारे।
"सूरदास" अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे ॥

❀ ५—भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ❀
❀ एवं बहुरूपिया ❀

एक दिन बहुरूपिया इक कृष्ण के दर्बार में,
जब गया तो देख उसको हंस दिया सरकार ने।
तो मुकाबिल पर लगा हंसने वोः घबराया नहीं,
जब तलक भगवान ने कुछ उससे फर्माया नहीं।
कृष्ण बोले आ अरे ! भूले हुए बहुरूपिया !
स्वाँग भरना ही दुकन दारी समझ अपनी लिया ?





फिर हंसा है देखकर हमको ये: गुस्ताखी भी है,
समझना था ऐसी गलती की कहीं म्वाफी भी है ?
वह लगा कहने ओ भैया ! खूब पहचाना हूँ मैं,
आप जब पहिले हंसे थे तब से ही जाना हूँ मैं ।
आपका हंसना भी तो अपराध में शामिल नहीं,
इसको सुलझालो दुबारा बात करना फिर कहीं ।
कृष्ण बोले हम हंसे थे तुझको भूला जानकर,
कौन था तू कौन बनकर आ गया पहचान कर ।
वह लगा कहने मेरे हंसने का भी यह ही सबब,
कौन क्या थे इससे पहिले क्या बने बैठे हो अब ।
खोलने वाला हूँ दीबाचा ज़रा सुन लीजिये,
आपने मौका दिया कहने का तो दिल दीजिये ।
स्वाँग मेरे पर हँसे हो मैं बना इन्सां तो हूँ ?
आपतो मछली बने कछुआ बने क्या २ कहूँ ।
आये थे बाराह बन कर वो ज़माना याद हो ।
फिर बने नरसिंह थे घर भक्त का आबाद हो ।
इसके आगे आपको वामन बना पाया भी है,
भार्गवों में फिर कभी भृगुराम बन आया भी है ।
राघवों में राम बन करके गंवा दी जानकी,
अब खबर लो कौरवों की कृष्ण बन कर जानकी ।



जानकर पूछा है तो अनजान मत जानें मुझे,
आखिरी में आपका भाई हूँ यह मानें मुझे।
हंसके श्रीभगवान ने इक हार दी उपहार में,
वह लगा कहने ये: पत्थर किस मेरी दर्कार में।
इन इनामों से मेरा भगवान ! कुछ बनता नहीं,
यह निराली शोखियां मोहन ! दिखाना और कहीं
मुझको देना हो तो दो ध्रुव भक्त की पदवी अभी,
वर्ना कहदो स्वाँग धर कर फिर न याँ आना कभी
यह मिला है कृष्ण को चालाक बन बहुरूपिया,
दोनों हालत में ही मुक्ति का सवाल उसने किया।
रत्न माला है भला "पीयूष" के किस काम की,
चाह है मुझ को तो तेरी और तेरे धाम की।

❀ दिव्य दोहावली ❀

जंगल गये लकड़ी नहीं, सरिता गये न नीर।
गृह कुबेर गये धन नहीं, जो टेढ़ै रघुबीर ॥ १ ॥
राम सन्त के बाप हैं, सन्तराम के पूत।
सन्त न होते धरणिपै, तो हरि होत निपूत ॥ २ ॥
अन्टी जिनके दाम नहिं, आङ्गन में सकुचाय।
उनके पीछे हरि फिरै, कहिं भूखे ना रहजाय ॥ ३ ॥

रामभरोसो त्यागि के, करे भरोसो और।
सुख सम्पति कौन कह, नरक न पावै ठौर ॥ ४ ॥
जिम्यातो सोई भली कि, जिससे निकसे राम।
नांहीं तो काट के फेक दे, मुख में भलानचाम ॥ ५ ॥
नारायण बिन प्रेम के, पन्डित पशू समान।
ताते अति मूरख भलो, जो सुमिरत भगवान ॥ ६ ॥
माता के उपकार को, तौलन हार न बाट।
जीवन जग में सब जगह, देख चुके हैं हाट ॥ ७ ॥
करदे कर भी नहि रहे, हृदय सूर के श्याम।
किन्तु सुतिक्षण हृदय से, कभी न निकले राम ॥ ८ ॥
सुरतिय नरतिय नागतीय, सब चाहत असहोय।
गोद लियो हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय ॥ ९ ॥
लगन लगन सब कोई कहे, लगन कहावै सोय।
नारायण जो लगन में, तन मन देवै खोय ॥ १० ॥
साहब सबका एक है, साहब का कोई एक।
लाखन में तो है नहीं, कोटिन में कोई एक ॥ ११ ॥
पड़े रहो नित द्वार पै, धक्के मुक्के खाय।
एक दया कि दृष्ट से, दुखः दरिद्र मिटि जाय ॥ १२ ॥
तेरे मन कछु और है, हरि के मन कछु और।
हरि के मन की होनदे, मती मचावै शोर ॥ १३ ॥



सब देखे परखे सुने, बहुत कहे क्या होय।
तुलसी सीताराम बिन, नहीं आपनो कोय ॥ १४ ॥
हममें गुण कछु है नहीं, तुम गुण भरे जहाज।
गुण अवगुण न विचारिये, बांह गहे की लाज ॥ १५ ॥
ज्ञानी ध्यानी बहु मिले, पन्डित कवी अनेक।
रामरता इन्द्रियजिता, लाखन में कोई एक ॥ १६ ॥
आसन मारे क्या हुवा, मरी न मन की आस।
ज्यों तेली के बैल को, घर हीं कोस पचास ॥ १७ ॥
चार मिले चौसठ खिले, बीस रहे करजोर।
हरि जन से हरिजन मिले, हरपे सात करोर ॥ १८ ॥
जो गिताहि न जानिये, जोगी ताहि न जान।
जो गिताही जानिये, जोगी ताही जान ॥ १९ ॥
हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरि से मिलै जीता यम के द्वार ॥ २० ॥
भयो बड़प्न के बिना, उच्चासन को जोग।
बैठो काग मुड़ेर पै, गरुण न मानै लोग। २१ ॥
तीरथ चले हैं तीन जन, चित चंचल चित चोर।
पापन काटे आपनो, १० मन लादे और ॥ २२ ॥
धनयोवन यों जायेंगे, जा विधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज, क्यों चाटत ज़गधूर ॥ २३ ॥

नारायण हरि लगन में, यह पांचों न सुहात।
१ २ ३ ४ ५
विषयभोग निद्रा हंसी, जगत प्रीत बहु बात ॥ २४ ॥
ग्रन्थ पन्थ सब जगत के, बात बतावत तीन।
१ २ ३
राम हृदय मनमें दया, तन सेवा में लीन ॥ २५ ॥

❀ दूसरा भाग ❀

राग श्री ताल झप

स्थाई– बजत डका प्रबल देख भागत शत्रु दल चढ़त विमान करत सब मिली शंका ॥ अन्तरा ॥ बाण. चलत शररर कांपत जिया थररर 'व्याकुल' हैं सब बीर जरत देख लका ॥बजत०॥

❀ ६ प्रीतम की लगन ❀

अपने प्रियतम प्रभू को पाने के लिये भक्त क्या क्या नहीं करता नीचे एक इसी प्रकार का इतिहास पढ़िये।

इक दिन महाबीर बजरंगी होकर ज़रा उदास।
यूं ही फिरते फिरते पहुँचे जग जननी के पास ॥
चर्णों में माता सिया के फिर नवाया अपना माथ



माता सीता फेरती थीं सर पे बजरंगी के हाथ।
ऐ हनु ! तुझपर बड़ा प्रसन्न स्वयम् श्रीराम हैं।।
तेरी ही दिन रात चर्चा तेरा मुंह पर नाम है।
ऐसा जादू कर दिया है तूने मेरे राम को।।
जैसे भँवरा फूल बिन व्याकुल सुबह और शाम को
माता कहती जा रही थी सुनते थे हनुमान जी।।
इतने में उनकी निगाह सीता के सिर पर जा पड़ी।
सिन्दूर था बालोंके अन्दर और सिरपर था सिन्दूर
देख कर महावीर बोले माता बतलायें जरूर।।
सिन्दूर का तिलक कैसा ? और बालों में जुदा।
इसमें तो कुछ राज है बतलाइये माता जरा।।
जानकी बोलीं इसी सिन्दूर से शृङ्गार है।
राम खुश होते उन्हें सिन्दूर से ही प्यार है।।
बोले बजरंगी इसीसे राम खुश होते हैं गर।
आज से सिन्दूर मलता हूं मैं सारे जिसम पर।। अ०।

❀ रागभैरो ताल इकताला ❀

स्थाई—धन धन धन मातु गङ्ग, चाहत मुनिजन प्रसंग।
प्रगटी रघुनाथ चरण, करन सुख बिहारी।। धन०।।
अन्तरा-दीन्हीं विधि बूंद डार, हरिहि अङ्ग शीश द्वार।
आई मृत्यु मध्य लोक, सन्तन हितकारी।। धन०।।

❀ ७ भक्तवर निषाद ❀

शैर–इस तरफ़ ख्वाहिश है दुनियाँ भरके शाहन शाहकी।
उस तरफ़ इन्कार है एक मस्त ला परवाह की॥
प्रेम के झगड़े में चलती है ये कोशिश चाह की।
भक्त वत्सल की दया हो ज़िद रहे मल्लाह की॥
देखिये किसकी विजय हो और किसकी हार हो।
दोनों मल्लाहों में पहले किस की किश्ती पार हो॥

चौ०-मांगी नाव न केवट आना।

शैर-सोई किस्मत को जो पल भर में जगाने वाला,
अपने भक्तों की जो है शान बढ़ाने वाला।
गहरे सागर से जो डूबों को तराने वाला,
जो कि भव सिन्धु से नित पार लगाने वाला॥
आज मल्लाह से कहता है वही पार करो,
जल्द जाना है हमें नाव पै असवार करो।
बोला मल्लाह कि मैं जानता हूँ जानता हूँ,
आप उस्ताद हैं मैं मानता हूं मानता हूँ॥
आपही का नाम तो शायद हैं कहते रामलखन।
आपही खेल किया करते घूँम कर बन बन।
ज़ब जनकपुर में गए धाक मचाई तुमने,



ताड़ुका राह में आई तो गिराई तुमने ॥
एक पत्थर को जो ठोकर थी लगाई तुमने,
पांव लगते ही अहिल्या थी बनाई तुमने ।
जादूगर खूब हो तुम जानता हूँ जानता हूँ,
इस लिए पहले कहा मानता हूं मानता हूं ॥
पता है आपको ? कि कितना है परि वार मेरा ।
एक इस नाव पुरानी पै है आधार मेरा ।
यही है कर्म मेरा और यही व्यापार मेरा,
कृपा से इसकी ही जीता है यह घर बार मेरा ॥
गर उड़ गई नाव तो क्या बात न खोटी होगी ।
फिर मयस्सर मुझे किस तौर से रोटी होगी ॥
इतना सुनते ही लच्मण को बहुत क्रोध आया ।
राम भी ताड़ गये शान्त किया समझाया ॥
भक्त मल्लाह को हँसते हुए ये फरमाया ।
वक्त किस वास्ते करते हो मुफ्त में जाया ॥
जो भी जी में हो बता दो नहीं इन्कार हमें ।
हो तुम्हारा भी भला और करो पार हमें ॥
मुस्कराते हुए मल्लाह पुकारा स्वामी ।
एक ही नाव है इस पै है गुजारा स्वामी ॥
ये भी गर बन गई नारी तो मैं हारा स्वामी ।

बेसहारों का रहेगा न सहारा स्वामी ॥
भूखे घर वाले मरेंगे न छेदाम आएगा ।
और मुसीबत है येः इक आदमी बढ़ जाएगा ॥
पद कमल धोइ चढ़ाई नाव न नाथ उतराई चहौं,
मोंहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब सांची कहौं ।
बरु तीर मारहुं लखन पै जब लगि न पाय पखारिहौं,
तब लगि न "तुलसीदास" नाथ कृपाल पार उतारिहौं ।
पेश्तर बैठने के चर्ण पखारूँगा मैं ।
पांओं मल २ के यह तीनों निखारूंगा मैं ॥
चर्ण चूमूँगा तेरा रूप निहारूँगा मैं ।
अपनी बिगड़ी हुई तक़दीर संभारूँगा मैं ॥
विनय करता हूं प्रभू अर्ज़ मेरी मानिएगा ।
अपने चरणों का प्रभू दास मुझे जानिएगा ॥
इशारा आप के भाई का होता है ये बाणों से ।
कि धन्वा से निकल कर जा मिल केवट के प्राणों से ॥
मगर मुझ को नहीं यह डर कि मैं मर जाऊँगा भगवन ।
मुझे तो हर्ष है अन्तिम समय तर जाऊँगा भगवन ॥
कहाँ तकदीर है ऐसी कि जो पासा ठीक पड़ जावे ।
कि दर्शन आप का करते पखेरू प्राण उड़ जावे ॥



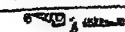
किया करते हैं जोगी जोग साधन किस लिए हर दम ।
तपस्वी फूंकते रहते हैं तन मन किस लिय हरदम ॥
विरागी लोग भी किस लाभ से बन बन भटकते हैं ।
महा त्यागी भी किस आशा की सीमा पर अटकते हैं ॥
यही है चाहना उनकी कि निकले प्राण जब तन से ।
तो आंखें तृप्त हो जायें तुम्हारे दिव्य दर्शन से ॥
तो फिर क्यों हाथ से ऐसा समय श्रीमान जाने दूँ ।
न क्यों श्रीजानकी जीवन के सन्मुख जान जाने दूँ ॥
मरूँगा किस के हाथों से जो श्री रघुवर का प्यारा है ।
मरूँगा किस जगह निर्मल जहाँ गंगा की धारा है ॥
मरूँगा सामने किन के कि जिनका दास होता हूँ ।
मरूँगा किस खता पर पाँव करुणा करके धोता हूँ ॥
जो इन पद पंकजों पर प्राण तन खो जायगा केवट ।
तो मर कर भी सदा जग में अमर हो जायगा केवट ॥
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहंसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥
तब धनुषधारी ने मन्जूर सब कुछ कर लिया ।
दौड़कर मल्लाह ने अपना कठौता भर लिया ॥
राम ने भी मुस्करा कर पांव आगे कर दिया ।
देखकर केवट ने भी चरणों पै सरको धर दिया ॥



आज केवट की भी युक्ती देखिये।
किस तरह माँगी है मुक्ती देखिये॥

❀ वर्णन भगवती भागीरथी जी का ❀

जोकि ब्रह्मा के कमण्डल में थी रहती आई।
जिसने शंकर की जटाओं में थी जगह पाई॥
स्वर्ग से जो थी भागीरथ के संग ही आई।
आज वह लहर कठौते में उठी सुखदाई॥
इधर मल्लाह को देखो है बड़ा बड़भागी।
ऐसा रुतबा कहाँ पा सकते हैं योगी त्यागी॥
राम चरणों में रहा जोकि सदा अनुरागी।
आज चरणों को लिया हाथ में किस्मत जागी॥
देवता देख, लगे फूलों की वर्षा करने।
भक्त भगवां की लगे प्रेम से चर्चा करने॥
फिर तो मल्लाह ने परिवार बुलाया उठकर।
परिचय श्रीराम लखन का था कराया उठकर॥
चरणामृत को लिया और सबको पिलाया उठकर।
घर में जो कुछ था उसे व पाक बनाया उठकर॥
बादजाँ तीनों को नैया बिठा पार किया।
सरको कदमों पै धरा फिर से नमस्कार किया॥




तबतो सीता नाथने सीताको कुछ समझा दिया।
चार आंखें होगईं आंखों से कुछ बतला दिया॥
भेद पाकर जानकी ने था फकत मुसका दिया।
कुछ उतारा हाथ से आगे उसे पहुँचा दिया॥
फिर वह ले लीनी अंगूठी राम ने।
और कर दीनी मल्लाह के सामने॥
जानकी नाथ कृपा सिन्धु सदा सुखदाई।
हंसके कहने लगे केवट से खुद ये रघुराई॥
यह अंगूठी है तुम्हारे ही लिये उतराई।
और कुछ पास हमारे नहीं है ऐ भाई॥
मुद्रिका, सोने की है मुफ्त में हैरान न हो।
पास पैसा है नहीं देख परेशान न हो॥
फिर हटा पीछे को केवट देखकर बोला ये क्या।
ये अंगूठी क्या करूँ और किस लिये लेलूं भला,
होके हम पेशा मेरे किस वास्ते करते हो बुरा।
मेरी ज़ाती को खबर हो जाये तो करदेगी जुदा,
अब नहीं लूंगा मैं भैय्या म्वाफ मुझको कीजिये,
कालिमा ऐसी से मुझको साफ रहने दीजिए॥
अबतो लछमन भी बिना बोले नहीं कुछ रहसके।
बात हम पेशा की सुन भड़के ज़रा ना सह सके॥

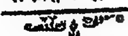
फिर कहा केवट को श्रीभगवान ने क्या चाहिए।
जो तमन्ना दिलकी है वह भक्तवर बतलाइये॥

❀ जवाब मल्लाह का ❀

जात पात करी न्यारी हमरी तुम्हारी नाथ।
केवट को नीको काम एक ही विचारिये॥
तुमतो उतारत भवसागर परमारथ हेतु।
नदिया से उतार हम कुटुम्ब गुजारिये॥
नाई से न नाई लेत धोबी ना धुलाई देत।
देके मजदूरी मेरी ज़ात ना बिगारिये॥
तुम तो आये मेरे घाट हमने उतार दियो।
तेरे घाट आऊँ नाथ हमें भी उतारिये॥

❀ रागिनी भैरवी ताल तीन ❀

यह विनती रघुवीर गुसाईं।
और आस विश्वास भरोसो, हरो जीव-जड़ताई॥ १॥
चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि विपुल बड़ाई
हेतु-रहित अनुराग रामपद, बढ़ अनुदित अधिकाई॥२॥
कुटिल करम लै जाइ मोहि जहँ २ अपनी बरियाई।
तहं तहं जनि छिन छोह छांड़िये,कमठ अण्डकी नाईं॥२





यहि जगमें जहँ लगि या तनुकी प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब 'तुलसिदास' प्रभुही सों, होहिं सिमिटइकठाई ॥४

❀ ८—श्रीराम कृष्ण की एकता ❀

अस्थाई–कैसे राम बने गिरधारी।
चतुर्मास बृजधाम गयो श्रीतुलसीदास एक बारी।
यात्रिन संग माधव मन्दिर में भीड़ भई अति भारी॥
यात्री सब शीश नवाय चुके तब तुलसी भयो अगारी।
नहीं भगत ने शीश नवायो तब क्रोधित भयोपुजारी॥
तब–'तुलसीदास' कह्यो ये हंसकर सुनो एक बात हमारी।
यह सर रघुवर मोल लियो अब कौन धरूँ यह द्वारी॥
वार्ता--श्रीगुरुस्वामी जी महाराज ने यह उत्तर देने के पश्चात्।
ये दोहा कहा—
काह कहूं छवि आज की, भले बने हो नाथ।
'तुलसी' मस्तक तब नवे, जब धनुषबाण लो हाथ॥
वार्ता—श्रीगोस्वामी जी की राम भक्ती देख कर भगवान
श्रीकृष्णचन्द्र ने भी फौरन ही श्रीराम रूप धारण किया·
तब--दोनों कर ते मुरली फेंक दई और धनुष बाण लियोधारी
जभी भगत को प्रेम भयो तब राम बने गिरधारी॥
ऐसो राम बने गिरिधारी।

इसी से तो

दो०—'तुलसी' रुचि लखि भक्त की, नाथ भये रघुनाथ।
मुरली मुकुट दुराय के, धनुष बाण लियो हाथ॥

❀ रागिनी खम्माच ताल तीन ❀

सजनी! हैं कोउ राजकुमार।
पंथ चलत मृदु पद-कमलनि दोउ सील-रूप-आगार।
आगे राजिवनैन स्याम-तनु, सोभा अमित अपार॥
डारौं वारि अङ्ग-अङ्गनिपर कोटि-कोटि-सत मार।
पाछे गौर किसोर मनोहर, लोचन-बदन उदार॥
कटि तूनीर कसे, कर सर-धनु, चले हरन छिति-भार।
जुगुल बीच सुकुमारि नारि इक राजति बिनहि सिंगार॥
इंद्रनील, हाटक, मुकुतामनि जनु पहिरे महि हार।
अवलोकहु भरि नैन, बिकल जनि होहु, करहु सुबिचार॥
पुनि कहँ यह सोभा, कहँ लोचन, देह-गेह-संसार।
सुनि प्रिय-बचन चितै हित कै रघुनाथ कृपा-सुखसार॥
"तुलसिदास" प्रभु हरे सबन्हिके मन, तन, रही न सँभार

❀ ६—बन वासिनी देवियाँ ❀

रघुवर लखन सिया ने जो गंगा का छोड़ा तट।
भस्मी रमाई शीश पै बाँधे जटा मुकुट॥



पहुँचे जो चलते २ किसी ग्राम के निकट ॥
वैदेही की तरफ को चलीं नारियाँ झपट ।
"व्याकुल" ग्राम वासिनी प्रेम हित हुईं ॥
दर्शन मुखार बिन्द के करके चकित हुईं ॥
पूछा जनक दुलारी से यां कैसे आई हो ।
जंगल में कैसे फिरती हो किसकी सताई हो ॥
किस बाप की पुत्री हो किस माँ की जाई हो ।
किसकी वधू हो छांव अपने लजाई हो ॥
राजा का जन्म पाय के जोगी बने हैं कौन ।
हे वीर तेरे साथ में दोनों जने हैं कौन ॥
बोली श्री सिया न किसी की सताई हूं ।
वन में विचरने स्वामी की सेवा में आई हूँ ॥
पुत्री जनक की पृथ्वी माता की जाई हूँ ।
जिसकी वधू हूँ चरणों में उसके समाई हूँ ॥
देवर लखन को रिश्ते में बतला के रह गई ।
रघुवर का नाता पूछा तो मुसका के रह गई ॥

❀ रागिनी गान्धारीटोड़ी ताल तीन ❀

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ॥

जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध शेवरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
जो संपति दस शीस अरपिकरि रावन शिव पहँ लीन्हीं ।
सो सम्पदा बिभीषन कहं अति सकुचि सहित हरि दीन्हीं ॥
"तुलसिदास" सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम काम सब पूरन करहिं कृपानिधि तेरो ॥४॥

❀ १०–नल नील एवं श्रीराघवेन्द्र सरकार ❀

श्रीरामजी बैठे थे समुन्दर के किनारे ।
अंगद वो हनूमान वो नल नील थे सारे ॥
खुशहोके श्रीभगवान ने अब यूँ ही पुकारे ।
मुझे एक से एक बढ़के हो मेरे प्यारे ॥
हर इक बात में हर तरह ताक हो तुम ।
बहादुर हो लायक हो और पाक हो तुम ॥
बड़े पत्थरों को ये कैसे धरा है, येपुल क्या बनाया कि जादूभराहै
ये पुल देखकर तुम पै कुर्बान हूं मैं ।
अय नल नील सच है परेशान हूँ मैं ॥
कहा नील ने नाथ हमारो क्या ताक़त ।
करें काम ऐसा कहां ये हिमाकत ॥
प्रभू आपकी है ये सारी सदाक़त, भला बन्दरों मे कहांयेलियाकत
जो सच पूछिये तो कृपा राम की है ।



ये सारी सिफ़त आप के नाम की है ॥
सुना प्रेम से जब तो मुस्काये रघुबर ।
लिया हाथ में एक छोटा सा पत्थर ॥
दिया फेंक सागर में सबको दिखाकर ।
गया डूब जल्दी वो ठहरा न पलभर ॥
कहाँ मेरी ताकतसेयेतैर जाता,अगर होती ताक़त तो येठहेरजाता
मगर ये तो नल नील का काम समझो ।
युगों तक चला जायेगा नाम समझो ॥
दिनों में हुआ नेक अंजाम समझो ।
हुआ 'अबतो रावण भी नाकाम समझो ॥
कोई मैनेपत्थर धराहीनहीं है, मगर अबजो फेंका तो तैरा नहीं है
कहा नील और नल ने अय प्यारे रघुबर ।
जिसे दिल से फेंका नहीं जायेगा तर ॥
समुन्दर तो क्या तैरे संसार सागर ।
गिराया जिसे किस तरह ठहरता वो ।
कृपा बिन कहां "गंगाधर" तैरता वो ॥
हमारी क्या ताक़त जो पत्थर को तारैं ।
पहाड़ों से जाकर उखाड़े उतारें ॥
यहाँ लाके उनको गढ़े और सवारें ।
समुन्दर पै जल्दी से पुल बांध डारें ॥

का भाषा का संस्कृत, भाव चाहिये साँच।
काम जो आवै कामरी, का करि सकै कमांच॥
जासों जाको हिय मिलै, रहत तवन तेहि पास।
सीपी वसत समुन्द्र में, चन्द्र बसत आकाश॥
कहँ केवड़ा कहँ केतकी, कहां तिलन का तेल।
सङ्गत पाय सुसील की, जासो भयो फूलेल॥
जब तक जाकी अवधि है, अवगुण करे हजार।
तब तक ताको माफ है साहेब, के दरबार॥
चम्पक बरणी राधिका, भ्रमर कृष्ण को दास।
अपनी जननी जानकर, भ्रमर न जाये पास॥
चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोय॥
चलती चाकी देखकर, हँसा कमाल ठठाय।
कील सहारे जो रहे, सो कैसे पिस जाय॥
राम जगत महराज हैं, जानत सकल जहान।
मन व्यभिचारी ह्वै रह्यौ, सुन मुर्ली के तान॥
बिना मान अमृत पिये, राहु कटाये शीश।
मान सहित विष खाय के, शम्भू भये जगदीश॥
नहींपराग नहिमधुर रस, नहिं बिकाशएहिकाल।
अली कली बिच फंसरहयो, फूलें कौन हवाल॥



रामकृष्ण कहते रहो, शंकर मन हुलसाय।
बिना योग जप तप किये, कलि मल कलुषनसाय॥
भूप जनक नानक भये, उद्धव सूर शरीर।
वाल्मीक तुलसी भये, शुक मुनि भये कबीर॥
सन्त मिलन को जाइये, तजि इर्षा अभिमान।
पग पग पर फल मिलत हैं, कोटिन यज्ञ समान॥
तनकी तनिक सराय में, तनिक न पायो चैन।
कूच नक्कारा मौत का, बाजत है दिन रैन॥

* तीसरा भाग *

* रागिनी गूजरी टोड़ी ताल तीन *

ममता तू न गई मेरे मनतें॥
पाके केस जनम के साथी, लाज गई लोकनते।
तन थाके कर कंपन लागे ज्योति गई नैननतें॥
सरवन वचन न सुनत काहुके बल गये सब इन्द्रिनतें
टूटे दसन वचन नहिं आवत शोभा गई मुखनतें॥
कफ पित बात कंठपर बैठे सुतहिं बुलावत करतें।
भाई बंधु सब परम पियारे नारि निकारत घरतें॥
जैसे ससि-मंडल बिच स्याही छुटै न कोटि जतनतें
'तुलसीदास' बलि जाउँ चरनतें लोभ पराये धनतें

❀ ११-तूं ही तूं की सदा ❀

फख़्र बकरे ने किया मैं के सिवा कोई नहीं।
मैं ही मैं हूं एक जहाँ में दूसरा कोई नहीं॥
जब न मैं तर्क की मगरूर के ग्मसवावने।
फेरदी जब जलके गर्दन पर छुरी क़स्सावने॥
गोश्त हड्डी और चमड़ा जो था जिस्मो ज़ार में।
कुछ लुटा और कुछ पिसा कुछ बिक गया बाज़ार में
रह गई आतें फ़क़त मैं मैं सुनाने के लिये।
ले गया नद्दाफ़ वो धुनकी बनाने के लिये॥
जर्ब सोटों से किया तो तातें घबराने लगी।
मैं के बदले बस तुं हीं तूं की सदा आने लगी॥

❀ रागिनी जैजैवन्ती ताल तीन ❀

बिदुर-घर स्याम पाहुने आये।
नख-सिख रुचिररूप मनमोहन, कोटि मदन छवि छाये।
विदुर न हुते घरहिमें तेहि छिन, स्याम पुकारन लागे॥
विदुर-घरनि नहाति उठि धाई, नैन प्रेमरस पागे।
भूली बसन नहात रहि जेहि थल, तनु-सुधि सकल भुलाई।
बोलति अटपट बचन प्रेमबस, कदरी-फल ले आई।
छीलत डारत गूदो इत-उत, छिलका स्याम खवावै॥

बारहिं-बार स्वाद कहि-कहि हरि, प्रमुदित भोग लगावै।
तनिक बेर महँ हरि-गुनगावत, बिदुर घरहिं जब आये ॥
देखि दरस सो कहत, 'अहह ! तैं छिलका स्याम खवाये'॥
करतें केरा झटकि बिदुर घरनी घरमाहिं पठाई।
तनु-सुधि पाइ सलाज ससंकित, बसन पहिरि चलि आई।
बिदुर प्रेमजुत छोलि छीलकै, केरा हरिहिं खवायै।
कहत स्याम वह सरस मनोहर स्वाद न इनमहँ आवै।
भूखो सदा प्रेमको डोलूं भगत-जनन गृह जाऊँ ॥
पाइ प्रेमजुत अमिय पदारथ, खात न कबहुँ अघाऊँ ॥

बिदुषी बिदुरानी की श्रीकृष्ण भक्ति

कौरव पथ की न हर ने मेहमानी की।
दावत मेवे की त्यागी मन मानी की ॥
केले खाते हैं वो विदुर के घर में।
तासीर यह भक्ति की है विदुरानी की ॥
नहाती है बिदुर की धर्म-पत्नि गुसलखाने में।
लगाती जाती है आवाज हर हर की नहाने में ॥
बसी आँखों में भी तस्वीर है मुरली मनोहर की।
सुना यह है कि चिट्ठी लाए हैं राजा युधिष्ठर की ॥
जबाँ से उसके हर २ कहने का यारो असर देखो।



न हरगिज़ हमारे किये काम होता।
लिखा पत्थरों पर न गर राम होता॥
हमें अय प्रभो आपने है बचाना।
निगाहों से अपनी न हरगिज़ गिराना॥
तुम्हारे है हाथों डुबाना तराना।
कहे "गंगाधर" ये है सेवक पुराना॥
कृपा दृष्टि अपनी से सर सार कर दो।
हमारा भी बेड़ा कभी पार कर दो॥

❀ सवैया ६ रत्न ❀

१-अबके सुल्तां फुनि आन समान हैं जो बांधत पाग अटब्बरकी
जो एक को छोड़के दुजो भजे तो जीभ गिरे वोहि लब्बर की॥
शरणागति "श्रीपति" श्रीपति को नहिं त्रास है काहू ये जब्बर की
जिनको हरि की परतीत नहीं सो करो सब आस अकब्बरकी॥
२-एहो हनू "कह्यो रघुबीर" कहूँ सियकी सुधि है छिन्ति मांही।
है प्रभूलंक कलंक बिना,, सो तहां बस रावण बाल की छाहीं॥
जिवित हैं कहुवेई को नाथ,, सो क्यों ना मरी मोते बिछुराहीं।
प्राणवस्यो पद पंकज में,, जम आवत है पर पावत नाहीं॥
३-राम बनो अब आप मुहम्मद, और बनो बिधि आप खलीफ़ा।
शंकर आप बनो अब आदम, कार्तिक क़ाजी का लेहु वज़ीफ़ा॥
नारद शेख़ पठान पुरन्दर, ग़ाजी गणेश शारद हों हनीफ़ा।

हिन्दी भी आज बने उर्दू फिर तो इस हिन्दी में होय लतीफ़ा॥
४ काम कुरङ्ग और क्रोध कबूतर ज्ञानके बाण सो मार गिराये।
नेह को नोन लगाय भलो विधि, सत्य की सींक में आन पुवाये॥
पंचक मार करो कोइला फिर, योग की आंच सो आन तपाये।
या विधि लाय बनाय के खाय तो, वैष्णव होत कबाब के खाये॥
५-दसकंधके मारन को चतुरांगिनि शक्ती मती नृपता हुति खासी
रिषि वो-मुनिके सतकारन को बहु, यज्ञ विधान हुये सुखरासी॥
नहिं राखते बंधु भरत को औसि, घरे फिर जाते प्रजाके उपासी।
शेबरी बनवासिन होती नहीं प्रभु रामहू ना होते बनवासी॥
६-क्षणभंगुर जीवनकी कलिका, कलप्रातको जाने खिली न खिली
मलयाचल की शुचि शीतल मंद, सुगंध समीर मिली न मिली॥
कलिकाल कुठार लिए फिरता, तनु नम्रसे चोट झिली न झिली।
भजले हरिनाम अरी रसने, फिर अन्त समय में हिली न हिली

७-देन चहै कर्तार जिन्हें, सुख, कौन रहीम सके तिहि टारे।
उद्यम कोउ करो न करो, धन आवत है बिनु ताके हँकारे॥
देव हंसे सब आपुस में, विधि के परपञ्च न जात निहारे।
बेटा भयो वसुदेव के धाम, औ दुंदुभि बाजत नन्द के द्वारे॥

८-नामके अक्षर चौगुन कै, पुनि पांच मिलायके दुइगुन कीजै।
आठ के भाग दिये 'रघुनाथ' बचे युग अङ्क तहां मनदीजै॥
राम हमार सबै हैं चराचर मानौ नहीं तह इसे लखिलीजै।
मोहिंमें राम है तोहिंमें राम है, खङ्गमें रामसो खंभसें दीजै॥

विन जानें पुराणन धर्म कथा. मन मानें अनर्थ मचावत हैं।
जगकी गति ज्योतिषी देखे नहीं, सिकता पर रेख खिचावत है॥
सब अन्न बिहीन प्रजा बिलखें, तबहूं ये पहाड़ पचावत हैं।
सठ पेट के हेतु बजारन में, सियराम को ले ले नचावत हैं॥

❀ सत्य-उपदेश ❀

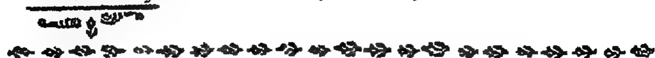
दोहा—माला मन ते लड़ पड़ी, क्या तू फेरे मोंहि।
जो मन फेरे जगत से, राम मिलाऊं तोंहि॥
सुमिरन कर श्रीराम का, काल गहे है केश।
ना जानें कब मारिहैं, क्या घर क्या परदेश॥
दीनन्न देख घिनात जो, नहिं दीनन सों काम।
कहां जानि वो लेत है, दीनबन्धु का नाम॥
कञ्चन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्षा, दुर्लभ तजना येह॥
वेश्या बानर अग्नि जल, कूटी कटक कलार।
ये १० नाहीं आपनों, सूजी सुगा सोनार॥
आशा करि आयो इतै, पै विधि कीन्ह निरास।
भाग्यहीन को सदा ही, भवन कुबेर उपास॥
मैंना ने मैं ना कही, दाम लग्यो दस बीस।
बकरी ने मैं मैं कियो, तुरत कटायो शीश॥



रामचरण अवलम्ब गहु, छाड़ि सकल उपचार।
जैसे घटत न अङ्क ९, ९ के लिखत पहार॥
जग से है (३६) रह, राम चरन छः तीन।
'तुलसी' देखि बिचारि हिय, है यह मतौ प्रवीन॥
राम श्याम दोउ एक हैं, रूप रङ्ग अरु रेख।
उनके दृग गम्भीर हैं, इनके चपल विशेष॥
नाम जपत कुष्टी तरे, जिनके कया न चाम।
बिना भजन भगवान के, कञ्चन, देह न काम॥
४ वेद ६ शास्त्र में, बात मिली है दोय।
दुःख देवे दुःख होत है, सुख देवे सुख होय॥
जाना है रहना नहीं मरना बीसो बीस।
दो दिन दुनियां के लिये, मत भूलो जगदीश॥
जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लिपटात।
ज्यों नर डारत बमनकरि, श्वान स्वाद सोखात॥
भाव बिना बाजार के, मिलै वस्तु नहिं मोल।
भाव बिना हरिक्यों मिलै, भाव सहित हरिबोल॥
भक्तों के बाजार में, वही है सच्चा माल।
एक भाव पर सर्वदा, बिकता है गोपाल॥
गैन ने पूछा ऐन से, क्यों तू हुआ है ऐन।
सिर का नुक़्ता मेट दे, तो तूं भी होजा ऐन॥



कि दम भर में खटकने लग गई जंजीरे दर देखो ॥
जरा चुप होके अपने कान उधर जब वो लगाती है ।
विदुर जी हैं विदुर जी हैं यही आवाज आती है ।
सदा भगवान् की पहचान कर वो दिल में हर्षाई।
नहाना छोड़कर दरवाजे पर दौड़ी हुई आई ॥
जो पट खोले तो देखा वाकई वो श्यामसुन्दर हैं।
उदासी के मगर आसार जाहिर उनके मुंह पर हैं ॥
कहा भगवान से घर में तो सब आनन्द मंगल हैं।
हैं पाँडों खैरियत से क्या अभी आबाद जंगल हैं ॥
कहा हरि ने कुसल घर में है (और) पाँडव भी खुश वनमें
कमी आई नहीं लेकिन कहीं किस्मत की उलझन में ॥
हमारी हर तरह ख्वारी जो पहले थी वो अब भी है ।
वही लहंगा वही साड़ी जो पहले थी वो अब भी है ॥
विदुरानी-यह सुनकर हंस पड़ी देवी उन्हें आसनपै बिठलाया
कहा अब तक तुम्हारी दिल्लगी में बल नहीं आया ॥
यह कहकर कृष्णजी की पहले विदुरानीने पूजा की ।
उतारी आरती श्रद्धा से फिर फुलों की वर्षा की ॥
कहा हरि ने कि देवी पेट पूजा अब करो मेरी ।
फकत फूलों की खुशबू सूँघ कर तृप्ती नहीं मेरी ॥
तुम्हें बातों में बहलाने के खूब अन्दाज आते हैं ।



यहाँ तो पेट में चूहे कला बाजी लगाते हैं ॥
किये इन्कार हम आते हैं दुर्योधन की दावत से।
हमें तो साग रोटी खाने की आदत है मुद्दत से ॥
जो कुछ मौजूद हो वो जल्द मेरे आगे ला रक्खो।
हमें तो माफ़ करदो सेवा पूजा से दया रक्खो ॥
खरी ये बात सुन कर हो गई शर्मिन्दा विदुरानी।
न था तय्यार खाना घर में थी ये दिल में हैरानी ॥
पड़े थे चन्द केले टोकरी में वो उठा लाई।
रखे गिरधर के आगे और आँसू आँखोंमें भरलाई ॥
लगी फिर छील कर केले खिलाने प्रेम से उनको।
मगर थी ऐसी हर की चाह में वो बावली देखो ॥
वो गूदा फेंक देती और छिलका छील कर देती।
कन्हैया की जबां चटखारे भरती वाह वाह करती ॥
लगी खाने, खिलाने वालों की नजरे थी दोनों पर।
उधर वर्षा रहे थे देवता गण फूल दोनों पर ॥
अभी जारी ही थी दावत कि इतने में विदुर आये।
समय वे प्रेम और भक्तिका जब देखा तो घबराये ॥
कहा पगली कहीं की कृष्ण को छिलके खिलाती है।
मजे की चीज गूदा फेंकती कूड़े में जाती है ॥
जब आया होश विदुरानी को बाकी एक केला था।

खिलाया उसका जब गूदा तो नटवर ने ये फर्माया ॥
बिदुरजी 'ज्ञान का क्या काम है भक्ति के सौदे में'
मजा इसमें कहां है वो जो था केलों के छिलके में ॥
मेरा दिल होगया कुर्बान इन छिलकोंकी लज्जत पर ।
थी खाली प्रेमसे वो तुफ है दुर्योधनकी दावत पर ॥
नहिं भगवान् ख्वाहां हैं किसी दुनियाँ की नैमत के ।
मगर ए "शौख" भूखे हैं तो भक्तों की मुहब्बत के ॥

❀ रागिनी दुर्गा तीन ताल ❀

मैं नित भगतन हाथ बिकाऊं ।
आठौं जाम हृदय में राखूँ, पलक नहीं बिसराऊँ ।
कल न पड़त बैकुण्ठ बसत मोहि, जोगिन मन न समाऊँ
जहँ मम भगत प्रेम युत गावहिं, तहां बसत सुख पाऊँ ॥
भगतन की जैसी रुचि देखूँ, तैसो भेष बनाऊँ ।
टारूँ अपने बचन भगत लगि, तिनके बचन निभाऊँ ॥
ऊँच नीच सब काज भगत के, निज कर सकल बनाऊँ ।
पग धोऊँ, रथ हांकूं, मांजूं बासन, छानि छवाऊँ ॥
मांगूँ नाहि दाम कछु तिनतें नहि कछु तिनहि सताऊँ ।
प्रेम सहित जल, पत्र, पुष्प फल, जो देवै सो खाऊँ ॥
निज सरबस भगतन को सौंपूँ, अपनो सत्व भुलाऊँ ।
भगत कहैं सोइ करूँ, 'निरन्तर' बेंचे तो बिक जाऊँ ॥

१३—बूंदी नरेश श्रीमहाराजा यशवन्तसिंह जी तथा प्रधान सिपहसालार शेरखाँ

शैर—जिस तरह वृक्षों में चन्दन को बड़ा अधिकार है।
पर्वतों में हेम गिर नदियों में गङ्गाधार है॥
है कमल पुष्पों में और नागों में जैसे शेष है।
इस तरह देशों में सबसे ऊँचा भारत देश है॥

जब इन्द्र यस्त के शासन पर शाहजहाँ मुगल जब शासक थे
भारत वसुन्धराके वहही हर प्रकार से वो पालक थे॥
आवश्यक बात के पड़ने पर दर्बार लगाया करते थे।
जितने थे राजे महराजे सादर बुलवाया करते थे॥

दो०—लगा हुआ था एक दिन, देहली में दर्बार।
बैठे थे वहां पर सभी, राजपूत सर्दार॥

सम्राट, शाहजहाँ का प्रश्न

है किसी की स्त्री पतिव्रता ये बादशाह ने प्रश्न किया।
सर्दार सभी खामोश रहे उत्तर तो किसी ने कुछ न दिया॥
लेकिन बूंदी के महाराज से बात नहीं ये सहा गया।
मेरी नारी है पतिव्रता ये बादशाह से कहा गया॥

फौरन शेरखां का उत्तर

इतना सुनकर शेरखां खड़े हुये 'कि' सरकार ये झूठ बोलते हैं
अब कहां हैं नारी पतिव्रता शेखी बघारते डोलते हैं॥

गर हुक्म मिलै तो इनके झूठ का इनको मज़ा चखा दूं मैं।
गर एक माँह की मोहलत हो तो सारा हाल बता दूं मैं ॥

बादशाह का आख़िरी फैसला

दो०—समझ सोचकर बात यह, ठहरी आख़िरकार।
झूंठे को फांसी मिलै, सच्चे को सत्कार ॥

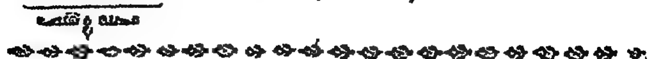
शेरखां को बूंदी जाना । खड़यन्त्र रचना।

दो०—बूंदी में जब शेर खां, पहुँच गये तत्काल।
कुटनी को बुलवाय कर, कहा ये सारा हाल ॥
कुटनी तब कहने लगी, करो रन्ज ग़म दूर।
यह मामूली काम है, मेरे लिये हुजूर ॥ इसके बाद

कर १६ शृँगार नारि डोला के अन्दर बैठ गई।
महराज की बुआ बन करके महलों के अन्दर पैठ गई ॥
रानी को यह मालूम हुआ श्रीमान की बूआ आई हैं।
भोली भाली क्या जाने वो कि जाल बनाकर लाई हैं ॥

दो०—कई दिनों घरमें रही, हुआ बहुत सन्मान।
एक दिन कहती आइये करें साथ स्नान ॥
रानी के बामाङ्ग पर, लहसुन का आकार।
फौरन कुटनी ने लिया दिल में उसे उतार ॥

चलते समय कुटनी ने चालाकी से महाराजा यशवन्तसिंह की कटार माँगली।



ले कटार कुटनी चली पूर्ण होगया काम।
जाय शेरखां से किया गहरा खूब सलाम॥

फिर—शेरखां से काफी इनाम लेकर कुटनी का उधर जाना और इधर शेरखां का दिल्ली वापिस आना और बादशाह से कहना।

शेरखां का कहना।

दो०—लो हुजूर मैं आगया, वालेकूम सलाम।
जो वादा करके गया, कर लाया वह काम॥

शैर—बूंदी के महराज की लीजै खास कटार है।
रानी के वामाङ्ग में लहसुन का आकार है॥
जिसको बताया पतिव्रता वह तो बड़ी बदकार है।
उस राजपूती शान को धिक्कार है धिक्कार है॥

बादशाह के हुक्म से महाराजा यशवन्तसिंह का आना और अपनी कटार पहिचानना।

अपनी कटारी आप खुद महराज ने पहिचान ली।
जंघा पै लहसुन है सही ये बात सच्ची मान ली॥
ये बात दोनों शेरखां की सत्य है स्वीकार हैं।
बस होगई है हार मेरी फांसी को हम तैय्यार हैं॥

महाराज की दशा

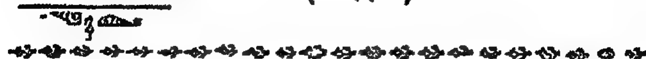
मनमें राजा के बड़ा अफसोस है।
इस लिये बैठे हुये खामोश हैं॥

कूप में जैसे पड़ा हो केहरी ।
सर्प का काटा न पावे देहरी ॥
दो०--फिर विचार करने लगा, राजा अपने आप ।
धर्मक्षीण रानी हुई, है यह पश्चाताप ॥

फांसी पर जाने के लिये तैय्यार होना

परन्तु सम्राट शाहजहाँ बहुत कुछ सोच समझ करके महाराजा से कहा ।

हुक्म मेरा है कि बूंदी जाईये ।
राज्य का प्रबन्ध सब कर आईये ॥
हुक्म दे दी हमने जो वो बहालही ।
झूठे को फांसी मिलै तत्काल ही ॥
आप बूंदी से जभी लौट आयेंगे ।
न्याय से हम अपना हुक्म सुनायेंगे ॥
दो०-बादशाह के हुक्म को, तब करके स्वीकार ।
बूंदी महराजा गये, हो करके तैय्यार ॥
जाते जाते दिलमें अपने सोचते ।
अपने ही दुर्भाग्य को हैं कोसते ॥
फिर गया है भाग्य अब पानी नहीं ।
हो गया विश्वास क्षत्राणी नहीं ॥



बदला मिलकर ही रहे अभिमान का ।
है भरोसा अब उसी भगवान का ॥
राज्य का प्रबन्ध सब कुछ कर दिया ।
ताज अपने पुत्र के सर धर दिया ॥ वहां से लौटना
और रास्ते में फिर सोचना ।

दो०–किसको मारूं क्या करूं, किसका कहूँ कसूर ।
बदनामी के साथ है, मरना मुझे जरूर ॥
बूंदी की इज्जत रही जैसे गुलशन फूल ।
आज मिली सब खाक में पड़ी पाग में धूल ॥
बस अब देहली को चलें हो न पावे देर ।
फांसी लगने को कहीं हो नहि जाये अबेर ॥

राजा का जाना श्रीमती रानी साहिबा का उदास होकर कहना

महल में आये नहीं महराज क्यों ।
हमसे बतलाये नहीं कुछ राज़ क्यों ॥
मुझसे बरगश्ता हुये महराज हैं ।
हैं नहीं मालुम क्यों नाराज़ हैं ॥ रानी ने क्या किया
भेप मर्दाना बना ली आपने ।
जाके देहली में लगी ये जाँचने ॥ तब भेद का पता लगा
खुफिया बातें रानी ने सब जान ली ।
मैं बचाऊंगी पती को ठानली ॥

शेर खाँ को फाँसी में दिलवाऊंगी।
जान देकर पति को मैं छुड़वाऊंगी॥ तब क्या हुआ
दो०—फौरन रानी ने वहाँ, वेश्या भेष बनाय।
देहली के दर्बार में, दिया साज बजवाय॥
शाहजहाँ हैं देखते, उस वेश्या की ओर।
एकदम "व्याकुल" होगये, जैसे चन्द्र चकोर॥

"बादशाह प्रसन्न होकर बोले"

बोले बहुत प्रसन्न हैं, बो दर्बोगे आम।
जो चाहे ले लीजिये, माँगो अभी इनाम॥
रानी बोली कुछ नहीं दर्कार है।
एक ही विनती मेरी सरकार है॥
गौर मेरी प्रार्थना पर कीजिये।
शेरखां से क़र्ज दिलवादीजिये॥
बस यही विनती मेरी सरकार है।
क़र्ज रूपये ५००० है॥ बदशाह का पूछना
दो०-सुनते ही इसवाक्य के, बादशाह हुये दंग।
मियाँ शेरखां का वहाँ, बिगड़ गया सब रंग॥

(बादशाह के सामने शेरखां का हाथ जोड़कर कहना)

इस वेश्या से सरकार मेरी कुछ जान नहीं पहिचान नही।

सौगन्ध आप की कहता हूँ कभी देखा इसका मकान नहीं ॥
सरकार ये झूठी बातें हैं, मैं साफ साफ बतलाता हूं ।
कभी शक्ल तो इसकी देखी नहीं मैं क़सम क़ुरान की खाताहूँ

तब रानी का डाटकर कहना—

जब शक्ल नहीं तुमने देखी तो कटार कहां से लाये हो ।
जंघे पर मेरे लहसुन है कहो देख मियां कब आये हो ॥
बदनामी मेरी दर्बार में की बदकार बड़े मक्कार हो तुम ।
इन्साफ के रू से सज़ा मिले तो फांसी के हक़दार हो तुम ॥
जो कुछ रानी पर बीती थी वोह सारा हाल सुनाया है ।
इक दूतीन के ज़रिये इसने ये सब परपँच रचाया है ॥२॥
दोहा—रानी की सुन दास्ताँ, गया सन्नाटा छाय ।
देखो ज़ालिम शेरखाँ, जाल रहा फैलाय ॥

* बदशाह का हुकुम *

जसवन्त सिंह को रिहा करो फांसी पर इसको लटका दो ।
झूठे की सज़ा यह होती है सारे 'आलम' को दिखला दो ॥१।

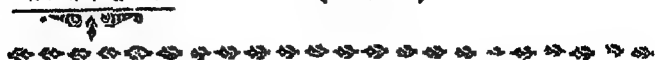
❀ रागिनी मधुर माधुरी ❀

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो ॥
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहिं पठायो ।

चार पहर वंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल-बाल सब वैर परे हैं, बरबस मुख लिपटायो॥
तू जननी मनकी अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो॥
यह ले अपनी लकुट कमरिया, बहुतहि नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि जशोदा, लय उर कंठ लगायो॥

❀ १४ भगवान श्रीकृश्णचन्द्रजी का बालपन ❀

एक दिन वक्त सहेर मात यशोदा बैठी।
बिलोती दूध वो मोहन की बलैयाँ लेती॥
यक ब यक थाम लई माँ की मथानी कान्हा।
माता मारेगी मुझे इसकी भी परवा न की॥
दही के छींटे पड़े रुख पै नजारे से बने।
गोया आकाश तना उस पै सितारे से बने॥
और फिर पकड़ के दामन ये कन्हैया ने कहा।
माँ मुझे भूख लगी ला मुझे अब दूध पिला॥
यशोदा—इस वक्त दूध मिलेगा न कन्हैया तुझको।
भ० कृष्ण-कब भला दूध पिलायेगी तू मैया मुझको॥
यशोदा—रात को दूध तुझे भर के सकोरा दूँगी।



भ०कृष्ण-रात कहते हैं किसे ये तो तुम्हारी सुनली ॥
यशोदा-रात कहते हैं उसे जबकि अन्धेरा हो जाय ।
आंख महरूम जहां देखने से ही रह जाय ॥
सुन के तशरीह तब मोहन ने छुपाई आंखें ।
बन्द पलकों को किया और दबाई आंखें ॥
और फिर पकड़ के दामन ये कन्हैया ने कहा ।
मइया अब रात हुई दूध पिला दूध पिला ॥

* इतना ही नहीं *

नटखट थे बड़े खेल में आमांदा कन्हैया ।
थे चारली चैपलिन के ये परदादा कन्हैया ॥
हर काम से आईना ज़राफत की सदा थी ।
जो बात थी केशर की वो क्यारी से सिवा थी ॥
गोरस की वो चोरी में थे मशहूर नगर में ।
माखन चुराने को गये ये किसके न घर में ॥
एक रोज का मैं जिक्र जरा भक्तों को सुनाऊं ।
चुपचाप जो बैठे हैं जरा इनको हँसाऊं ॥
ग्वालों के संग खेलते जमुना के किनारे ।
सब थक गये जब खेल से बाहम तो बिचारे ॥
जमुना के नहाने की बात दिल में समाई ।

कुछ साथियों को भूख नहाने से लग आई ॥
तब आंख बचाकर घुसे एक गोपी के घर में ।
माखन का घड़ा छींके पै आया है नज़र में ॥
झट भट से उतारा और कांखों में दबाया ।
फिर खाने लगे माल हर एक अपना पराया ।
फारिग़ हुई जब काम से इतने में वो गोपी ॥
पट देखे खुले होगई अचम्भे में वो गोपी ।
आहट जो मिली कृष्ण ने अपने को छुपाया ॥
और जा बजा ग्वालों को अंधेरे में लुकाया ।
गोपी ने जो देखा कि ये नन्दलाल खड़ा है ॥
और बगल में दबा हुआ माखन का घड़ा है ।
घबड़ाई हुई कोठरी के दर से दर आई ।
हँस करके वो कहने लगी हर इतनी ढिठाई ॥
वो बोली—तू कौन है ?
भगवान बोले—मैं नन्द का सुत ।
गोपी—किस काम से आया ?
भगवान बोले-मां मारती थी तेरे घर छुपने को आया ।
गोपी—अच्छा तो बता बगल में ये क्या है दबाया ?
भगवान बोले—पगली तेरा माखन है जो बिल्लीसे बचाया
फिर-गोपी बढ़ी जो अन्दर कहा माजरा क्या है ।



दुबका कोई सहमा कोई कोने में पड़ा है ॥
मुँह को छुपाये कोई कोई झांक रहा है।
और झूठ मूंठ बिल्ली कोई हांक रहा है ॥
ऊकड़ं कोई बैठा है कोई पांव पसारे ।
और औंधा कोई हो गया है शर्म के मारे ॥
वो बोली कड़क कर कि भला बात ये क्या है ?
पलटन की ये पलटन तो लिये साथ खड़ा है ॥
भगवान बोले-मत डर ये मेरे साथी हैं नहीं लश्करेशाही ।
तू चोर कहे मुझको तो ये देंगे गवाही।
ये बात सुनके गोपी उन्हें जकड़ लिया था।
उस कृष्ण कन्हैया को वहां पकड़ लिया था ॥
जो सो गये थे साथी सभी जाग गये थे।
ये दृश्य देख ग्वाल बाल भाग गये थे ॥
तब माता के ढिग गोपी जा फरियाद सुनाई।
माँ देख कन्हैया ने दही दूध सब खाई ॥

वार्ता—तब माता बोली कि बहन देख यह छोरा किसका है तब गोपी ने मुड़कर देखा तो—

अज्ञान का परदा हटा और हो गया तड़का।
पीछे को देखी गोपी तो था गोपी का लड़का ॥

और भगवान-मेरे मनोहर माधो मुरली सजा रहे थे।
माता के पीछे मोहन मुरली बजा रहे थे॥
तब-माता ने जब थप्पड़ लगाकर मूँ को खुलाया।
तब देख तअाज्जुब हुआ ब्रह्मांड समाया॥
लीला ये जब की "शोख" सुनाता हूँ किसी से।
तब भक्त मस्त होते हैं खुश होके हंसी से॥

अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना "रहीम"

शैर-जो ग्वालिन का मक्खन चुराकर वह भागे।
वह लाई शिकायत जशोदा के आगे॥
कहा तेरा मोहन सताता बहुत है,
चुराता तो है पर गिराता बहुत है।
कई एक पहिले से घर में खड़ी हैं,
जशोदा से सब बारी २ लड़ी हैं॥
वहीं नागहाँ नन्द का लाल आया।
कयामत की चलता हुआ चाल आया॥
कहा दूर से झूठ कहती हैं माता।
इसी ताक में यह तो रहती हैं माता॥
यह छेड़े मुझे और दुहाई न दूँ मैं,
जो ठोकर झटक कर कलाई न दूँ मैं।



जो पनघट पे इनको दिखाई न दूँ मैं,
जो मुरली बजाता सुनाई न दूँ मैं ॥
तड़फती हैं बेचैन होती हैं क्या क्या,
मेरे ग़म में आंसू पिरोती हैं क्या क्या।
न शब को मिला न दिल को मिला हूं,
महीनों के बाद आज इनको मिला हूँ ॥
यह झूठी है गर शिकवा बरलब है आई,
मुझे देखने के लिए सब हैं आई ॥

❀ रागिनी पहाड़ी ताल तीन ❀

बसो मोरे नैननमें नंदलाल ॥
मोहिनी मूरति साँवरि सूरति नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती माल ॥
छुद्र घंटिका कटितट शोभित नूपुर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगतबछल गोपाल ॥

❀ १५—महासाध्वी मीराबाई ❀

रियासत राजपूताना में इक मेवाड़ नामी है।
वहां जो आदमी है ज्ञान और भगती का हामी है ॥
उसी मेवाड़ के राणा की मीराबाई रानी थी।
बड़ी भगतन पुजारन धर्म वाली और ज्ञानी थी ॥

बसी थी उसके दिल में हर घड़ी भगवान की सूरत ।
हकीकत में थी लक्ष्मी गो कि थी इन्सान की सूरत ॥
किया करती थी वह पूजा सदा मुरली मनोहर की ।
न थी कुछ इस लगन में उसको उल्फ़त अपने शौहर की ॥
वह कहती थी कि मैं दासी हूं, मोहन मेरे स्वामी हैं ।
वो मोहन जिनकी सब राजा किया करते गुलामी हैं ॥
मुझे राणा की रानी हाय सब गुमराह कहते हैं ।
वह था इक खेल गुड़ियों का जिसे वो व्याह कहते हैं ॥
जहां है अपने मतलब का ये है पक्का यकीं मेरा ।
सिवा 'गोपाल गिरधर" के यहां कोई नहीं मेरा ॥
हमेशा बैठ कर मन्दिर में वह शृंगार करती थी ।
हरी से प्रेम करती थी हरी से प्यार करती थी ॥
लिए हाथों में 'इकतारा' भजन हर समय गा लेना ।
यही था काम उसका और उसे दुनिया से क्या लेना ॥
मुहब्बत में जो राणा प्यार की कुछ बात कर देता ।
वो कहती थी 'हरे कृष्णा' 'हरे कृष्णा' 'हरे कृष्णा' ॥
हरी का नाम उससे सुनके राणा सूख जाता था ।
बहुत नाराज होता था बहुत गुस्से में आता था ॥
बड़ी कीं कोशिशें राणा ने मीरा को मनाने की ।
मगर वह धुन की पक्की थी न थी काबू में आने की ॥

गरज़ आहिस्ता आहिस्ता हुई दोनों में फिर अन बन ।
हुआ राणा मुख़ालिफ़ और उसकी जान का दुशमन ॥
सितम करने लगा उसपर मगर वह कष्ट सहती थी ।
न मुँह से उफ़ भी करती थी सदा सानन्द रहती थी ॥
कहा मजबूर होकर एक दिन राणा नें मीरा से ।
कहा मानो मेरा बाज़ आओ इस भगती के सौदा से ॥
बनाया है मुझे ईश्वर ने राजा और तुम्हें रानी ।
करो फिर भी फकीरी तुम तो ये है सख्त नादानी ॥
उड़ाओ एशो इशरत का सभी सामां इकट्ठा है ।
जवानी के दिनों में जोग लेना ये भला क्या है ॥
कहा मीरा ने राणा जिन्दगी ये चन्द दिन की है ।
तुम्हें है नाज़ जिसपर वो जवानी चन्द दिन की है ॥
तुम्हारे पास जो असबाब मुल्की और माली है ।
ख्याली है, ख्याली है, ख्याली है, ख्याली है ॥
हुबाब आसा है दुनियां में हर इनसान की हस्ती ।
हमेशा रहने वाली है फकत भगवान् की हस्ती ॥
बशर की जिन्दगी तो चन्द सांसों की बदौलत है ।
हवा पर सिर्फ ये ठहरी हुई तन की इमारत है ॥
कि जाकर आयेगा भी या नहीं दम का भरोसा क्या ।
हमें तो चाहिए हर श्वाँस पर लें नाम मोहन का ॥

जिन्होंने दी है ये सब नेमते संसार में हमको।
उन्हीं का नाम लेने में यहाँ बरपा क़यामत हो॥
हरी से फ़ायदा ही फ़ायदा है लौ लगाने में।
करोगे प्रेम गर उनसे रहोगे खुश ज़माने में॥
हरी की हर ज़बानो दिल पर गर जलवा गरी होगी।
तो हर उम्मीद की सूखी हुई खेती हरी होगी॥
लगाओगे लगन राणा अगर तुम कृष्ण प्यारे से।
तो तर जाओगे भवसागर से उनके इक इशारे से॥
हमेशा तुमको जपना चाहिए है नाम गिरधर का।
नहीं बनना मुनासिब है तुम्हें बन्दा कभी ज़र का॥
ये कहते कहते मीरा हो गई भगती में नाराजन।
'हरे मोहन' 'हरे मोहन' 'हरे मोहन' 'हरे मोहन'॥
हुआ गुस्से में राणा सुनके बातें ये सब मीरा की।
हुई लाल आँखे चेहरा सुर्ख बोला है ये बेबाकी॥
मेरे आगे तू मोहन को पती अपना बनाती है।
मेरा अपमान करती है मेरा तन मन जलाती है॥
मज़ा इस बेहयाई का इसे मैं अब चखाऊंगा।
ये राधेश्याम, राधेश्याम, का जपना बताऊंगा॥
दिले नादां फंसा अब तक रहा ज़ुल्फों के फन्दे में।
खुला ये आज ही मुझ पर कि यह है कुछ और धन्दे में॥



बदन की तो ये गोरी है मगर दिल इसका काला है।
तभी घनश्याम की जपती सुबह और शाम माला है॥
महल से बड़बड़ाता इस तरह राणा निकल आया।
किसी योगी से फौरन एक काला सांप मंगवाया॥
किया चुपके से उसको बन्द एक सोने की पिटारी में।
न सोचा उसने ऊंचा नीचा दिल की बेकरारी में॥
यकीं था जान मीरा की ये काला नाग ले लेगा।
कन्हैया जी की भगती का उसे परशाद दे देगा॥
कहा दासी को देकर तू अभी रनवास में ले जा।
कि ये राणा की माता ने उसे उपहार है भेजा॥
पिटारी ये मगर देना छिपा कर मेरी माता से।
न कोई दूसरा ही शख्श इसको खोलने पाये॥
बताकर चाल सब राणा ने चलता कर दिया उसको।
और इस खिदमत के करने को बहुतसा ज़र दिया उसको॥
महल वो वर महल पहुँची तो देखा बैठी मीरा है।
भजन में है मगन पूजा का कुछ सामान रक्खा है॥
किया झुक कर प्रणाम और वह पिटारी सामने रखदी।
कहा ये आपकी माता ने है उपहार में भेजी॥
न मेवा है न फल है और नहीं अंगूर है इसमें।
न ज़र कपड़े मिठाई और लड्डू मोती चूर है इसमें॥

सुना है इसमें राधेश्याम की है मूरती आई।
बड़ी सुन्दर मनोहर अति छबीली और सुखदाई॥
सुना मीरा ने जब आया है ये उपहार माता का।
दिया खुश हो के उनको धन्यवाद और फिर उसे खोला॥
पिटारी खोलने में भी था ज़बां पर नाम नटवर का।
बसा था मद भरी आंखों में जलवा श्याम सुन्दर का॥
यह सच्चे दिल से मीरा के सुमरने का असर देखो।
खुला ढकन ज्योंही गिरधर हुए खुद जलवा गर देखो॥
नज़र मीरा की आंखों से श्री भगवान् आते हैं।
जो काले नाग के फन पर खड़े मुरली बजाते हैं॥
गले में हार वैजन्ती मुकुट है मोर का सर पर।
गदा पद्म आदि उनके चार हाथों में है जलवा गर॥
पीताम्बर अजब है दे रहा छवि नील से तन पर।
चमकती जिस तरह आकाश पर बिजली हो छिन २ पर
जो देखा श्याम को मीरां ने पूजा लग गई करने।
तो खुश हो के बजाई बांसुरी मुरली मनोहर ने॥
ध्वनी रनवास में आने लगी बन्शी की जब यकदम।
तो पहुँचे दौड़कर राणा वहां देखा अजब आलम॥
खड़ी है दूर पर दासी मगर है सख्त हैरत में।
गई यह भूल अपना तन बदन वो अपनी हरकत में॥



पिटारी खुल गई है और पड़ा है इक तरफ ढकन ।
वो काला नाग कुण्डली मारे बैठा है उठाये फन ॥
उसी फन पर खड़े हैं कृष्ण और वन्शी बजाते हैं ।
फलक से देवता गण फूल दम पर दम गिराते हैं ॥
उतारी जा रही है आरती मीरां के हाथों से ।
हुआ हैरत में राणा देखकर ये अपनी आँखों से ॥
पड़ा ऐसा असर ऐ 'शोख' दिल पर उसकी भगती का ।
कि छोड़ी दुश्मनी करने लगा राणा भी खुद पूजा ॥

❀ खास बात ❀

स्व० बा० सं० र० श्रीयुत पं० 'आत्माराम जी "शोख" देहलवी" संगीत सम्राट श्री पं० भगवतकिशोरजी "व्याकुल" सि०हि०स०ध०प्र० श्रीअयोध्याजी निवासी के सबसे बड़े शिष्यों में से थे । जिन्होने देहली के धर्म युद्ध में अपना प्राण धर्म के ऊपर निछावर कर दिया

❀ समयाष्टक ❀

(मानस-तत्वान्वेषी पं० श्रीरामकुमारदासजी 'रामायणी')

(वेदान्त-भूषण, साहित्यरत्न, श्रीअयोध्याजी)

तब प्रात जगैं अरुणोदय से,
नित मात पिता गुरु के पग लागैं ।
अब मातु पिता की न कानि करें,
दिन तीनि घरी के चढ़े पर जागैं ॥

तब प्रात नहाइ के पूजि हरीहर,
गावत वेद पुराण की रागैं।
अब विस्कुट केक औ चाय, 'कुमार'
लै नूतन पाँछन में मति पागैं ॥ १ ॥
तब सुन्दर स्वच्छ शरीर रखैं सब,
पालैं सदा सदाचारन को।
अब होत न शौच सनीमा बिना,
ठठरी लखौ हाड़ कुमारन को ॥
तब ज्योति मयी दृग है चश्मा,
अब व्यस्त सु माँग सुवारन को।
तब मन्दिर में हरि लीला लखैं,
अब देखैं सिनेमा बजारन को ॥ २ ॥
तब बालक बालिका सादे रहैं,
अब नित्य नवीन शृङ्गार बनावैं।
तब शास्त्र कला मन लाइ पढ़ैं,
अब काम कला की किताब मँगावैं।
गृह कारज माँहि प्रवीण तबै,
अब देखत ही घर नाक चढ़ावैं।
तब कानि 'कुमार' करैं गुरु की,
अब लाज समाज को धोइ बहावैं ॥ ३ ॥



तब भारत और रमायन को पढ़ि,
सुन्दर स्वच्छ चरित्र बनावैं।
अब नाविल और कहानिन को पढ़ि,
धर्म सुस्वास्थ्य औ द्रव्य नशावैं॥
तब भारत की परिपाटिन सों चलि,
उन्नत देश 'कुमार' करावैं।
अब मानें गुरू निज लन्दन को,
शुचि भारत भाव भभेरि भगावैं॥ ४ ॥
तब राखैं युवा तक लौं ब्रह्मचर्य,
अब बालक दूध पियावत ब्याहैं।
तब युद्ध करैं रण-सिंह गजेन्द्र सों,
पै अब श्वान को देखि कराहैं॥
खेदे रहैं अरिको निज देश सों,
पै अब दासता में सुख चाहैं।
जीवन धर्म औ त्यागमयी तब,
पै अब स्वार्थ 'कुमार' उमाहैं॥ ५ ॥
तब वेद पढ़ैं तप योग करैं द्विज,
पै अब निन्द्य कुवार कमावैं।
पालैं प्रजा नित प्राण समान,
तबैं अब भूप प्रजै चहैं खावैं॥

दानरु धर्महिं वैश्य करैं तब,
पै अब सूमता वृत्ति रहावैं।
तीनिहुँ वर्णन सेवैं तबै,
अब शूद्र 'कुमार, द्विजाति कहावैं ॥६॥
तब साधु बनैं हरि के हितमें,
अब पेट जरे पर वेष बनावैं।
तब देह को छीण करैं तप सों,
अब आठहु भोग से अंग सजावैं॥
तब फूस की टाटिन माहि रहैं,
अब ऊंची अँटारी विमान लखावैं।
तब शास्त्र पढ़ैं हरि नाम जपैं,
अब मूर्ख 'कुमार, रहैं गरिआवैं ॥७॥
तब पूरब की रहनीहिं रहैं,
अब पूरब की कहनी कहि गावैं।
तब देश विदेशन के गुरु है,
अब पश्चिम के मलमों बहि जावैं॥
बक काक मलेच्छन खेदे रहैं,
अब डाँटत ही तिनके दबि आवैं।
इमि देखि दशा निज लालन की,
चुपचाप 'कुमारहु' बैठि रहावैं ॥८॥

❀ चौथा भाग ❀

❀ रागिनी देशताल कँहरवा ❀

सुना री मैंनें निर्बल के बलराम।
पिछली साख भरूं सन्तन की आड़े संवारें काम॥
जब लग गजबल अपनो बरत्यो नेक सरो नहिं काम।
निर्बल ह्वै बलराम पुकारयो आये आधे नाम॥
द्रुपद-सुता निर्बल भइ ता दिन गह लाये निज धाम।
दुःशासन की भुजा थकित भई वसन रूप भये श्याम॥
अपबल तपबल और बांहुबल चौथा है बलराम।
सूर किशोर कृपा से सब बल हारे को हरिनाम॥

❀ १६—असहाय अबला ❀

१—एक औरत किसी टांगे पे चढ़ी बैठी थी।
स्वर्ण के गहनों से वह खूब भरी बैठी थी॥
संगे-मरमर की गोया पुतली घड़ी बैठी थी।
देखने वाले हैं कहते कि परी बैठी थी॥
जिसका दुनियां में नहीं शानी वो रति बैठी थी।
दूर किसी गांव में जाने को सती बैठी थी॥
२—बोली रथवान को अब देर न कर चल बाबा।
मैं तो अब ठहर नहीं सकती हूँ एक पल बाबा॥
होते होंगे मेरे घर वाले भी बेकल बाबा।
ठहरे ठहरे ही यों जायगा दिन ढल बाबा॥

तू तो रह जायेगा गर मिली न सवारी तुझको।
हमको जाना है ज़रूरी है लाचारी मुझको ॥२॥

३—कोचवाँ कुछ सोचकर तब चल दिया।
हो गया तूफान सा अब वह खड़ा॥
आह की और दिल को कर लीना कड़ा।
फिर दिले नादां को समझाया बड़ा॥
पर दिले कम्बख्त कुछ माना न एक।
हो रहा 'घायल' था उसको देख देख ॥३॥

४—बैठना कामी को मुशकिल हो गया।
साल के मानिन्द पल पल हो गया॥
ऐसा बिगड़ा के वो बेकल हो गया।
अकल खो बैठा ओ जाहिल हो गया॥
टाँगा ज्यों बढ़ता था आगे राह में।
ग़र्क होता था वो उसकी चाह में ॥४॥

५—पर सती को इसका कुछ नहीं ज्ञान था।
अपने घर अपने पति में ध्यान था॥
पाप का उमड़ा उधर तूफ़ान था।
इस तरफ़ बस आसरा भगवान था॥
इतने में जङ्गल बियाबां आ गया।
कुछ सती दहली वहीं ध्यान आ गया ॥५॥



६—टांगे वाले ने लिया वे रासता ।
देख कर बोली सती करते हो क्या ॥
फिर वो बोला कुछ नहीं अय दिल रुबा ।
अर्ज है पूरा हो मेरा मुद्द आ ॥
हाथ फैलाये उधर जाने लगा ।
अपने दिल की बात बतलाने लगा ॥ ६ ॥
७—फौरन ही सती तब कूदपड़ी । तर्ज रा० श्या०
कोई रास्ता नजर न आता था ॥
हर तरफ ही जङ्गल जङ्गल था ।
कोई आता था नहि जाता था ॥
जब देखा टांगे वाले को नाहर सम दौड़ जाता था ।
किसमत की फूटी अबला की गोया नाराज विधाताथा
बोली भगवान से डर बात्रा क्यों इतना जुल्म कमाता है ।
मैं अबला और असहायहूँ जब क्यों तरस ज़रा नहीं खाता है॥७
शैर ८—खिलखिला उट्ठा वो पापी नाम सुन भगवान का ।
फिर कहा दुनियां में पर्दा है पड़ा अज्ञान का ॥
किसने कब भगवान देखा वहम है इन्सान का ।
मानले चाहती भला गर्चे है अपनी जान का ॥
वर्ना कोई भी तुझे यां पर बचा सकता नहीं ।
लाख चिल्लाती रहे कोई भी आ सकता नहीं ॥ ८ ॥

९—गर्ज कर बोली सती ये काम है शैतान का ।
होके इन्साँ फेल करना चाहता हैवान का ॥
डर नहीं तुझको अगर कुछ सर्वशक्तिमान का ।
है मगर मुझको भरोसा श्रीकृष्ण भगवान का ॥
वो दयामय हैं दया क्योंकर न अब दिखलायेंगे ।
मेरी रक्षा के लिये वो आयेंगे वो आयेंगे ॥ ९ ॥

१०-लेके खंजर हाथ में गुस्से से दौड़ा कोचवाँ ।
भाग जितना भागती है जायेगी आखिर कहाँ ॥
मेरी मुट्ठी से निकल सकती नहीं है तेरी जाँ ।
देखता हूं कृष्ण तेरा किस तरह आता यहाँ ॥
इस वकत वो भी अगर आजाये मारा जायगा ।
हाथ में मेरे है खंजर क्या मेरा कर पायगा ॥ १० ॥

११-जिस वकत देखा सतीने अब तो बचाना है मुहाल ।
फिर पुकारी हाथ बांधे आइये गोपाल लाल ॥
वक्त मुश्किल के भला किसकी न रक्षा तुमने की ।
भक्तवर प्रहलाद की खातिर किया तुमने कमाल ॥
जिस वकत गजराज पानी में पुकारा आपको ।
उस वकत तो तेज़ से भी तेज़ करदी अपनी चाल ॥
क्या वजह है आजइतनी देर करते हो प्रभो ।
द्रौपदी के वक्त तो इतनी न की थी कीलो काल ॥

क्यों कन्हैया देर की मेरे लिये अब "गंगाधर"।
देखते भी हैं नहीं क्या हो रहा है मेरा हाल ॥ ११ ॥

१२-शब्द रोने का हुवा जब दीन अबला नार का,
"गंगाधर" उस वक्त पहुँचा तार इक बेतार का।
हिल गया बैकुण्ठ में आसन भी जगदाधार का,
हो गया मुशकिल वहाँ पर बैठना सरकार का।
कृष्ण काला आके फौरन नाग काला हो गया,
शक्ल ऐसी में नुमायाँ बन्सी काला हो गया ॥
दोनों टांगों से जकड़कर फन्दा डाला सर्प ने,
काट जब खाया तो पापी लग गया है तड़पने।
इस तरह आकर बचाया था सती के धर्म को,
लाज को रखा सती की और रखा शर्म को ॥१२॥

※ बोलो मनमोहन सरकार की जय ※

❀ रागिनी पहाड़ी ताल कँहरवा ❀

प्यारे! जीवन के दिन चार।
भूल न जाना जग ममताका
देख कपट-व्यवहार ॥ १ ॥ प्यारे०
किसका तू है, कौन तुम्हारा,
स्वारथ रत संसार ॥ २ ॥ प्यारे०

अति दुर्लभ मानुष-तन पाकर,
खो मत इसे गँवार ॥ ३ ॥ प्यारे०
प्यारे प्रभुसे प्रीति करे यदि,
तो उतरै भव पार ॥ ४ ॥ प्यारे०

× × × ×

❀ १७—१२ वर्ष का बालक वीर ❀
❀ हक़ीक़त राय ❀

ध्वनि—आजा आजा आजा मेरी बर्बाद मुहब्बत०
परवा परवा परवा नहीं जो जान भी जाये तो ग़म नहीं।
मरना धरम के वास्ते जीने से कम नहीं ॥
देता है चमक और भी सोना कटा हुआ, सोना कटा हुआ।
पिसने के बाद देती हिना रङ्ग कम नहीं ॥ मरना धरमके० ॥
जलती नहीं जब आत्मा पड़कर भी आग में, पड़कर भी आगमें
फिर देश की भलाई में मरने का ग़म नहीं। मरनाधरमके० ॥
पड़कर क़फ़स में शेर न छोड़ा है गरजना, न छोड़ाहैगरजना०
घबराना रंज देखके वीरों धरम नहीं। मरना धरम के० ॥
मरदानगी का काम है देना किसी का साथ, देनाकिसीका साथ
आफ़त में साथ छोड़ दें ऐसे वो हमनहीं। मरनाधरमके० ॥
ऐ कृष्ण ! प्रार्थना है ये 'व्याकुल' की आपसे, 'व्याकुल' की०।
सर जालिमों का किसलिए होता क़लम नहीं। मरनाधरमके०

❀ बादशाह का कहना ❀

वार्ता-हकीकत तुम हमारा कहना मानों
और फौरन मुसलमान हो जाओ ॥

दो०-सुनकर के कहने लगा बालक चतुर सुजान ।
लगे लोग सब देखने, होकर के हैरान ॥
ह०-नींव डालूंगा मैं फिर से उस पुरातन कर्म का ।
लाज रक्खूंगा मैं मरते इस सनातन धर्म का ॥
बा०-हकीकत तू हकीकत में मुसलमां आज हो जाये ।
कसम कुरआन की तुझको ये तख्तोताजमिलजाये ॥
ह०-हंसते हंसते धर्म पर हो जायेंगे बलिदान हम ।
पर सनातन धर्म की जाने न देंगे शान हम ॥
बा०-मान ले कहना नहीं तो आज मारा जायेगा ।
है हमारा हुक्म ये कि सर उतारा जायगा ॥
ह०-सिर कटे देंह कटे जान बला से जाये ।
शान पर धर्म सनातन की न जानें पाये ॥
बा०-ऐ हकीकत छोड़ दे हठ खाल भी खिचवाऊंगा ।
बोटियां और हड्डियां कुत्तों से भी नुचाऊंगा ॥
ह०-तुम्हारी धमकियों से हम न हरगिज डरने वाले हैं ।
सनातन धर्म पर जी जान से हम मरने वाले हैं ॥

गरज कर कहना—

बोला क्यों धर्म को छोड़ूं मैं सौ जान से सदके जाऊंगा।
सब हेच है दुनियां की चीजें मैं इनको ले क्या पाऊंगा॥
दौलत क्या है आराम है क्या इज्जत क्या है जब धर्म नहीं।
क्यों यूं ही चकमें देते हो आती क्यों तुमको शर्म नहीं॥

❀ मिटाने के नहीं ❀

प्रेम हम मुर्ली मनोहर से हटाने के नहीं।
हिन्दुओं से हम मुहब्बत को घटाने के नहीं॥
आर्य्यों की सन्तान के हम लाल हैं सुनलो जरा।
सर से पहले हम कभी चोटी कटाने के नहीं॥
हृदय के मंदिर में जब श्रीकृष्ण हों बैठे हुए।
भूल कर भी हम मुहम्मद को बिठाने के नहीं॥
गङ्गा जमुना के तो निर्मल जल को जिसने पी लिया
आवे जम जम को कभी वह मूं लगाने के नहीं॥
मन का माला हाथ में ले हरिका जो सुमिरन करे।
जीते जी वह फिर कभी तसवी उठाने के नहीं॥
हम नहीं होंगे मुसल्मां चाहे जितना राज दो।
अपने गौरव को कभी हम यूं लुटाने के नहीं॥
सर कटा दूंगा हूँ 'व्याकुल' धर्म की इक आनपर।
श्री सनातन धर्म की इज्जत मिटाने के नहीं॥



❀ यह सुनते ही बादशाह हुक्म देता है ❀

बाद०–ऐ मेरे जल्लाद तुम तेगा सम्भार लो।
हुक्म होता है कि सर इसका उतार लो॥
ह०–तुम समझते हो हकीकत का खड़ा मैं काल हूं।
धर्म पर बलिदान हूँगा क्षत्रियों का लाल हूँ॥
वार्ता–ये कहकर माता पिता से बिदा होता है और कहता है
शैर–न करना ग़म मेरे मरने का माता चैन से रहना।
भजन ईश्वर का करना याद में मेरे न दुख सहना।
पिता जी दीजिये आज्ञा मुझे चोला बदलने की॥
इजाज़त मांगती है आत्मा बाहर निकलने की।
तमन्ना जिन्दगी की है न तख्तोताज लेने की॥
तमन्ना है फ़कत अपने धर्म पर जान देने की।
वार्ता–उधर जल्लाद ने फौरन तलवार चलाया—
शैर–यह कहकर वीर हकीकत ने माता का चरण निहारा था।
है धन्य भाग्य उसका 'व्य कुल' जो मरकर स्वर्ग सिधारा था॥
याद रक्खो—
शैर—छुपा हो कीच में पर तेज हीरा खो नहीं सकता।
छुपाले अग्नि को तिनका ये हरगिज हो नहीं सकता॥
जब स्वार्थहीस्वार्थ हृदयमें भरा तब सेवाका स्वांग रचाने से क्या
जब जाति दुखी जठराग्नि से तब पूरी कचौरी उड़ाने से क्य

जब भाई तुम्हारे गड्ढे में पड़े तुमही जो बढ़े बढ़ जाने से क्या
जब रंच भी प्रेम न जाति से है तब नेता प्रधान कहानेसे क्या

❀ इसलिये ध्यान रहे ❀

जब तेरी डोली निकाली जायगी।
बिन मुहूरत के उठा ली जायगी॥
उन हकीमों से कहो यूं बोल कर,
करते थे दावे किताबें खोल कर,
ये दवा बिल्कुल न खाली जायगी॥ जब॥
क्यों गुलोंपर हो रहा बुलबुल निसार।
पीछे है माली खड़ा हो खबरदार॥
मार कर गोली गिरा ली जायगी॥ जब॥
ज़र सिकन्दर का यहाँ सब रह गया।
मरते दम लुक़मान भी यूं कह गया॥
ये घड़ी हरगिज न टाली जायगी॥ जब॥
होवेगा परलोक में तेरा हिसाब।
कैसे मुकरोगे वहां पर तुम जनाब॥
जब बही तेरी दिखाली जायगी॥ जब॥
ऐ मुसाफिर क्यों पसरता है यहां।
ये किराये पर मिला तुझ को मकां।
कोठरी ख़ाली कराली जायगी॥ जब॥



❀ रागिनी भैरवी ताल तीन ❀

छांड़ि मन हरि विमुखन को संग।
जिनके संग कुबुधि उपजति है, परत भजन में भंग।
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान नहाये गंग॥
खरको कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषन अङ्ग।
गजको कहा न्हवावे सरिता बहुरि धरै खहि छंग॥
पाहन पतित बाँस नहि बेधत, रीतो करत निषंग।
सूरदास खल कारि कामरी चढ़त न दूजो रंग॥

❀ १८—महासती सक्खू बाई ❀

बस में भगतों के जो भगवान् रहा करते हैं।
देके दर्शन उन्हें सब कष्ट हरा करते हैं॥
सखुबाई की तरह भक्तों की मुक्ति के लिए।
"शोख" रस्सी में हरि आप बंधा करते हैं॥
महाराष्ट्र अय भी भारत वर्ष में इक देश पावन है।
दया का घर है विद्या धाम है भगती का आसन है॥
कन्हाड़ इक गांव है कृष्णा नदी के तट पै बसता है।
बड़ा सौदा वहां मुक्ति का और भक्ति का सस्ता है॥
वहाँ फिरता है सुख आनन्द दरिया की रवानी में।
मज़ा अमृत का आता है बशर को उसके पानी में॥

सुना है एक रहता था कोई उस गांव में ब्रह्मन ।
था घर बेटे बहू और स्त्री से गैरते गुलशन ॥
सखूबाई जो बेटे की बधू का नामे नामी था ।
समाया उसके सर में ईश्वर भक्ति का था सौदा ॥
मगर उसका पती सास और ससुर तीनों थे अज्ञानी ।
कुटिल करकश थे दुःख दाई थे और थे दुष्ट अभिमानी ॥
उठा रखते न थे कुछ भी सखू को वो सताने में ।
मज़ा आता था उनको शायद उसका दिल दुखाने में ॥
किया करती थी हरदम काम वो गोया थी कल कोई ।
पती सास और ससुर फिर भी किया करते थे बदगोई ॥
सखु सब काम करती और न रोटी पेट भर खाती ।
फिर उस पर करती कुन्दी सास बेहद उसको कलपाती ॥
वो इस बरताव पर भी शान्त थी आनन्द रहती थी ।
जो खाती मार सीताराम, सीताराम कहती थी ॥
उल्हाने, गालियां और ताने अपनी सास के सुनकर ।
लिया करती थी जितने नाम है भगवत के चुन चुन कर ॥
समझ कर सब ये दुख सुख रूप नित आनन्द रहती थी ।
समझती थी उसे ईश्वर कृपा हंस हंस के सहती थी ॥
हरी के कीर्तन में ध्यान था आठों पहर उसका ।
नमूना स्वर्ग का था उसके शुभ करमों से घर उसका ॥



जो पंडरपुर है एक तीर्थ भारत में बड़ा भारी।
वहां आषाढ़ में करते हैं मेला एक नर नारी ॥
है जिक्र एक साल का मेले में यात्री जब लगे जाने।
सखू के गाँव में हो हो के सब लगे जाने ॥
गई एक रोज़ पानी भरने नदी पर सखूबाई।
जो देखे दलके दल जाते तो उसके दिल में भी आई ॥
न जाने देंगे हरगिज़ जानकर घर वाले मेले में।
रहूंगी उम्र भर यूं ही गृहस्थों के झमेले में ॥
न क्यों इस मण्डली के साथ ही चुपचाप रस्ता लूं
लगे हाथों श्री विट्ठल के दर्शन भी न कर डालूं ॥
हुई एक मण्डली के साथ पंडरपूर को वो राही।
हुई इस बात की जब उसके घरवालों को आगाही
पती और सास दोनों दौड़कर जा पहुँचे कृष्णा पर।
जबरदस्ती से उसका पकड़ा पहुँचा और लाये घर ॥
सखू को बाँध कर रस्सी से डाला एक कोने में ॥
वो थे मशगूल सख़्ती पर वो थी मसरूफ़ रोने में।
किया तीनों ने मिलकर खाना पीना बंद सक्खू का
कई दिन रात बेचारी को रक्खा प्यासा और भूखा ॥
बँधी थी ऐसी रस्सी सख्त गड्ढे पड़ गये तन पर।
मगर फिर भी न था कोई उदासी का असर मन पर ॥

ये दुःख और कष्ट सारे वह न कुछ खातिर में लाती थी।
श्रीभगवान् विट्ठल के खुशी में गीत गाती थी॥
कई दिन बाद की भगवान् से यूं प्रार्थना रो कर।
दयामय कुछ विनय मेरी भी सुनिये दत्तचित होकर॥
मेरे हैं आप सब कुछ आप स्वामी मैं भिखारी हूँ।
बुरी हूँ या भली जैसी भी हूँ दासी तुम्हारी हूँ॥
बहुत अच्छा है ये इक बार दर्शन आपके होते।
मेरे दिल में जो ये धब्बे पड़े हैं पाप के धोते॥
मकाँ वालों ने मेरे आह हाथ और पाँव बांधे हैं।
न दाना हैं न पानी है अजब आफत में डाले हैं॥
फंसे जब आह माया जाल में अपने को पाते हैं।
क़फ़स में तनके बेहद प्रांन पंची तिल मिलाते हैं॥
रहूंगी बन्धनों में आखिरिश भगवन् पड़ी कब तक।
न टालोगे भला प्रभू ये मुसीबत की घड़ी कब तक॥
ये सच है आपके दर्शन जो मैं इक बार पालूँगी।
निहायत शौक़ से आनन्द से जान अपनी दे दूंगी॥
विनय सुनके ये आखिरिश हिल गया आसन मुरारी का।
चले ला चार उसके पास रखकर भेष नारी का॥
सखू ने देखा इक आई सखी जो उससे कहती है।
सखू जाती हूं पंढरपुर को मैं क्या तू भी चलती है॥



सखू बोली बँधे होते न गर यूं दस्तोपा मेरे।
तो चल पड़ती अभी मैं बेतआम्मुल साथ में तेरे॥
सखी बोली कि मैं पहले तुझे दर्शन कराऊंगी।
पलट कर आयेगी जब तू तो दर्शन को मैं जाऊँगी॥
न उल्फत का भरे बाई जो दम वो आदमी क्या है।
न दे जो साथ दुख सुख में भला वो भी सुखी क्या है॥
ये कहकर उसने रस्सी उसके तन से खोल दी सारी।
कहा दर्शन तुम अब भगवान् के जाकर करो प्यारी॥
ये साड़ी ये दुपट्टा और ये जेवर सब पहन लो तुम।
मुझे दो वस्त्र अपने रास्ता प्यारी वहन लो तुम॥
एवज़ में तुम अपने उस रस्सी से मुझको बाँधकर डालो।
निकल कर घरसे फौरन यात्रियों के साथ हो जाओ॥
मगर हां, करके दर्शन जल्द पंडरपुर से आ जाना।
कि मुझको भी तो दर्शन है श्री भगवान् का पाना॥
सखू राजी हुई मुश्किल से उसका मान कर कहना।
उसे रस्सी से बाँधा उसका पहना वस्त्र और गहना॥
फक़त रस्सी के बन्धन से न वो इस चाल से छूटी।
हक़ीक़त तो ये है दुनियां के माया जाल से छूटी॥
उधर सक्खू है पंडरपूर में मसरूफ दर्शन में।
इधर हैं मुक्ति दाता जग के खुद रस्सी के बन्धन में॥

कभी उसके ससुर और सास उसके पास आते हैं।
डराते हैं झिड़कते हैं खरी खोटी सुनाते हैं॥
जो कुछ करते हैं वो सख्ती बहुत खुश हो के सहते हैं।
खुशामद में सदा सास और ससुर की मगन रहते हैं॥
उन्हें इस तरह पन्द्रह रोज गुजरे सख्तियां सहते।
न इस पर भी पसीजे दोनों के दिल क्या थे पत्थर के॥
पती भी गो था खुद मतलब मगर उसको ख्याल आया।
कहीं गर मर गई सक्खू तो हो जाऊंगा मैं रुसवा॥
वो सक्खू रूप धारी स्त्री के पास जा पहुँचा।
किया माँ बाप का कुछ डर ना वोहिरास जा पहुँचा॥
छुरी से काट कर रस्सी को बन्धन खोलकर फेंका।
क्षमाः की प्रार्थना की और माना सब कसूर अपना॥
कहा अति प्रेम से स्नान और भोजन अब करो चलकर।
मकाँ के काम पहले की तरह ये सब करो चलकर॥
खड़े थे सर झुकाये त्रिभुवनपति सख्त हैरत में।
जो कुछ कहता था वो करते थे सब सक्खू की सूरत में॥
उन्होंने सोचा सक्खू जब तक अपने घर न आजाये।
मुनासिब है वो सब करना हमें जो कुछ भी बतलाये॥
और इससे पहले अन्तरध्यान होने में कयामत है।
सखू के वास्ते बे शुबा लाना इक मुसीबत है॥



किया स्नान घर भर को रिझाया मीठी बातों से ।
बनाया भोजन और सबको खिलाया अपने हाथों से ॥
जो घर वालों ने लज़्ज़त आज के खाने में पाई थी ।
मयस्सर ख़्वाब में भी वो किसी को तो न आई थी ॥
किया नकली बधू ने सबको सद्व्यवहार से वश में ।
लगे आनन्द से मिल जुल के रहने चारों आपस में ॥
इधर सक्खू जो पंडरपुर गई घर से रवाँ होकर ।
किये भगवान् के दर्शन निहायत शादमाँ होकर ॥
प्रतिज्ञा की यहाँ से तो मैं जीते जी ना जाऊँगी ।
कदम आगे न पंडरपुर की हद से मैं बढ़ाऊँगी ॥
ख़याल आया न उसको प्रेम और भक्ती के चक्कर में ।
बंधी बदले में उसके है पड़ी कोई सखी घर में ॥
सखू का दिल हुआ यूं ईश्वर भक्ती का मतवाला ।
समाधी में हुआ लबरेज उसकी उम्र का प्याला ॥
अचेतन होके तन उसका जमीं पर गिर पड़ा आख़िर ।
निकल कर आत्मा "गो लोक" में जाकर बसा आख़िर ॥
सखू के गांव के पास इक क्यूल नामी भी मौजा था ।
वहाँ के इक ब्राह्मण ने उसे देखा तो पहचाना ॥
दयालु था वो अपने साथ वालों को बुला लाया ।
कराया उन सभों ने मिलके अन्तिम संस्कार उसका ॥

जो देखा रुक्मिणी जी ने सखू वैकुण्ठ जा पहुँची।
और उसके वदले वैठे हैं वधू वनकर कन्हैया जी॥
हरी हैं मुन्तजिर हर दम अब आती है अब आती है।
मगर जो चल वसी संसार ही से वो कब आती है॥
कहाँ जाऊँ करूं क्या वो यही कुछ देर सोचा की।
गईं शमशान फिर और साड़ियाँ उसकी इकट्ठा की॥
हरी का नाम लेकर जान फिर से डाल दी तन में।
जगत माता ने ये सब कर दिया काम एक ही छिन में॥
उन्हें क्या था ये मुश्किल जब वो कुल सृष्टि बनाती हैं।
सकल ब्रह्माण्ड रचती हैं जगत माता कहाती हैं॥
जिला कर फिर सखू को रुक्मिणी जी ये वचन बोलीं।
खबर है कुछ कि क्या वायदा किसी से करके आई थीं॥
जरा सोचा तो होता उस सखी पर क्या गुजरती है।
जिसे तुम बान्ध कर डाल आईं जीती है कि मरती है॥
उसे जिस दम सखी का ध्यान आया तो वो घबराई।
भर आये अश्क आँखों में ज़बां पर ये सखुन लाई॥
जगत माता ये मुझ से हो गया पातक बड़ा भारी।
सखी अब तक पड़ी होगी बंधी रस्सी से वेचारी॥
सताते होंगे दम पर दम उसे आ आके घर वाले।
बड़े जालिम हैं वो पाला ना उनसे ईश्वर डाले॥

मगर प्रण है मेरा जीवन को दर्शन में बिताऊँगी ।
और अपनी जिन्दगी भर में कन्हाड़ अब फिर न जाऊंगी
कहा माता ने देवी दूसरा ही अब तो जीवन है ।
किया था जिससे प्रण तुमने ना वो तन है ना वो मन है ॥
नज़र से शक व हैरत की ना तुम मुझको जरा देखो । १॥
ये अपने वस्त्र गहने और अपनी तुम चिता देखो ॥
प्रतिज्ञा जो तुम्हारी थी वो पूरी हो चुकी देवी ।
न जीते जी गई उस गांव में और पाये दर्शन भी ॥
निभाया जैसे तुम ने प्रण को अब पूरा करो वादा ।
उठो और गांव जाने के लिये हो जाओ आमादा ॥
छुड़ाओ जाके तुम अपनी सखी को जल्द बन्धन से ॥
सुखी उसको भी करना चाहिये अब हर के दर्शन से ।
सखू फिर हो के जिन्दा गांव को दो दिन में जा पहुँची ॥
इधर फ़र्ज़ी सखू भी लेके नदी पर घड़ा पहुँची ।
सखी के भेष में भगवान् ने आखिर घड़ा देकर ॥
किसी ने फिर न देखा हो गये ऐसे रफूचक्कर ।
सखू लेकर घड़ा, होकर मगन अपने मकां आई ॥
यहां देखा तो घर वालों की रंगत और ही पाई ।
न वो हर वक्त का झगड़ा न वो हरदम की किलकिल है
मये उल्फ़त से पुर हर एक का पैमाना ये दिल है ॥

हुई मसरुफ पहले की तरह फिर काम में घर के।
गुजरने लग गये आनन्द से दिन खांनदां भरके॥
कई दिन बाद आया ब्राह्मण जब वो 'क्युल' वाला।
भरे आँखों में आंसू और तुलसी की लिए माला॥
सखू की मौत का वो हाल कहना चाहता ही था।
कि इतने में सखू को काम कुछ करते हुए देखा॥
कहा हे ईश्वर ये जाग्रत है या कि सपना है।
ये देवी मर गई थी हो गई किस तरह जिन्दा है॥
ससुर और सास को बाहर बुलाकर उसने बतलाया।
कि पंडरपुर में सखू मर गई थी मैं जला आया॥
तुम्हारे घर में फिर वो भूत बन कर शायद आई है।
इसे अब घर पै रखने में बड़ी भारी बुराई है॥
कहा उस से ये घर वालों ने पागल हो गये हो क्या।
सखू और जाये पंडरपूर ऐसा हो नहीं सकता॥
महीना भर से इस पर हो रही है खूब निगरानी।
नदी तक भी न जाने पाई लाने के लिए पानी॥
गलत है सर से पांव तक तुम्हारी जितनी बातें हैं।
ब्राह्मण देवता ये पेट पुजवाने की बातें हैं॥
चढ़ा कर आये हो पण्डित जी क्या तुम भंग का गोला।
जो बहकी बहकी बातें कर रहे हो आज बमभोला॥



ब्राह्मण था चतुर उसने सखू बाई को बुलवाया।
जो कुछ गुज़रा था पंडरपुर में वो उसको बतलाया॥
कहा सच सच कहो देवी कि आख़िर माजरा क्या है।
समझ में कुछ नहीं आती अजब भगवत की लीला है॥
सखू ने इब्तदा से इन्तहा तक दास्तां सारी।
सुनाई बेतामुल सब पै हैरत हो गई भारी॥
सखू ने तब से जाना खुद सखी बन कर हर आये थे।
बँधाकर अपने को मेरे सभी बंधन छुड़ाये थे॥
जिलाया था जिन्होंने मुझको वो थीं रुक्मणी माई।
घड़ा सर पर मेरे थे रखने वाले आप यदुराई॥
खुला जब राज ये सक्खू हुई भक्ती में दीवानी।
हुई सुन सुन के घर वालों को इस पर सख्त हैरानी॥
पती शरमा गया उसने वहू भगवत का माना था।
सताया जिस क़दर था उनको उसका क्या ठिकाना था॥
ससुर और सास भी बर्ताव पर अपने पशेमां थे।
न सेवा हम ने की जब घर में खुद भगवान् मेहमां थे॥
कब उनकी आंख से वो शम के आँसू निकलते थे।
थे प्रेम और भक्ती के दरिया जो रह रह कर उबलते थे॥
हुए जब शान्त मिलकर लग गये वो कीर्तन करने।
सुना जब गांव वालों ने लगे वो भी भजन करने॥

सखू के प्रेम और भगती ने पलटी गांव की काया ।
हुए सब नास्तिक से आस्तिक भगवान की माया ॥
रही ज़िन्दा सखू जब तक रहे जब तक वो घर वाले ।
रहे आनन्द से भगवान् की भगती के मतवाले ॥
कहानी जब ये कहते सुनते हैं आपस में नर नारी ।
महकती चारसू यारो हरी भगती की फुलवारी ॥
सभा में "शोख़" सक्खू की कथा जब हम सुनाते हैं ।
बरसते फूल तब आकाश से नज़रों में आते हैं ॥

(श्री "शोख़ जी" देहलवी)

❀ रागिनी जीवनपुरी टोड़ी ताल कहरवा ❀

नैना भये अनाथ हमारे ।
मदनगुपाल यहाँ ते सजनी, सुनियत दूरि सिधारे ॥
वे हरि जल हम मीन बापुरी, कैसे जिवहिं नियारे ।
हम चातक चकोर स्यामल घन, बदन सुधानिधि प्यारे ॥
मधुबन बसत आस दरसनकी नैन जोइ मग हारे ।
सूरश्याम करी पिय ऐसी, मृतकहुते पुनि मारे ॥

❀ १६—मोहन की लोटिया या बाँके बिहारी ❀

लड़का था इक यतीम मदन जिसका नाम था ।
सेवा में अपनी माँ की मगन सुबो शाम था ॥

वो माँ के लाड़ प्यार में भूला था बाप को।
हर वक्त महेव पढ़ने में रखता था आपको॥
दूर उसका मदरसा था ये था फिक्र का मुकाम।
जाता था वक्त सुबह तो आता था वक्ते शाम॥
पड़ता था जङ्गल एक जो लड़के की राह में।
खौफ वो खतर की थी जगह उसकी निगाह में।
मां के गले में बाहें वो इक रोज डालकर।
बोला कि माता जी मुझे लगता है वन में डर॥
साथी नहीं मेरा कोई क्या और दूसरा।
जङ्गल में आते जाते मेरा साथ दे ज़रा॥
सचमुच बता कि मेरा कोई और भाई है।
इतनी मेरी मदद जो करे क्या बुराई है॥
सुनकर सखुन ये बेवा के आंसू निकल पड़े।
थे उसके बेटे मर गये होकर कई बड़े॥
बोली बलायें लेके मदन इसका गम न कर।
जिन्दा है एक भाई तु हिम्मत को कम न कर॥
जङ्गल में तेरा भाई जो बांके बिहारी है।
करता हमेशा से वो हिफाज़त हमारी है॥
रख याद मेरी जान जो जङ्गल में डर लगे।
बांके बिहारी, बाँके बिहारी, पुकार ले॥

दौड़ा हुआ वो तेरी सदा सुन के आयेगा।
और तुझको बनके खौफ वो खतर से बचायेगा॥
मां की ये बात सुन के यक़ीं उसको हो गया।
उस रात को वो चैन से बिस्तर पै सो गया॥
खा पी के नाश्ता जो सुबह मदरसे चला।
बन में पहुंच के बांके विहारी को दी सदा॥
बांके विहारी जी मेरे हमराह आइये।
लगता है बन में डर मेरी हिम्मत बंधाइये॥
अम्मा का हुक्म है कि मेरे साथ आप आयें।
साथ अपने लेके मदरसे में मुझको छोड़ जायें॥
गुम हो गई मदन की बियानां में जब सदा।
झाड़ी से लड़का श्याम वर्ण इक निकल पड़ा॥
इठलाता और उछलता हुआ पास आ गया।
जिस पर मदन को भाई का विश्वास आ गया॥
सर पर मुकट था हाथ में वंशी लिये हुए।
आगे बढ़ा कहा कि मेरे साथ आइये॥
तुम तक जो मेरे आने में ताखीर हो गई।
भैया माफ़ करना ये तक़सीर हो गई॥
जो आये जी में मुझको तुम अच्छा बुरा कहो।
अम्मां से देर का न मगर माजरा कहो॥



भाई से मिल के दिल में मदन शाद हो गया।
खौफ़ वा ख़तर से मिल कर अब आज़ाद हो गया॥
खुश खुश वो मदरसे के क़रीब आके बोल उठा।
भाई अब आप जाइये वो मदरसा रहा॥
फिर वापसी में बन में बुलाऊंगा आपको।
रस्ता दिखाने वाला बनाऊंगा आपको॥
करके ये बात चीत वो दोनों हुए जुदा।
जंगल को एक, और मदरसे को दूसरा॥
पढ़ लिख के मदरसे से मदन घर को जब चला।
जंगल पहुंच के बांके बिहारी को दी सदा॥
"बांका बिहारी" आ गया हमराह हो गया।
घर तक मदन को भेज के बन को पलट पड़ा॥
यूँ आना जाना दोनों का मामूल हो गया।
आसानतर मदन को अब स्कूल हो गया॥
उल्फ़त मदन से बांके बिहारी की हो गई।
तालीम में तरक्क़ी का बेशक सबब हुई॥
रहता था बाग़ बाग़ बहुत दिल में नौनिहाल।
रहने लगे गुरू भी बहुत मेहरबान हाल॥
इस हाल में जो अरसा ज्यादा गया गुजर।
उलफत ने दिल में दोनों के अपना बनाया घर॥

त्योहार कोई इतने में नागाह आ पड़ा।
लड़कों का जिसमें मान गुरू का जरूर था ॥
लड़कों को एक बार गुरू ने बुला लिया।
एक एक लोटा दूध सभों से तलब किया ॥
खुश हाल सब थे सिर्फ गरीब एक था मदन।
सुन कर ये बात दिल में बहुत हो गया मगन ॥
घर आके माँ को अपनी सुनाया वो माजरा।
बेचारी माँगने को गई दूध जा बजा ॥
था इत्फाक़ दूध न उसको मिला कहीं।
आखों में अश्क खून के भर लाई मां जभी ॥
बेटा मुझे तो दूध ना मांगे से मिल सका।
इक लुटिया देके बोली कि भाई के पास जा ॥
छोटी सी लुटिया उसने जो देखी तो रो पड़ा।
और आँसुओं से सारा ही कुरता भिगो लिया ॥
माँ थी दुखी मगर उसे ढारस बँधाती थी।
रूहे मदन ख्याल से घबराई जाती थी ॥
लेकिन सिवाये इसके ना चारा ही कोई था।
आखिर वो लुटिया ले के मदन घर से चल पड़ा ॥
लुटिया वो थी कि दूध भरे जिसमें पाव भर।
और देखने में सबको हक़ीर आती थी नज़र ॥



जंगल में जाके बांके बिहारी को दी सदा ।
आया वो जब तो उससे ये की अर्ज़ें मुद्दया ॥
लुटिया भी दे दी हाथ में वो माँ की दी हुई ।
रखते ही उसके हाथ पै क्या दिल्गी हुइ ॥
देखा है उसमें दूध लबालब भरा हुआ ।
बाँके बिहारी पास है उसके खड़ा हुआ ॥
कहता है दूध ले ये गुरू जी को जाके दे ।
और उनके बूढ़े दांतों का आशीर्वाद ले ॥
चुप चाप दूध लेके मदन मदरसे गया ।
अपने गुरू के पास ही जाकर खड़ा हुआ ॥
सेठों के लड़के दूध के कलसे लिए हुए ।
एक एक करके अपने गुरू को थे दे रहे ॥
कलसों को देखते गुरू महाराज बार बार ।
लुटिया पै भूल कर भी नज़र की ना एक बार ॥
क्यों होता उन अमीरों में कंगाल का खयाल ।
था उनके दिल में एक फकत माल का खयाल ॥
लुटिया लिए मदन कई घन्टे खड़ा रहा ।
झुंझला के तब मदन से गुरू जी ने यूं कहा ॥
कर सबर किस लिए है ये जल्दी मचा रहा ।
बर्तन बढ़ा के आगे मदन से वो बोल उठा ॥

ले मूर्ख दूध डाल खड़ा देखता है क्या।
देखा मदन ने जब कि गुरू जी हैं अनमने॥
बर्तन में उनके दूध लगा वो उडेलने।
बर्तन तमाम चश्मे ज़दन में वो भर गया॥
लुटिया हुई ना खाली तअज्जुब ये हो गया।
घर से गुरू ने और भी बर्तन मंगा लिये॥
और देखते ही देखते सारे भरा लिए।
लुटिया में फिर भी दुध बराबर भरा रहा॥
इस बात पर गुरू को ताज्जुब था आ रहा।
लड़के भी देखते थे तमाशा खड़े हुए॥
यक जा ये सुन के गांव के छोटे बड़े हुए।
देखा सभों ने दूध से बर्तन भरे सभी॥
लुटिया मदन की दूध से खाली नहीं हुई।
आखें खुली गुरू की ये अहवाल देखकर॥
लुटिया पै डाली एक तअज्जुब भरी नज़र।
आसीर्वाद देके मदन से किया कलाम॥
लुटिया बड़े कमाल की तेरी है ला कलाम।
लेकिन बता ये दूध तू लाया कहाँ से है॥
लज्ज़त है जिसमें ऐसी कि बाहर बयां से है।
जिस दम मदन ने दूध का सब माजरा कहा॥



"बांके बिहारी" का भी क्यों हाल कर दिया।
झुक कर मदन के सामने गोया गुरू हुआ॥
बांके बिहारी से मुझे अब जल्द तू मिला!
उसके मिले बगैर मुझे चैन अब कहां॥
रो-रो के दोनों आंखें बना दूंगा नदियां।
लेकर मदन गुरू को सुवे दस्त चल पड़ा॥
बांके बिहारी, बांके बिहारी, पुकारता।
बांके बिहारी, करके कृपा आओ अब ज़रा॥
इस बात पर मदन की ये बन से हुई सदा।
क्यों टेरता है कोई झमेला तो अब नहीं॥
है साथ में गुरू भी अकेला तो अब नहीं।
बोला मदन कि भैया जी जल्द आप आइये॥
मेरे गुरू को प्रेम से दर्शन दिखाइये॥
बांके बिहारी बोले, न कह ऐसा रख यकीं।
अभिमानियों को देता मैं दर्शन कभी नहीं॥
बोला मदन, न हमसे बहाने बनाइये।
दर्शन के वादे को मेरे भैय्या निभाइये॥
सुनकर सदा मदन की बिहारी जी आ गये।
दर्शन से शाद काम गुरू को बना गये॥

(लेखक—श्रीयुत "शौख जी" देहलवी)



❀ राग मालकौश ताल तीन ❀

जगत में स्वारथ के सब मीत ।
जब लगि जासौं रहत स्वार्थ कछु, तब लगि तासौं प्रीत ॥
मात-पिता जेहि सुतहित निस-दिन, सहत कष्ट-समुदाई ।
वृद्ध भये स्वारथ जब नास्यो, सोइ सुत मृत्यु मनाई ॥
भोग जोग जबलौं जुवती स्त्री, तबलौं अतिही पियारी ।
विधिवस सोइ जदि भई व्याधिवस, तुरत चहत तेहि मारी ॥
प्रियतम, प्राननाथ कहि कहि जो अतुलित प्रीति दिखावत ।
सोइ नारी रचि आन पुरुष सँग, पतिकी मृत्यु मनावत ॥
कल नहिं परत मित्र बिनु छिनभर संग रहे सँग खाये ।
बिनस्यो धन स्वारथ जब छूट्यो मुख बतरात लजाये ॥
साँचो सुहृद, अकारन प्रेमी, राम एक जग माँहीं ।
तेहि सँग जोरहु प्रीति 'निरंतर" जग कोउ अपनो नाहीं ॥

❀ २०-गरीब की लड़की ललिता ❀

उम्र गुज़ारती थी रोने वो चिल्लाने में ।
ग़रीब पैदा ही क्यों कर दिया जमाने में ॥

धनियों के वास्ते जो धन ही मददगार है ।
तो बेकसों का आप प्रभु ग़मगुसार है ॥
किस्मत को अपनी रो रहे इक दिन ग़रीब थे,
भगवान से फर्याद करते बदनसीब थे ॥



आह की प्रभु के दिल में जो रसाई हो गई,
धनवान घर में 'ललता' की सगाई हो गई।
कुछ दिन ठहर के व्याह ही लड़की का रचा दिया,
घर का सरो सामान शादी पर लगा दिया।
छुटकारा मिला गम से आज इन गरीबों को,
असली खुशी नसीब हुई बदनसीबों को।
डोली में डाल ललता को घर ले गये ससुर,
ललता का पति 'मोहन' न पहुंचा था अपने घर।
मजबूरी पर वह अपनी बहुत ही हैरान था,
बी० ए० का उस ने देना जाके इम्तहान था
ललता जभी ससुराल में अकेली घर गई,
देखो गरीब लड़की की बदकिस्मती नई।
पूछा यह सास ने अपने पति महाराज से,
मुझको बताओ लाई बहू क्या है दाज में।
कुछ भी नहीं है, चार कपड़े हैं दहेज के,
ललता के ससुर ने यह कहा मुंह को फेरके।
सुनते ही सास गुस्से से भरपूर हो गई,
सारी मुहब्बत एक दम काफूर हो गई।
'ललता' की तो तकदीर में लिखा न प्यार था,
हाय गरीब लड़की पर यह अत्याचार था॥

मासूम को देखो तो बुलाया न किसी ने,
रोती हुई को चुप भी कराया न किसी ने।
उल्टा दिल उसका तानों से हाय जलाते थे,
भूखों के घर से आई यह भूखी सुनाते थे।
पहिले ही दिन यह हाल जो देखा गरीब ने
रोकर कहा भगवानसे उस बदनसीब ने॥ गरीब पैदा
दिल हाए उस गरीब का बरबाद कर दिया,
आते ही उस बेचारी को नाशाद कर दिया।
कोई भी न था उसको बुलाता जबान से,
घर के सभी उस अबला पै ना मेहरबान थे।
कैसे गरीबी ने था उस उल्फत को उड़ाया,
दिन रात सास ने बहू रानी को सताया।
न प्यार से कोई उसे रोटी खिलाता था,
नफरत पराई जाई से हर इक जताता था।
कुछ दिन के बाद घर में वह मोहन भी आ गया,
'ललता' के चेहरे पर नया इक रंग छा गया।
आते ही मां और बाप ने सब कुछ सिखा दिया,
बेकस बेचारी पर इक और जुल्म ढा दिया।
मां ने कहा ऐ बेटा बुरे दिन ही आए हैं,
जो इस कमीनी बहूको ब्याहके घरमें लाए हैं॥



जब से यह आई घर में दुहाई मचाई है,
हर रोज मेरे घर में तो होती लड़ाई है।
इक धेला भी दहेज न मैके से लाई है,
ऐसे गरीब घर की क्यों लड़की ब्याही है।
कहती हूँ मैं तुम्हें न इसे मुंह को लगाना,
इस बेहया चुड़ेल की बातों में न आना।
बातें बना के बेटे को मां ने कहीं कई,
दर्वाजे से लगी सभी 'ललता' ने सुन लई।
और रो रही थी दिलमें बेचारी वह ज़ार ज़ार,
अपनी गरीबी देख के कहती थी बार बार॥ गरीब पैदा
मोहन यह मां से सीख कर कमरे में जब गया,
'ललता' को रोते देख दिल में सोचने लगा।
न जाने क्या बेचारी ने तकलीफ पाई है,
सुख से न बीती एक घड़ी जब से ब्याही है॥
शादी के बाद मिलने का पहिला ही दिन था आज,
आया था अपने घर में यह 'ललता' के सिर का ताज।
मोहन ने पास बैठ के पूछा सभी अहवाल,
यह भी कहा क्यों चेहरा तुम्हारा है पुरमलाल।
किस किस्म की तकलीफ बताओ ये प्यारी है,
होगा वही ऐ 'ललता'! जो मर्जी तुम्हारी है।

ढाढस हुई जो लफ्ज सुने पति के प्यार के,
चरणों में गिरी पती के कहती पुकारके ॥ गरीब पैदा
हालत वह अपने दिल की अभी कहने थी लगी,
कि सास फौरन 'ललता' की अन्दर ही आगई।
बाजू पकड़ के बेटे का बाहर को ले गई,
और जाती हुई ललता को इतना वह कह गई।
मक्कार देखो किस तरह आंसू बहाती है,
मेरे मोहन के उल्टे शगुन ही मनाती है।
रोना है तो जा रोवो अपने माई बाप को,
या रोवो अपने भाई को या अपने आप को॥
रोने के लिए क्या तुझे मैं घर में लाई थी,
हाय कंगाल घर की क्यों बेटी ब्याही थी।
'मोहन' ने बातें मां की यह तीखी सुनी सभी,
लेकिन कहा जुबान से ना एक हर्फ भी॥
खामोश होके मां के साथ बाहर आ गया,
देखो गरीब लड़की का क्या हशॅ हो रहा।
रोई वह फूट फूट कर यह चाल देख कर,
कहने लगी बेचारी ऐसा हाल देख कर॥ गरीब पैदा
न जाने मां ने बेटे को क्या क्या सिखा दिया,
जब तक रहा न 'ललता' को मिलने कभी दिया॥

ललता बेचारी रो के उमर थी गुजारती,
मोहन की खातिर थी घरके ताने सहारती ॥
बैठी थी इस उमीद पर वह दिन भी आएगा,
मेरा पती भी प्रेम से मुझको बुलाएगा।
ललता बेचारी का न कोई भी कसूर था,
लेकिन ग़रीबी का तो उसे गम जरूर था ॥
बेकस की पेश कोई भी उस घर में न चली,
दिन रात दिलमें रोके वह कहती थी बस यही ॥ गरीब पैदा
मिलता न था पर जानता मोहन था वारदात,
ललता के रोने की न छिपी उससे कोई बात।
ललता के गम ने मोहन को बीमार कर दिया,
करके बेहाल चलने से लाचार कर दिया।
तक़दीर बुरी ललता की चारा न कुछ चला,
ललता के गममें एक दिन मोहन भी चल बसा।
अब कौन उस गरीब का घर में था रह गया,
देता जो उस बेचारी को थोड़ा भी हौसला ॥
सास और ससुर यह कहते लोगों से बरमला,
ललता चुड़ेल ने मेरा मोहन है खा लिया।
इस बेहया को मौत भी हाय न आती है,
देखो ग़रीबी दुर्दशा कैसी कराती है ॥

ललता ने सास के जो सुने कड़वे यह अल्फ़ाज,
उस दर्द भरे दिलसे भी निकली यही आवाज़ ।
उस दिन के बाद कोई न उसको बुलाता था,
भूखी को कोई भी नहीं खाना खिलाता था ॥
आपस में बैठे सास ससुर एक दिन कहा,
जैसे भी होवे कर दें इस ललता का खा़तमा ।
यह सोच ज़हर खाने में उसको मिला दिया,
उस भोली भाली ललताको खाना खिला दिया ॥
जब खाना खाए एक घड़ी उसको हो गई,
उस जहर के असर से वह बेहोश सो गई ।
वह फट गया बदन व रंग नीला पड़ गया,
उन फड़कते लबों से बस आती थी यह सदा ॥ गरीबपैदा
रहता पड़ोस में था अकलमंद डाक्टर,
पहुँचा वह खबर पाते ही जल्दी से उनके घर ।
नबज ने डाक्टर को असलियत ही बता दी,
थाने में डाक्टर ने रपट जाके लिखा दी ॥
लेकर सिपाही फौरन थानेदार आ गया,
मोहन का बाप देखते ही बस घबरा गया ।
सर पीट करके सास ने पती से यह कहा,
हो जाएगा पल भर में अब बेड़ा मेरा तबाह ॥



ललता को ज़हर दे दी है वह मर ही जायगी,
हमको भी सज़ा फांसी की अब हो ही जायगी।
आया जो थानेदार अब लिखने ब्यान को,
ललता ने फिर कहा देके हरकत ज़बान को ॥
संसार में सुहाग जब मेरा नहीं रहा,
तुम ही बताओ मुझको क्या जीने से फ़ायदा।
तकलीफ़ मुझे यह न किसी ने पहुँचाई है,
मरने को मैंने आप ही यह ज़हर खाई है ॥
देखो ग़रीब लड़की की इतनी उदारता,
कि ज़हर देने वालों का न नाम तक लिया।
एहसान 'चमन' मरते वक़्त उन पे कर गई,
अबला विचारी यह ही कहते कहते मर गई ॥
ग़रीब पैदा ही क्यों कर दिये ज़माने में ॥

(ले०—श्रद्धेय श्रीयुत चमन जी पञ्जाब)

* पांचवाँ भाग *

❀ गो महात्मय ❀

अग्रतः सन्तु मे गावो, गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मेहृदये सन्तु, गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

सर्वेषा मेव भूतानां, गावः शरण मुत्तमम् ।
गावः स्वर्गस्य सोपानां, गावो माङ्गल्य मुत्तमम् ॥
गावः पवित्रं परमं, गावो धन्याः सनातनाः ।
नमो गोभ्य श्री मतीभ्यः सौरमेयोभ्य एव च ॥
नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्योः नमो नमः ।

❀ उपालम्भ ❀

(रचयिता—पं० श्रीसीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य)

गौएँ ही बचेंगी न तो आके बृज-बीच कान्ह !
बाँसुरी बजाके कैसे माखन चुराओगे ।
भक्त ही रहेंगे न जो भारत सुभूमिमें तो,
राम-रूप धार आँख किनकी जुड़ाओगे ।
प्रभो! दीनानाथ ! कब भारत-पयोधि-बीच,
पापिग्राह-ग्रस्त धर्म-गजको छुड़ाओगे ।
'होगा धर्मविप्लव तो लूँगा अवतार'—यह,
अपनी प्रतिज्ञा नाथ कब लौं पुराओगे ।

❀ हमेशा याद रक्खें ❀

दृग खोलके देखो तो क्या हाल हो रहा है ।
गोधन गवांके भारत पामाल हो रहा है ॥
जब जानते हैं हम सभी गोवंश जीवन मूल है ।
फिर भी सजग होते नहीं कैसी भयङ्कर भूल है ॥



अग्यानता बस जाति जो आदर्श अपना त्यागती ।
है सत्य यह संसार में रहती न जीती जागती ॥
गो मातु के आशीष से जब देश सुख संयुक्त था ।
दुर्भिक्ष हैज़ा प्लेग से भारत हमारा मुक्त था ॥
यता सहधर्मियों को नीच ममतायें हटा डाली ।
अभागे हिन्दुओं निज शक्तियाँ अपनी घटा डाली ॥
विधर्मी बन्धुओं को कर करोड़ो गौ कटा डाली ।
बनाई मन्दिरों पै मसजिद प्रतिमा पटा डाली ॥

❀ श्लोक ❀

गावो लक्ष्म्या सदा मूलं, गोषु यस्मा न विद्यते ।
गावो यश्यस्म नेत्रावै, तथा यश्यस्यता सुखम् ॥
गावो में अग्रतः शन्तु, गावो में संतु पृष्ठतः ।
गावो में हृदय सन्तु, गावो मध्ये वसाम्यहम् ॥

"धेनुसेवक"

॥ गौमहिमा वर्णन ॥

❀ २१—मैय्या मैं तुझ पर बलिहार ❀

माता तो दो चार साल ही दूध पिलाने पाती ।
पर आजन्म मनुज को तू गौमाता दूध पिलाती ॥

क्षमा, शीलता, दया, स्नेह की तू प्रतिमा साकार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(२)

तेरे ही सुत जग के हित उत्पन्न अन्न करते हैं।
करते अथक परिश्रम केवल घास फूस चरते हैं।
तिस पर खाते हैं अपने तन पर डंडों की मार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(३)

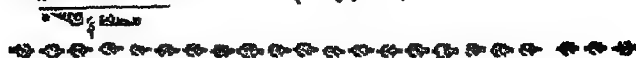
पंच गव्य के बिना मनुज कब स्वस्थ सबल पावन हो।
तेरे गोरस बिना निपट निःस्वाद सकल भोजन हो।
संस्कार उत्सव यज्ञादिक तुझ बिन सब निस्सार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(४)

वेदों ने भी परम पावनी तू अघ्न्या बतलाई।
तुझे चराते फिरे प्रेम से बन जन कृष्ण कन्हाई।
नृप दलीप, पाण्डव, विराट थे तेरे भक्त अपार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(५)

तेरे भक्त अनेकों हैं मुस्लिम, अंग्रेज ईसाई।
दयानन्द ऋषि, गांधी ने तेरी गुण गरिमा गाई।



कोटि, कोटि हिन्दू जन करते तेरी जय जय कार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(६)

महावीर स्वामी, गौतम, प्रणवीर प्रताप, शिवाजी,
करते रहे सदा गो रक्षा लगा जान की बाजी।
नानक गुरुगोविन्द हृदय में था तेरे प्रति प्यार,
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(७)

सन् सत्तावन में तेरे हित कितने मरे सिपाही।
तेरी रक्षा हित झांसी की रानी लक्ष्मीबाई।
गौ बधिकों पर टूट पड़ी थी ले करमें तलवार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(८)

करें स्नेह श्रद्धा से भारतवासी पालन तेरा।
हो धन धान्य अमित उखड़े भय रोग शोक का डेरा।
यत्र, तत्र, सर्वत्र शान्ति सुख का होवे संचार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(९)

तेरी महिमा का वर्णन किस विधि 'प्रकाश' कर पाये।
अनन्त विस्तृत सागर, गागर में किस भांति समाये।



इस मानव मण्डल पर तेरे हैं अगणित उपकार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

(१०)

मैं मन वचन कर्म से सेवा तेरी सदा करूंगा।
तेरे लिये जिऊँगा माता तेरे लिये मरूंगा।
तेरा नाश न होने दूंगा लिया यही व्रत धार।
मैय्या मैं तुझ पर बलिहार।

❀ २२—होजाओ तय्यार ❀

गोरचा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार (टेक)
चेतो बहुत समय है बीता तुमको सोते सोते।
तेजी से हो रहा नष्ट गौवंश तुम्हारे होते।
राम कृष्ण की सन्तति तुम हो कुछ तो करो विचार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार॥ १॥
सच जानों गोवंश मरण में भारतवर्ष मरण है,
गऊओं के जीवन पर निर्भर भारत का जीवन है।
गऊओं के रक्षण में ही है भारत का उद्धार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार॥ २॥
गोसेवा का हुमायूं ने अकबर को ध्यान दिलाया,
दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' में महत्व बतालाया।



गांधी जी के भी उर में था गऊओं के प्रति प्या
गौरक्षा के लिये बन्धुओं हो जाओ तैयार ॥ ३ ।
अचरज तो यह है जो गौ का दुग्ध पान करते हैं,
वही कृतघ्नी गौ की गर्दन पर कुठार धरते हैं।
है धिक्कार उन्हें अपने जीने का क्या अधिकार,
गोरक्षा के लिए बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ४ ॥
चले गये अंग्रेज छोड़कर ममता निज सत्ता की,
अनुयायी उनके काले अंग्रेज अभी हैं बाकी।
करा रहे हैं ये भारत में गऊओं का सँहार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ५ ॥
भारत में रहते हो तो गौ हत्या से मुंह मोड़ो,
वर्ना अंग्रेजों के सदृश तुम भी भारत छोड़ो।
गोहत्या के समर्थकों से कह दो यह ललकार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ५ ॥
गोरक्षा के समर्थकों की है अब संख्या भारी,
हुआ स्वदेशी राज, रहे फिर क्यों गोहत्या जारी।
बन्द करे अब इस अनर्थ को भारत की सरकार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ७ ॥
तन मन धन से सेवा रक्षा करो गाय जननी की,
शुद्ध दूध घृत मिले खपत फिरहो न बनस्पति घी की।

हो सब स्वस्थ निरोग भरे धन से भारत भण्डार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ८ ॥
ठौर ठौर पर पशुओं के चरने को धरती छोड़ो,
हो जिस से गोवंश वृधि वह समुचित साधन जोड़ो।
बन्द करो गोमांस हड्डियां चमड़े का व्यापार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ ९ ॥
गोरक्षिणी सभा नगरों में ग्राम ग्राम में खोलो,
दूध पान कर स्वस्थ्य रहो, गो माता की जय बोलो।
करो "प्रकाश" गाय की सेवा देश विदेश प्रचार,
गोरक्षा के लिये बन्धुओ हो जाओ तैयार ॥ १० ॥

सङ्गीत कलानिधि (कविरत्न) प्रकाशचन्द्र जी आर्य्य अजमेर

❀ दूध का सालाना खपत १ मनुष्य पर ❀

देश	मन	सेर
फीनलैन्ड	१०	९
स्वीजरलैन्ड	८	३२
स्वीडन	७	२८
नारवे	७	१०
कनाड़ा	६	१६
जेकोस्लोवेकिया	५	१९
अस्ट्रेलिया	५	२५



देश	मन	सेर
न्यूज़ीलैन्ड	४	२८
इङ्गलैन्ड	३	३३
जर्मनी	३	१५
फ्रान्स	३	५
डेन मार्क	२	३
भारतवर्ष	१	४

जो बड़े आदमियों और होटल वालों से नहीं बचता निर्धनों को कौन पूंछे सिवाय प्रभू के।

❀ इसलिये ❀

दो० निर्धन को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की श्वाँस सो, सार भष्म हो जाय॥

❀ बिना ताज की महारानी ❀

(१)

जब से गो की सेवा पूजा आदर जप का लोप हुआ।
बस तब से ही इस भारत में अभिशापों का कोप हुआ।
बना देश उन्नति से बंचित, अवनति का आरोप हुआ।
हा! आदर्श पुजारी भारत, आडम्बर प्रिय पोप हुआ॥

(२)

जहाँ दूध की धार बही थी, वहाँ दूध का नाम नहीं।
ये हालत है, खाने को यदि सुबह मिला तो शाम नहीं।

क्या निर्धन क्या धनी, किसी को जीवन में आराम नहीं।
कहीं दाम तो वस्तु नहीं है, कहीं वस्तु तो दाम नहीं ॥

(३)

अमृत सा गो दुग्ध मिटा, बिकता डब्बों का दूध यहां।
टेबिल बटर यहां मिलता है, भारत का नवनीत कहां।
माखन मिसरी खाने वाले बच्चे २ रहे जहां।
जहां दूध बेदाम बटा था मिल्क पाउडर लखा वहां॥

(४)

नई विपति इस वनस्पति की भारत भू पर आई हरे।
शाशन को क्या चिन्ता, जनता इससे जीवे और मरे।
यहां भले गोकुल नश जावे, वहां तिजोरी खूब भरे।
तुम बिन प्रभु इन षड्यंत्रों से, गो की रक्षा कौन करे ॥

(५)

शत प्रतिशत भारत का जीवन, गोमाता पर निर्भर है।
गो को खो कर दुख दर्दों से तरना भी तो दुस्तर है।
उत्पादन के सफल स्रोत गो-मूत्र हड्डियां गोबर है।
बिना ताज की महरानी गो आज दुखों से जर्जर है॥



२४ स्वर्ण-भूमि श्मशान बन जायगी

(लेखक—कविवर मैथिली शरण गुप्त)



दांतों तले तृण दाब कर हैं दीन गायें कह रहीं,
हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही।
हमने तुम्हें मां की तरह है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें तुमने हमारा बध किया॥
क्या बस हमारा है भला हम दीन हैं बल हीन हैं,
मारो कि पालो कुछ करो-हम तो सदा आधीन हैं।
प्रभु के यहां से भी कदाचित आज हम असहाय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहें बस हम तुम्हारी गाय हैं॥
जारी रहा यदि क्रम यहाँ यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पायगी,
यह स्वर्ण भारतभूमि बस मरघट मही बन जायगी॥

॥ गोवध महापाप है ॥

कृपया—इसे भी पढ़ लीजिये !

अमेरिका के संयुक्त राज्य में विशेषतः टेकसस प्रदेश के लिपिङ्गस्टन कौंटी में एक गोपालक के आधीन ८ मील लम्बी

८ मील चौड़ी गोचर भूमि है इस गोपालक के पास ३२ डेरी है। हरेक डेरी फार्म में एक कप्तान दो लेफ्टिनेन्ट और उन पर एक कमान्डर इन चीफ नियत है।

केवल इतना ही नही। इस प्रदेश के प्रसिद्ध गोपालको के पास सन् १६१८ मे इस प्रकार गौएं थीं।

(१) मि० हिट्सन ५०००० (पचास हजार)
(२) जानचिल्स ३००००
(३) कार्गनस एण्ड पार्की २००००
(४) जेम्स ब्राजन १५०००
(५) परार्ट स्लान १२०००
(६) चिफविवर्प १००००
(७) मार्टिंग चाइल्डर्स १००००
(८) विलियम हिट्सन ८०००
(६) जानसन ८०००
(१०) जार्ज विवर्स ६०००

❀ ३ जून १६५१ ई० दिन इतवार प्रकाशित ❀
❀ २५-भारत सप्ताहिक इलाहाबाद से ❀

कौटिल्य के शास्त्रानुसार ईसा से ४०० वर्ष पहले		
गुप्तकाल	संक्षेप मे विवरण	
चावल	४ आने में	१ मन

दाल	४ आने में	१ मन
तेल सरसों	८ ,,	१ ,,
घृत शुद्ध	१२ ,,	१ ,,
गेहूँ	१ रू० में	१ ,,
नमक	६ पैसे में	१ ,,
शक्कर	१० आने में	१ ,,
वस्त्र	४ ,,	५ थान

कृपया और वस्तुओं का आप इसी तरह मुल्य स्वयंम लगालें

मुहम्मद तुग़लक के समय में (इब्नबतूता की जुबानी)

चावल ।) ।।। मन महीन सूती कपड़ा ३) रू० में ६५ बे गज

तिलकातेल ।।≈) मन

घी शुद्ध १≡) मन

❀ अकबर के समय में १६ वीं शताब्दी ❀

❀ अकबर आइनी से ❀

नं० १ चावल ।।≡) मन

नं० २ ,, ।।=) मन

दाल ।।।) मन

नमक ।।) मन

खांड ४।।≈) मन इत्यादि

❀ औरङ्गजेब के समय में सम्बत १७२६ ❀

चावल	नं० १	१)	रू० में	१ मन	१० सेर	
,,	नं० २	१)	,,	१ ,,	२० ,,	
तेल	नं० १	१)	,,	० ,,	२१ ,,	
,,	नं० २	१)	,,	० ,,	२४ ,,	
घी शुद्ध	नं० १	१)	,,	० ,,	१०॥ ,,	
,,	नं० २	१)	,,	० ,,	१३ ,,	इत्यादि

बृटेन की प्रथम १८१० ई० के समय में

चावल नं० १	१।) मन
चावल नं० २	१) ,,
दाल	१॥) ,,
आटा	२) ,,
तेल सरसों	=) आ० सेर
घी शुद्ध	।≡) आ० सेर इत्यादि

सन् १६२६ ई० से सन् १६३६ तक

चावल ४॥) मन	कोयला
दाल ५) ,,	लकड़ी १॥ मन
शक्कर १२॥) ,,	धोती नं० १--२) जोड़ा
घी ५०) ,,	दूध =) सेर
कोयला ॥=) ,,	१६३६ ई० में गेहूं २॥) मन
पत्थर	१६४० ,, ,, ,, ३) ,,
	१६४१ ,, ,, ,, ३॥) ,,

अब—मिडिल मे होके फेल, वो मिडिल ही में भटकते हैं।
न इधर के हैं, न उधर के हैं, बस इन्टर मे लटकते हैं॥

"व्याकुल"



॥ छठाँ भाग ॥

❀ रागिनी जै जै वन्ती ताल तीन ❀

आली मोरे नैनन बान पड़ी ।
चित्त चढ़ी वह माधुरी मूरत हिय बिच आन अड़ी ।
लोग कहे मीरा भई है बावरी सासु कहे बिगड़ी ॥
कैसे प्रान पिया बिनु राखूँ जीवन मूर जड़ी ।
मीरा के मन गिरधर नागर पल छिन घड़ी घड़ी ॥

❀ २६–मोहन की मतवाली मीरा ❀

दो०–विघ्न बिनाशक गणपते, पूरी होवे आस ।
हमें सुनाना आज है, कुछ मीरा का इतिहास ॥
पतिब्रता धर्मात्मा, सर्व गुणन की खान ।
रक्षा करते थे सदा स्वयं, कृष्ण भगवान् ॥
मेवाड़ देश के राना की मीरा जो उनकी रानी थी ।
भगवान की सच्ची सेवकनी प्रभु सेवा में दीवानी थी ॥
मन मोहन मुरली वाले की वो भाव से पूजा करती थी ।
भगवान ही उसके सब कुछ थे किसी और की आस न रखतीथी
मीरा मस्ती में आकर के आंसू भी बहाया करती थी ।
उत्तम पदार्थ बना श्रद्धा से वो भोग लगाया करती थी ॥

मीरा मन्दिर में बैठी रह शृङ्गार सजाया करती थी।
एक तारा सुन्दर हाथ में ले ईश्वर गुण गाया करती थी॥
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई॥
भाई छोड़या बन्धु छोड़या छोड़या सगा सोई।
साधुन संग बैठि बैठि लोक-लाज खोई॥
भगत देखि राजी भई जगत देख रोई।
अंसुवन जल सींच २ प्रेम--बेल बोई॥
दधि मथि घृत काढ़ि लियो डार दई छोई।
राणा विष को प्याला भेजो पीय मगन होइ॥
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई।
"मीरा" प्रभू लगन लागी होनी होय सो होई॥

❀ इधर ❀

दो०—जहां भी रानी बैठते, करते थे ये जिक्र।
किसी तरह मीरा मरे, यही थी उनको फ़िक्र॥
यूं तो उन्होंने दिये थे, मीरा को बहु कष्ट।
पर ईश्वर की कृपा से, हुये सभी थे नष्ट॥
आखिर मीरा से कहा, राना ने सब हाल।
भाव भक्ति का छोड़ दो, अपने दिल से ख्याल॥



* परन्तु *

मीरा ने कहा कि ऐ राना मुझे आशा है गिरवर धारी का।
तूम भी अब मन से भजन करो मनमोहन मदन मुरारी का॥
राना ने कहा क्यों ? तब मीरा ने कहा—
गिरधर गोपाल की सेवा में जीवन गर कहीं बिताओगे।
यह निश्चय याद रहे राना भव सागर से तर जाओगे॥
मीरा की बातें सुन राना गुस्से में वो बेचैन हुये।
क्रोधित होकर के चले गये और रक्त वर्ण दो नैन हुये॥
अपनी माता और मीरा से छुपकर षड़यन्त्र रचाया है।
बाहर जाकर एक योगी से ज़हरीला सर्प मंगाया है॥

दोहा—राना सर्प मंगाय कर, बहुत हुये आनन्द।
सोने की एक पिटारी में, सर्प किया है बन्द॥
मन में यूं कहने लगे, अब छोड़ेगी ध्यान।
काटेगा जब सर्प तो, निकल जायगा प्रान॥

वार्ता-परन्तु राणाको ये मालुम नहीं कि मीरा और मोहन एक है

❀ मीरा और मोहन ❀

(रचयिता - काव्यरत्न "प्रेमी" विशारद भीण्डर)

(१)

मीराके मन्दिर आवते मोहन, मोहन-मन्दिर जावती मीरा।
मीराका रीझता मोहन से मन, मोहनको सु रिझावती मीरा॥

मीराको थे उर लावते मोहन, मोहनको उर लावती मीरा।
मीराके थे मन भावते मोहन, मोहनके मन भावती मीरा॥

(२)

मोहनकी बजती मुरली पग-घूंघरू थी घमकावती मीरा।
देखने दौड़ते मोहन थे वह मंजुल नाच दिखावती मीरा॥
कान दे मोहन थे सुनते वह जो कुछ बावरी गावती मीरा।
जाते समा कभी मीरामें मोहन, मोहनमें थी समावती मीरा॥

(३)

मीराको मोहन ही थें क़बूल औ मोहनको भी क़बूल थी मीरा
आते उड़े हुए तूलसे मोहन, जाती उड़ी हुई तूल थी मीरा॥
सौरभ-रंजित मोहन, थे चरणों पै चढ़ी वह फूल थी मीरा।
मीरा बिना किसे मोहते मोहन, मोहनके बिन धूल थी मीरा॥

❀ इधर मीरा प्रेम में मगन होकर गाती है— ❀

❀ राग बहार ताल तीन ❀

मैं तो गिरधर आगे नाचूंगी।
नाच नाच के पीव रिझाऊं प्रेमी जन को जाचूंगी। मैं।
प्रेम प्रीति के बांध घोलना सुरत की कछनी काछूंगी॥ मैं॥
लोक लाज कुलकी मर्य्यादा या मैं एक न राखूंगी। मैं।
पीवके पलङ्ग जा पौढूंगी "मीरा" हर रङ्ग राचूंगी॥ मैं॥
अथवा—मैं तो गिरिधर के घर जाऊं।
गिरिधर म्हांरो सांचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊं॥



रैन पड़े तबही उठि धाऊं भोर भये उठि आऊं ।
रैन दिना वाके संग खेलूं, ज्यों त्यों ताहि लुभाऊं ॥
जो पहिरावै सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं ।
मेरी उनकी प्रीत पुरानी, उन बिन पल न रहाऊं ॥
जहाँ बिठावै तित ही बैठूं बेचै तो बिक जाऊं ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, बार बार बलि जाऊं ॥

फ़ौरन दासी को बुलवाकर मीरा के यहाँ पहुंचाते हैं ।
जाते जाते उस दासी से सब भेद छुपा बतलाते हैं ॥
दासी से कहा जाकर कहना कि माताजी ने भिजवाया है ।
श्रीठाकुर जी की मूरत है इसलिए यहां पहुँचाया है ॥
माता जी ने जो भेजा है अद्भुत इनकी सूरत होगी ।
मुझको मालूम ये होता है मन मोहन की मूरत होगी ॥
माता जी का जब नाम सुना तो पहले तो धन्यवाद दिया, ।
अपने आराध्य देव को भी पहले ही उसने याद किया ॥
मीरा मन्दिर में जाकर के खोली वो जभी पिटारी है ।
अपनी आँखों से देख रही बैठा श्रीकृष्ण मुरारी है ॥

* इसलिए *

होता न सगुण रूप तो संसार न होता ।
गुल होते नहीं खुशबू का इज़हार न होता ॥
ज़ो बाग़ जहाँ में नज़र आते हैं हर एक रंग ।
साकार न होता तो निराकार न होता ॥



किसका हो ध्यान स्मरण और योग समाधी ।
हर शय के कमो वेश का मिक़दार न होता ॥
जो है नहीं प्रत्यक्ष तो उसका प्रमाण क्या ।
होती न धूप साया का आधार न होता ॥
होती न अगर चोट के सहने को जिगर ये ।
हरगिज़ निशाने बाजों का फिर वार न होता ॥
होता न मज़ाजी तो फिर आता हक़ीक़ी क्यूं ।
दिल ही जो न होता तो कभी प्यार न होता ॥
संसार जब "व्याकुल" हुआ केशव तभी आये,
भूः भार न होता तो ये अवतार न होता ॥

❀ सहधर्मिणी ❀

तुम-सा न दूजा कोई मनुजका साथी सगा,
दुखमें प्रशान्ति देनेवाली सुखखान हो ।
प्रीति उपजाने में हो रंभाकी स्वरूप तुम,
क्षमा करने में प्रिये ! अवनि समान हो ॥
भोजन कराते समय माता-सी मधुरमयी,
मानने को आज्ञा दासी चतुर सुजान हो ।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष मिलते तुम्हीं से "रमा"
देने में सलाह मित्र मंत्री गुणवान हो ॥



स्वच्छ रखती है घर-द्वारको बुहार सदा,
धान कूट लेती औ चाकी भी चलाती है।
सूत कातती है और माखन बिलोती घर,
भोजन विशुद्ध निज हाथ से बनाती है॥
करती सिलाई है, लड़ाती लाड़ लाड़ले को,
पाठ करती है, निज पतिको जिमाती है।
आय और व्ययका हिसाब लिखती है हरि,
गाथा सुनती है पुण्यजीवन बिताती है॥

❀ अधर्मिणी ❀

पढ़े अखबार, है सिगार का उड़ाती धुआँ,
करती सिंगार भी पामेड पाउडर से।
क्लब और सिनेमा जाती पर-पुरुषोंके साथ,
दाई पर बच्चों का उतार भार सरसे॥
पति से मँगाती जल, खाती खुद होटल में,
वक्तृता सुनाती पुरुषों को तार स्वरसे।
मित्रों संग घूमती है, जाती चायपार्टियों में,
आती हैं बाज़ार में निकलकर घर से॥

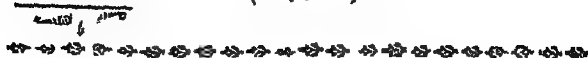
❀ राग सारङ्ग तालतीन ❀

ऊधौ! मन माने की बात।
दाख छोहारा छांड़ि अमृत फल बिषकीरा विष खात॥ ऊधो०॥

जो चकोर को दै कपूर कोउ तजि अङ्गार अघात।
मधुप करत घर कोरि काठमें बंधत कमल के पात॥ ऊधो०॥
ज्यों पतंग हित जान आपनो दीपकसो लपटात।
सूरदास जाको मन जासों ताको सोई सुहात॥

❋ २७—वीर ब्राह्मण कालाचन्द ❋
❋ या महमूद गज़नवी ❋

दो०—राजा था बंगाल का, सुलेमान बलवान।
राजनीति में दक्ष था, सब प्रकार गुणवान॥
राज काज में था वहाँ, मालिक कालाचन्द।
था प्रजा भक्त और हरी भक्त, रहता था निर्द्वन्द॥
लाखों वीरों में वही, था एक चतुर सुजान।
करता रहता था सदा, ईश्वर का गुणगान॥
गोरा शरीर आँखे थी बड़ी कमसिनों का खेल खिलौना था।
औतार था कामदेव का वो वह सुन्दर सुघर सलोना था॥
महलों के पीछे से ही सदा महानन्दा जाया करता था।
स्नान पाठ पूजा करके फिर लौट के आया करता था॥
थी खड़ी कोठे पै शहज़ादी अड़ी।
नज़र अब उस पर अचानक जा पड़ी॥
देखते ही होश से बेहोस थी।
बोल सकती थी नहीं खामोश थी॥



तब कहा सखियों ने क्यों ग़मगीन हो।
ग़म में किसके अब यहाँ लवलीन हो॥
टकटकी किस पर लगी है आपकी।
आपने फिर क्यों यहाँ सन्ताप की॥
राज दिलका अब यहाँ पर खोलिये।
मेरी प्यारी बात जोहो बोलिये॥
शाहज़ादी ने कहा लाचार हूं।
जीने से तो मैं बड़ी बेज़ार हूं॥
एक हिन्दूपति को पति मैं मानली।
प्यारे कालाचन्द को शौहर जानली॥
शादी हो या क्वाँरी ही रह जाऊँगी।
ग़म में कालाचन्द के मर जाऊँगी॥
ऐ सखी कहना मेरे माँ बाप से।
मिट न जायें हम कहीं सन्ताप से॥
तब रहूँगी मैं सदा आनन्द से।
शादी करदेवें वो कालाचन्द से॥

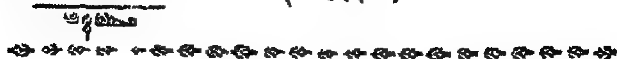
दो०—मौक़ा पाकर सखी सब, बेगम के ढिग जाय।
शहज़ादी के हृदय की, बात कही समझाय॥
बेगम ने भी तुरत ही, राजा के ढिग जाय।
शादी के पैग़ाम को, दिया जाय पहुँचाय॥

तब सुलेमान ने कहा प्रिये मुस्लिम उसको बनना होगा ।
जिस तरह से भी हो सके उसे इस्लाम कबूल करना होगा ॥
बोली बेगम ये जिद्द न करो ये हमें तुम्हें नहिं लाजिम हैं ।
वह हिन्दू ही यहां बना रहे पर शादी करना लाज़िम है ॥
मशवरे के वास्ते बुलवा लिया ।
पास कालाचन्द को बिठला लिया ॥
तब कहा मेरे घर की आबादी करो ।
शाहज़ादी से तो तुम शादी करो ॥
प्रार्थना है मुस्लमां हो जाइये ।
छोड़ने से धर्म न घबराइये ॥
दो०—कालाचन्द ने जब सुना, किया साफ़ इनकार ।
ब्राह्मण हूँ मैं जाति का, मुझे नहीं स्वीकार ॥
जब किया इन्कार ब्राह्मण वंश ने ।
करदी जागृत पुर्वजों की अंशने ॥ तब ॥
गुस्से से सुलेमान ने जल्लाद बुलाया ।
जब आगये जल्लाद तब ये हुक्म सुनाया ॥
शूली की सज़ा होगी पहिले जेल ले जावो ।
तारीख़ पर ले जाकर इसे शूली चढ़ावो ॥
माना नहीं फ़र्मान ये इसको बताओ ।
इस हुक्म अदूली का इसे लुत्फ चखाओ ॥



दो०-शहजादी ने जब सुना, सत्य सत्य सब हाल।
गिरफ्तार ग़म में हुई, हाल हुआ बेहाल॥
महलों से आई वो घबराई हुई।
आंख नीची थी वो शरमाई हुई॥
तोड़ डाले सारे बन्धन आज सब।
दे दी अपनी इज्जत हुर्मत लाज सब॥
जकड़ा था जंजीरों से उसे जल्द छुड़ाया
माँगी क्षमा: कर जोड़कर और शीश झुकाया॥
और कहने लगी हे प्राणनाथ अपराध क्षमा करना होगा।
गर आप मुसलमां नहीं हुये तो हमें शुद्ध करना होगा॥
शंका न करो घर चुकी तुम्हें इमान नहीं जानें दूंगी।
जब तलक जान में जान रहे यह जान नहीं जाने दूंगी॥
दोनों व्यक्ती में प्रेम हुवा और विधना का ये खेल हुआ।
फिर सुलेमान और कालाचन्द शहज़ादी से भी मेल हुआ॥
शहज़ादी कालाचन्द के साथ जब शुद्धी को तैयार हुई।
हिन्दु हो जाऊंगी एकदम जब हृदय की ये झंकार हुई॥
तब कालाचन्दने पन्डितों से ये बार बार इसरार किया।
तब भारत के कुछ विद्वानोंने साफ साफ इन्कार किया। और
और कहा कि कालाचन्द अगर जो ज़रा भी नाता जोड़ेगा।
हिन्दू समाज ठुकरा करके वह बिलकुल नाता तोड़ेगा॥

दो०-सुना है कालाचन्द ने, पन्डितों का फरमान ।
उसी समय उसने किया, अपना भी ऐलान ॥
ऐसे धर्मों से हमें ग्लानी हुई ।
हिन्दू धर्मों की सदा हानी हुई ॥
अब मुस्लमां भी तो मैं हो जाऊंगा ।
हिन्दुओं की हस्तियां मिटवाऊंगा ॥
फिरतो सुन्नतभी वहां करवा लिया ।
अपना चोटी भी वहां कटवा लिया ॥
अपने हाथों का तो बल दिखलाऊंगा ।
ला इलाहइल लिल्लाह कलमा पढ़ लिया ॥
नाम महमूद ग़ज़नवी भी रख लिया ।
हिन्दुओं की जड़ को कटवाने लगा ॥
सोम के मन्दिर को तुड़वाने लगा ।
जो पूजा किया करता और जाता था शिवालों में ॥
वो मस्त और मग़रूर हुवा वह डूबा दूसरे ख्यालों में ।
वो बहुत बड़ी सेना लेकर देवालय सब तुड़वा डाले ॥
सैकड़ों, हज़ारों, लाखों, जान हिन्दुओं के वो मरवाडाले ॥
बड़े बड़े पन्डितों की, बुद्धि हुई थी भ्रष्ट ।
अपने हाथों किया था, हिन्दु जाति को नष्ट ॥
शुद्धी शहज़ादी का करते कालामहमूद नहीं बनता ।
आपस में न होते मार काट यह झगड़ा रार नहीं ठनता ॥



इस देश को मिल गद्दारों ने नकुओं ने नाक कटवा डाला।
भारत अखन्ड था खन्ड हुआ और पाकिस्तान बनवाडाला॥
बस यही, आगे चलकर गाज़ीतुग़लक का मानसी-पुत्र कहलाया है
जैसी घटना थी सच्ची ये "व्याकुल" ने बनाके गाया है॥

दो०- व्याकुल की है प्रार्थना, तन मन धन दो वार।
अब भी शुद्धी के लिये, हो जाओ तैय्यार॥

❀ २८—कहई तुम्हार मरम मैं जाना ❀

वार्ता:—भगवान श्रीराघवेन्द्र सरकार का (मरम) जानना साधारण बुद्धि वालों से बाहर है। ऐसा लोगों का विचार है जैसे:—

(१) पालन सुर धरनी अद्भुत करनी (मरम) न जाने कोई।
(२) मास दिवस कर दिवस भा (मरम) न जाने कोई॥
(३) निज-निज रुख रामहिं सब देखा।
कोउ ना जान कछु (मरम) विषेखा॥
(४) लक्ष्मण हु यह (मरम) न जाना।
जो कुछ चरित रचा भगवाना॥
(५) तेहि कोतुक कर (मरम) न काहू।
जाना अनुज न मात पिताहू॥ इत्यादि॥

वार्ता—श्रीरामचरित मानस के प्रमाणों से मालूम होता है कि सरकार का (मरम) जानना सुगम नहीं क्योंकि:—



विधि हरिहर सुर सिद्ध घनेरा ।
कोऊ न जान मरम प्रभु केरा ॥

वार्ता—तो—आप ही विचार करें ।

अधम जाति केवट कहं जाना ।
कहइ तुम्हार (मरम) मैं जाना ॥

ऊपर के प्रमाणों से सिद्ध होता है कि प्रभू का 'मरम' जानना बहुत ही दुस्तर है । परन्तु आगे के प्रमांणो पर भी ध्यान देना आवश्यक है ध्यान दे ।

(१) तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी ।
जानइ महिमा कछुक तुम्हारी ॥
(२) यह सब चरित जानपै सोई ।
जापर कृपा राम की होई ॥
(३) सो जानइ जेहि देहि जनाई ।
जानत तुम्हहि तुम्हहिं होइ जाई ॥ क्योंकि ॥

❀ कवित्त ❀

कवित्त—हाथी कौन तप तापै गिद्ध कौन जप जापै ।
कौन व्रत थापै पद पायो नाग काली है ॥
व्याधा कौन योग साधै यज्ञ को गवास राधै ।
कौन नेम नाधै उर केवट लगा ली है ॥
नाइन नहाई कहाँ वेश्या ज्ञान पाई कहां ।
भिल्लनी कहां पै क्रंब ब्राह्मण जिमाली है ॥



मुनि पद पाली नेक नियम न पाली "चन्द्"।
नाथ प्रेम वाली रीझ बूझ ही निराली है ॥

महानुभावों मैंने आप के सामने रामायण के दोनों ही भाव रख दिये हैं। अब आप स्वयं सोचें समझें गौर करें। साथ ही इतना ध्यान रहे कि शृङ्गवेरपुर के प्रकरण में प्रभू के निवास करने पर साथ ही पहरा होने पर श्री गो स्वामी जी लिखते हैं:——

गुह बुलाई पाहरू प्रतीती ।
ठाँव ठाँव राखे प्रति प्रीती ॥

पुत्र मे प्रीती और मित्र मे प्रतीती का सम्बोधन है। सुत की प्रीत, प्रतीति मित्र की (विनय प्रत्रिका)।अब देखना यह है कि (मरम) की बात क्या थी। तो याद रहे निषाद राज वो भगवान को पार ले जाने वाला ये दों व्यक्ति थे ॥ एक नहीं ॥ सरकार राघवेन्द्र वो माता श्री जानकी जी पृथ्वी पर कुशा की शय्या पर सो रहे थे। उस समय निषादराज वहीं बैठ कर श्री लपनलाल जी के पास में अश्रु की धारा बहा रहाथा। ठीक उसी समय छोटे सरकार ने निषादराज से एक (मरम) की बात कही थी। जो नाव से पार ले जाने वाला केवट भी उस मरम को सुन रहा था ॥ उपदेश- ॥

(१) राम ब्रह्म परमारथ रूपा ।
अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
(२) सकल विकार रहित गति भेदा ।
कह नित नेति निरूपहिं वेदा ॥

दो० भगत भूमि भूसुर सुरभि, हितही लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटहिं जगजाल ॥

(१) कहई राम की सब प्रभुताई ।
अगम निगम सब बात बताई ॥
(२) यही बात तुलसी लिख गाई ।
जापर कृपा करहिं रघुराई ॥
(३) सो जानइ कछु राम प्रभाऊ ।
लोकहु वेद विदित सब काऊ ॥
(४) केवट चरण चहहुं प्रभु केरा ।
कर्म वचन मन सो प्रभु चेरा ॥
(५) भजहिं निरन्तर श्री भगवाना ।
ताते कहहिं (मरम) मैं जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० १ ❀

(१) केवट कौन (मरम) किमि जाना ।
कृपा करहिं जो श्रीभगवाना ॥
(२) किमि तुम कहेऊ नही पहिचाना ।
कहहिं तुम्हारा (मरम) मै जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० २ ❀

(१) सुरसरि तीर राम जब गयऊ ।
तब मन महिं विचार अस भयऊ ॥

(२) केवट मोर (मर्म) नहिं जाने ।
ब्रह्म स्वरूप न कहि पहिचाने ॥
(३) प्रभु सोचत केवट सोइ जाना ।
कहहि तुम्हार (मरम) मैं जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० ३ ❀

(१) मांगेउ नाव जबहिं भगवाना ।
केवट उठि तब कियो पयाना ॥
(२) दर्शन करि वह तृप्त न भयउ ।
सुरसरि तीर मुक्ति भय चहऊ ॥
(३) सोच रहा सब भेद छुपाई ।
श्री रघुवीर पार अब जाई ॥
(४) प्रभु समझे कि यह नहिं जाना ।
कहहि तुम्हार (मरम) मैं जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० ४ ❀

(१) प्रभु सोचत मोहिं नाव चढ़इहैं ।
चरन मोर, कबहूं नहिं धोवइहैं ॥
(२) चरन धोइ जो नाव चढ़ावैं ।
तरनिते घरनि तुरत ह्वै जावै ॥
(३) नई नारि देखि बउरइहैं ।
मोर भजन कबहूँ नहिं करिहैं ॥
(४) मोको समझहु निपट नदाना ।
कहहि तुम्हार (मरम) मैं जाना ।

वार्ता—केवट ने इस रूप से कामिनी का त्याग किया है क्योंकि सरकार की भक्ती मे दो वाधायें मुख्य हैं । एक कंचन एक कामिनी जैसा कि वंगाल के गवर्नर श्रीअब्दुल रहीम खान खाना ने लिखा है।

दो०—रहिमन यह जग आइके को न भयो समरथ्थ।
एक कंचन एक कुचन पै, को न पसारे हथ्थ ॥

ऊपर के चौपाइयों में कामिनी का त्याग किया अब कंचन भी त्यागता है धन्य हो भक्त राज केवट तुम धन्य हो।

भाव नं० ४

१— निपट गवांर नाथ मोंहि जाना।
ब्रह्म स्वयंभ हो भेद छुपाना ॥
२— राजकुमार जान नहिं डरिहौं ।
चरणामृत ले पार मैं करिहौं ॥
३— उतराई कछु नाथ न लइहौं।
चरण पखार मुक्ति है जइहौं ॥
४— कंचन पाइ कांच नहिं होइहौं ।
द्रव्य पाइ मैं नहिं बौरइहौ ॥ क्योंकि
५— माया ठगनी सबहिं भुलावे ।
बड़े बड़े रिषि मुनि भरमावे ॥
६— चरण धोइ सब कछु लैलैइहौं ।
भवसागर से पार ह्वै जइहौं ॥ इसलिये

७— शिघ्रहि मोंसे पांव धुलाओ ।
मेरी मजदूरी भी चुकाओ ॥
८— कृपा करहु नहिं चले बहाना ।
कहहिं तुम्हार (मरम) मैं जाना ॥
वार्ता - सरकार के चरणों का प्रताप क्या कहूँ ।

❀ अथवाँ भाव नं० ५ ❀

१ - अधम जाति तारो रघुराई ।
दीन दयाल नाम सब गाई ॥
२—जो मोहि अधम नीच ते घिनइहौ ।
अधम उधार न नाम न पइहौ ॥
३ वेद शास्त्र यह बात बखाने ।
भक्त हेतु अवतरेहु सो जाने ॥
४ मोरे हृदय यही विश्वासा । कि
राम से अधिक राम के दासा ।
५—अस जिय जान कहहुं भगवाना ।
(मरम तुम्हार अधिक मैं जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० ६ ❀

१ - मैं समझूँ एक कौतुक करिहौ ।
चरन धूरि ते तरनि उड़इहौ ॥

२- चरन छुअत जो नाव उड़िजाई ॥
फिर का करिहौ श्री रघुराई ।
३—देव दनुज यह देख के हँसिहैं ।
कुटुम हमार भूख से मरिहैं ॥
४ - फिर दुइ नारि गृह में होइ जाई ।
सौति सौति सब करहिं लड़ाई ॥
(५) कलह बढ़हिं घर में भगवाना ।
कहहिं तुम्हारा (मरम) मै जाना ॥

❀ अथवाँ भाव नं० ७ ❀

(१) मै जानूं प्रभु की चतुराई ।
मोंसे अब सब भेद छुपाई ॥
(२) जासु नाम सुमिरत एक वारा ।
उतरहि नर भव सिन्धु अपारा ॥
(३) लत्त हमार एक ही स्वामी ।
कृपा करहु अब अन्तरयामी ॥
(४) पद पखार जो पार मैं करि हौं ।
तो मैं भवसागर से तरि हौं ॥
(५) यह प्रणमोर आज जो ठाना ।
कहहिं तुम्हार मरम मै जाना ॥ इत्यादि तब ॥
कृपा सिन्धु बोले मुसकाई ।
सोई करो जेहि नाव न जाई ॥



बेगि आन जलपाय पखारू ।
होत बिलम्ब उतारहिं पारू ॥ इतनी देर के बाद ॥
केवट राम रजायसु पावा ।
पानि कठौता भरलेइ आवा ॥ इसके बाद ॥
अति आनन्द उमङ्ग अनुरागा ।
चरन सरोज पखारन लागा ॥

दो०—पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पार करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयऊ लेइपार ॥

सियाबर रामचन्द्र की जय

॥ सातवाँ भाग ॥

❀ २६—जन दीना ❀

बालक ज्ञान बुद्धि बल हीना ।
राखहु शरण नाथ (जन) दीना ॥

वार्ता—भगवान के प्यारे भक्तों आज इस समय जन शब्द के ऊपर कुछ विचार करना होगा । क्योंकि जन शब्द भगवान को बहुत ही प्यारा है ॥ जैसे—

(१) जपति नाम जन आरत भारी ।
मिटहिं कुसंकट होइ सुखारी ॥

❀ अथवा ❀

(२) दंडक बन प्रभु कीन सुहावन ।
जन-मन अमित कीन्ह प्रभु पावन ॥

इस प्रकार कई स्थलों पर जन शब्द आया है। अब विचार यह करना है कि जन शब्द किसके लिये आया है। प्रायः सरकार ने भी प्रमुख भक्तो के लियेही जन शब्द उच्चारण किया है। क्योंकि जन सभी भक्त नहीं हो सकते। जन वही कहलाते हैं जो प्रभु को परम प्रिय हैं। जो सरकार राघवेन्द्र ने सूक्ष्म रूपसे आरण्य काण्ड मे जन शब्द की व्याख्या कर दी है जिसकी पुष्टी अन्य काण्डों से इस प्रकार है। ब्रह्म · पुत्र श्री नारद जी ने भगवान से कहा कि आज मुझे सरकार से एक वर मांगना है।

(१) सुनहु उदार सहज रघुनायक।
सुन्दर अगम सुगम वर दायक ॥
(२) देहु एक वर मांगऊँ स्वामी।
यद्यपि जानत अन्तर्यामी ॥

वार्ता—इसके उत्तर में श्री रघुनन्दन सरकार ने कहा कि—

(१) जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ।
'जन' सन कबहुं कि करऊँ दुराऊ ॥
(२) कवन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी।
जो मुनि वर न सकहु तुम्ह मांगी ॥
(३) 'जन' कहं नहिं अदेय कछु मोरे।
अस विश्वास तजहु जनि भोरे ॥

वार्ता—ऊपर के चौपाइयों से यह सिद्ध हुआ कि जन से प्रभु कोई बात छुपाते नही ऐसा विदित होता है कि सरकार



के अन्तरङ्ग भक्त को ही 'जन' कहते हैं। श्री नारद जी ने सोचा कि प्रभु ने हमें जन शब्द कहा और साथ ही अदेय भी कहा तो पूंछ कर ही देख लूँ—

(१) राम जबहिं प्रेरेहु निज माया।
मोहेहु मोंहि सुनहु रघुराया॥

(२) तब बिवाह मैं चाहउँ कीन्हा।
प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा॥

वार्ता—'जन' को जब कुछ अदेय नहीं है तो सरकार ने हमें गृहस्थाश्रम क्यों नहीं दिया वह भी तो आप के जन' इस नारद ही ने तो माँगा था तब सरकार ने उत्तर दिया कि—

(१) सुनि मुनि मोहिं भजहिं सहरोसा।
भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा॥

(२) करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी।
जिमि बालक राखइ महतारी॥

(३) गह शिशु बच्छ अनल अहि धाई।
तहं राखइ जननी अरगाई॥

(४) प्रौढ़ भएं तेहि सुत पर माता।
प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता॥ अर्थात्—

जिस प्रकार माता अपने अबोध बालक को अनेक भयानक वस्तुओं से बचने के लिये अनेक उपाय किया करती

है और (प्रौढ़) होने पर स्वतन्त्र छोड़ देती है माता वही है अवस्था का फेर है श्री नारदजी ने फिर पूछा सरकार प्रौढ़ और अबोध के लक्षणों में क्या भेद हैं। भक्त वत्सल भगवान ने तत्काल ही श्री नारद जी को समझा दिया कि—

(१) मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी।
बालक सुत सम दास अमानी॥ अन्तर यह है कि
(२) 'जन' हिं मोर बल निज बल ताही।
दुहु कहं काम क्रोध रिपु आही॥ अर्थात्—

जन को हमारा, ज्ञानी को यानी प्रौढ़ को अपने ज्ञान का बल होता है। जन का तो सिद्धान्त ही है कि –

*** मैं हरि साधन करै न जानी ***

जन को तो किसी साधन का होश ही नहीं रहता। जैसे छोटे बालक को कुछ ज्ञान न रहने पर भी माता-पिता के आगे या पीछे प्राकृतिक खेल किया करता है और माता—पिता अचानक उस खेल को देखकर प्रसन्न हो जाते हैं जो कि बालक को प्रसन्न और अप्रसन्न का अनुमान भी नहीं हो सकता श्रीराम चरित्र मानस मे यत्र तत्र आये हुये जन' शब्द में उपरोक्त भाव ही प्रदर्शित होता है। ध्यान रहे भरद्वाज, अगस्त, अत्री इत्यादि अपने को 'जन' न कह सके, परन्तु सरभंग जी कहते हैं कि—



नाथ सकल साधन मैं हीना।
कीन्हीं कृपा जानि 'जन' दीना॥
सो कछु देव न मोहि निहोरा।
निज पन राखेउ 'जन' मन चोरा॥

श्रीसुतीक्ष्ण जी भी यही कहते हैं कि

हे प्रभु दीन बन्धु रघुराया।
मोसे शठ पर करिहैं दाया॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं। क्योंकि—
भक्ति विरति न ज्ञान मन माहीं॥

वार्ता - साधन रहित तथा निराश्रवलम्ब दीनता को देखते हुये श्रीगोस्वामीजी ने भी लिखा कि—

तब रघुनाथ निकट चलि आये।
देखि दशा निज 'जन' मन भाये॥

वार्ता साथ ही श्री बिभीषण जी ने भी यही कहा कि—

तामस तन कछु साधन नाहीं।
प्रीति न पद सरोज मन माहीं॥
तात कबहुँ मोंहि जानि अनाथा।
करिहैं कृपा भानुकुल नाथा॥

वार्ता—श्री सरकार भी यही कहते हैं कि--



* निर्मल मन 'जन' सो मोहि पावा *

अर्थात्–वास्त्विक 'जन' तो वही है जिसका मन अत्यन्त निर्मल होता है। जैसे अबोध बालक का मन कितना निर्मल होता है यह तो माता-पिता ही जानते हैं। तभी तो कहा है कि—

जो लरिका कछु अनुचित करहीं।
गुरू पितु मातु मोद मन भरहीं॥

वार्ता—इसलिये सरकार ने कहा कि—

* मोहिं कपट छल छिद्र न भावा *

वार्ता–जिसको श्रीविभीषणजी ने भी स्वीकार करते हुये कहा कि

अब पद कुशल देखि रघुराया।
जो तुम कीन्ह जानि 'जन' दाया॥

वार्ता - विचार करते हुये श्री भरत लाल जी ने भी यही कहा—

(१) जो करनी समुझैं प्रभु मोरी।
नहिं निस्तार कल्प सत कोरी॥ परन्तु॥

(२) 'जन' अवगुण प्रभु मान न काऊ।
दीन बन्धु अति मृदुल स्वभाऊ॥

(३) मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई।
मिलिहहिं राम सगुण शुभ होई॥ अथवाँ॥



छप्पय—अब कुशल कौशल नाथ आरत जानि जन दर्शन दियो।

साथ ही श्री अङ्गद जी ने भी यही कहा कि—

बालक ज्ञान बुद्धि बलहीना।
राखहु शरण नाथ 'जन' दीना॥

इत्यादि उदाहरणों से (जनहिं मोर बल) की ही अस्पष्टता मालुम होती है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार जन वही है जो दीन हीन अत्यन्त असमर्थ भाव की पुष्टि लेकर सरकार के सामने आश्रित अबोध बालकों के समान,अनन्याश्रित भक्त हैं।

॥ धन्य हो सरकार—राघवेन्द्र ॥

निज 'जन' जानि ताहि अपनावा।
प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा॥

॥ बोलो भक्त वत्सल भगवान और उनके भक्तों की जय ॥

❀ राग बिहाग ताल तीन ❀

लाभ कहा मानुष—तनु पाये।
काय-बचन-मन सपनेहु कबहुंक घटत न काज पराये॥ १॥
जो सुख सुरपुर नरक गेह बन आवत बिनहिं बुलाये।
तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन समुझत नहिं समुझाये॥ २॥
पर-दारा, पर—द्रोह, मोह-बस किये मूढ़ मन भाये।
गरभवास दुखरासि जातना तीव्र बिपति बिसराये॥ ३॥

भय, निद्रा, मैथुन, अहार सबके समान जग जाये।
सुर-दुरलभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गंवाये ॥ ४ ॥
गइ न निज-पर-बुद्धि सुद्ध ह्वै रहे न राम लय लाये।
तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये ॥ ५ ॥

❋ ३०—अशरण शरण दीन हितकारी ❋

❋ भक्त वत्सल भगवान राघवेन्द्र सरकार ❋

वार्ता—पृथ्वी का भार उतारने के हेतु भक्त वत्सल भगवान का दरबार लगा हुआ था। दरबार में सब सेना एकत्रित थी। दाहिनी तरफ श्री लखन लाल जी और बांई ओर श्रीहनुमन्तलाल विराजमान थे इतने ही में प्रधान मन्त्री श्रीसुग्रीवजी ने आकर यह सम्वाद सुनाया कि—

चौ०—आवा मिलन दशानन भाई।

वार्ता—इतना सुनते ही भगवान सुग्रीव की तरफ देखकर बोले कि हमारे दरबार मे दीन आये और अभी तक बाहर है साथ क्यो नही लाये। मेरे शरणार्थी के लिये कोई रोक टोक तो नही, तब श्री सुग्रीव जी बोले कि सरकार की आज्ञा लेने आया था। सरकार बोले मुझसे पूंछ क्या रहे हो क्या विभीषण के आने में कोई रहस्य की बात है। सरकार के हृदय मे उथल-पुथल मचने लगी और बोले कि—



चौ०—कह प्रभु सखा बूझिये काहा।

वार्ता—यदि विभीषण मिलने आये हैं तो पूछने की क्या वात उन्हें साथ ही लाना था। सुग्रीव ने समझा कि रघुनन्दन सरकार इस समय प्रेम में राजनीति भूल रहे हैं। इस लिये दुबारा सुग्रीव जी ने कहा कि—

कहइ कपीस सुनहु नर नाहा।

वार्ता—नर नाहा शब्द सुनकर प्रभू विचार करने लगे कि सुग्रीवजी कुछ राजनैतिक सम्मति देना चाहते हैं। अतः प्रभु सावधान होकर बैठ गये और सुग्रीव जी की सलाह सुनने लगे। सुग्रीव जी ने कहा कि—

चौ०—जानि न जाइ निशाचर माया।
कामरूप केहि कारण आया॥

वार्ता—भगवान ने कहा सुग्रीव जी इसकी चिन्ता न करो तुम एक निशाचर को कहते हो यहाँ तो—

चौ०—जग महुँ सखा निशाचर जेते।
लछिमण हनइ निमिष महुं तेते॥

वार्ता—तुम चिन्ता न करो। परन्तु सुग्रीव जी ने फिर कहा कि सरकार यह तो ठीक है परन्तु हम इस समय जहाँ हैं ये संग्राम भूमि तो है नहीं यह तो हम लोगों का मन्त्रणा स्थल है और फिर वो मित्र रूप तथा वैष्णव बन कर आया है। मालूम नहीं होता है कि—



चौ०—काम रूप केहि कारण आया।

वार्ता—इसलिये आप की इच्छा जानने और आज्ञा लेने आया हूं। प्रभू ने साधारण उत्तर दिया—

चौ०—जो पै दुष्ट हृदय सोइ होई।
मोरे सनमुख आव कि सोई॥

वार्ता—देखो! सुग्रीव जी अगर वो काम रूप से मेरे साथ विश्वास घात करने आया होता तो मेरे सनमुख यानी शरण मे आही नही सकता था। क्योंकि—

चौ०—पापवन्त कर सहज स्वभाऊ।
भजन मोर तेहिं भाव न काऊ॥

वार्ता—और विभीषण तो लंका मे रात-दिन मेरा ही भजन करता है—

चौ०—मन महुँ तर्क करै कपि लागा।
तेहीं समय विभीषण जागा॥
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा।
हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा॥ इत्यादि—

वार्ता—इसलिये दुष्ट हृदय होता तो वह मेरे शरण मे आता ही नही। अब सुग्रीव जी घबड़ा गये और निरुपाय होकर बोले कि—

चौ०--भेद हमार लेन शठ आवा।

वार्ता—भगवान सुग्रीव की बात समझ गये और कहा अच्छा अगर वह भेद ही लेने आया है तो आने दो हमार और तुम्हारी इसमें हानि ही क्या जहाँ भेद हो वहाँ वह भेद ले ले यहाँ तो भेद है ही नहीं। श्रीरामराज्य में भेद कैसा भेद तो संगीतज्ञों में होता है क्योंकि वही लोग ताल भेद, मात्रा भेद, स्वर भेद, आड़ी कुआड़ी भेद बताया करते हैं। और जो यह कहो कि –

चौ०—भेद लेन पठवा दश शीश।
तदपि न कछु भय हानि कपीसा॥

वार्ता—इस उत्तर को सुनते ही सुग्रीव जी सुस्त हो गये तत्काल सरकार ने कहा कि अब सोचकर तुम्हीं बताओ कि अब क्या करना चाहिये। तब सुग्रीव जी प्रसन्न मुद्रा से बोले कि—

चौ०--राखिय बाँधि मोहि अस भावा।

वार्ता--प्रभु बोले कि! सुग्रीव जी तुमने राजनीति तो सोची, लेकिन रामनीति तो नहीं सोची।

चौ०—सखा नीति तुम नीक विचारी।

वार्ता--यह तो राज नीति है। परन्तु।

चौ०—मम प्रण शरणा गत भय हारी॥

वार्ता यह रामरीति है। इसी के अनुसार तो तुम भी शरण में रक्खे गये हो नही तो तुम्हारे लिये भी बहुत से प्रश्न हो सकते थे। अब तुम्हीं बताओ यहाँ राजनीति बर्तूं या रामरीति। तुम्हारी राजनीति (राखिय बाँधि) के अनुसार विभीषण को बाँधकर कैद में डाल दूं या 'रामरीति' के अनुसार—

चौ०—जो सभीत आवा शरणाई।
रखिहौं ताहि प्राण की नांई॥

वार्ता- विभीषण को बुलाकर हृदय से लगा लूं। सुग्रीव जी अब निरुत्तर हो गये। अगर वो कहते हैं कि राजनीति का वर्ताव करे तो सरकार कहेंगे कि राजनीति से तुम पर भी दोष लगेंगे। जैसे--

चौ०—सुग्रीवहु सुधि मोर बिसारी।
पावा राज कोष पुर नारी॥

वार्ता-अब राजनीति के विचार से कितना बड़ा विश्वास घात होता है कि पहले बन्धन हमारा तब विभीषण का इन सब बातों को सोचते हुये सुग्रीव जी ने चुप होकर आखें नीची कर ली और कोई जवाब न बन पड़ा। यह देखते ही सरकार हंस पड़े और सुग्रीव के हृदय की बात समझ गये और बड़े प्रेम से कहा कि—



दो०—उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपा निकेत ।
जय कृपालु कह कपि चले, अङ्गद हनू समेत ॥

वार्ता--बस ! अब सुग्रीव जी के पास कोई दलील नहीं रह गयी सरकार की इच्छा जानकर सुग्रीव, अंगद, हनुमान जी इत्यादि जाकर बड़े प्रेम से श्री विभीषण जी को भगवान के सामने लाये । और विभीषण जी आते ही भगवान के चरणों मे गिर कर साष्टांग दण्डवत् किया और कहा कि-

चौ०—नाथ दशानन कर मैं भ्राता ।
निश्चर वंश जन्म सुर त्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा ।
यथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥ परन्तु ॥

दो० —श्रवण सुयश सुनि आयऊँ, प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरण, सरन सुखद रघुवीर ॥

चौ०—अस कहि करत दण्डवत देखा ।
तुरत उठे प्रभु हरष विसेषा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा ।
भुज विशाल गहि हृदय लगावा ॥

वार्ता यह दृश्य देख कर भक्त शिरोमणि श्री हनुमन्तलाल जी प्रफुल्लित होकर बोल उठे--

चौ०-यह सब चरित देखि हनुमाना ।
बोल उठे जय कृपा निधाना ॥

※-बोलो भक्त और भगवान की जय ※

॥ आठवाँ भाग ॥

※ रागिनी हसकंकनी ताल चाचर ※

असमय मीत काको कौन ।
कमल के रवि परमहित हैं कहत श्रुति अस वयन ।
रस रहा तव लीन मधुकर परम चितदे चयन ॥
घटत बार विचार दुर्दिन होत तेहि दुःख भवन ।
निरस भये तब चितै इत उत करत तुरते गमन ॥
वन परान्यो शर विधै स्वर वेणु स्वादक जवन ।
तनको शोणित भयो वैरी खोज दीन्हों तवन ॥
जगत मीतही लागि परख्यो देखि सुनि चख श्रवन ।
कहत "सूर" सहाय निशदिन एक राधा रमन ॥

※ ३१—प्रभू की प्रभुता ※

दो०-श्रोतागण करके कृपा, सुनो लगाकर ध्यान ।
पल भर में प्रभु क्या करें, कोई सके न जान ॥
एक दिवस एक वधिक ने, जा जङ्गल के बीच ।
जीवों का वध कर रहा था, तरकश को खींच ॥



थोड़ी देर के बाद ही चला शिकारी लाल।
हिरनों का एक झुन्ड था वहाँ बिछाया जाल॥
जनती थी हिरनी वहाँ देखा करके गौर।
माया कुछ रचने लगा वहाँ शिकारी और॥
आते देखा बधिक को हिरनी को सब त्याग।
बेकस वो लाचार थे हिरन गये सब भाग॥

हिरनी को फांसलूं व्याध ने ठानली घात जंगल में उसने लगाई वहां। एक तरफ़ स्वान अपने खड़े कर दिये एक तरफ़ जाल अपनी बिछाई वहाँ॥ एक तरफ़ खुद वो पहरे पै तैनात था एक तरफ आग उसने लगाई वहां। जितनी शक्ती बधिक की थी ऐ श्रोतागण खूब ज़ोरों से उसने लगाई वहाँ॥ आधा बच्चा था बाहर अरध पेट में देखकर उसने आंसू बहाई वहाँ। दीनानाथ सुनो आज मेरी ज़रा टेर उसन तो फ़ौरन लगाई वहाँ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी करनी कछु न करी॥
औगुन मो तें बिसरत नाही पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंचकी पोट बांधिकै अपने शीश धरी॥
दारा-सुत-धन मोह लिये हैं सुधि-बुधि सब बिसरी।
सूर पतितको बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी॥

शैर—है पड़ती भीर जब भक्तों पै तब तुम राम आते हो।
बुलाने पै निवल जन के तुम्हीं घनश्याम आते हो॥
है अब गोविन्द क्या देरी बचाओ नाथ हे यदुवर।
मैं हूं "व्याकुल" पड़ी रोती खबर लो शीघ्र मुर्लीधर॥

दीन बन्धु से जब उसने फ़रियाद की दीनबन्धु न देर लगाई वहां। उनकी मायासे बादल वहाँ छा गया मूसलाधार पानी गिराई वहां॥ शेर निकला वधिक को पकड़ खा गया श्वान को मार करके लिटा वहां। बिछुड़े हिरनों को फिर से मिलाकर तभी क्लेश सारा प्रभू ने मिटाई वहां॥ सच्चे दिल का जभी टेर सुनली प्रभू जाके हिरनी को फौरन बचाई वहां। जो थी "व्याकुल" विरहनी वो हिरनी पड़ी उसकी व्याकुलता सारी मिटाई वहां॥

❀ तो याद रक्खें ❀

दो०-जिन भक्तों ने किया है, श्रद्धा से विश्वास।
उन भक्तों के प्रेम से, प्रभू आ गये पास॥
हैं हम पतित ग़रीब भी, आप ग़रीब निवाज
प्रभू तुम्हारे हाथ है, "व्याकुल" की अब लाज॥

❀ शुभ—संग्रह ❀

रत्नावली—दो०—लाज न लागत आपको, दौड़े आये साथ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को काह कहहुं मैं नाथ॥



अस्थि चरम मय देहमम तामें जैसो प्रीत।
तैसी जो श्रीराममंह, होत न तो भव भीत।
प्रीत न कीजै नीच सो, दामन भरिहैं कींच।
शीश काट आगे धरो, तबहुं नीच को नीच॥
कूकर शूकर करत है खान पान रस भोग।
तुलसी व्यर्थ न खोइये, यह तन भजिवे योग॥
मेल करावत जौन नर वही ऊंच चढ़ि जात।
फूट करावत सवन में वही नीच गिरिजात॥
कैसे—सुनो—कैंची सुई का सुनो, किस्सा ध्यान लगाय।
कैंची फूट डलावती, सुइ देत जुड़वाय॥
सुइ कहत तागा सुनो, फूट अभी टल जाय।
साथ हमारो करहु तो, मेल अभी है जाय॥
नकुआ में डोरा पड़ो, सुई चलो हरषाय।
दियो काट कैंची जिसे, सुई मेल करवाय॥
कैंची पैरों में पड़ी, सुई शीश चढ़िजाय।
फूट मेल के भेद को कविने दी वतलाय॥

❀ रागिनी प्रदीप की ताल तीन ❀

कहो कोई परदेशी की वात।
वही द्रुमलता वही कुन्जन वन वही तरुवर वही पात।
जब से गयो नन्द सांवरो नहि कोई आवत जात॥

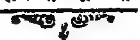
शशि रिपु बरष भानु रिपु युगसम हरिरिपु कीन्हों घात।
अजया भख अनुसारत नाहीं कैसे के दिवस सरात॥
मन्दिल अरध अवन हरि कहि गये हरि अहार टर जात।
वेद नखत ग्रह जोड़ अर्ध करि सो बनि आवत खात॥
मध पन्चक ले गयो मांवरो तासों जिय अकुलात।
सूर श्याम बिन विकल बिरहनी कर मीजत पछितात॥

❀ ३२—गङ्गाश्वपच ❀

सुनो एक राजा बहुत नेक था।
ढली उम्र में उसके लड़का हुवा॥
बहुत दान उसने खुशी में किया।
कि निर्धन जहाँ में न कोई रहा॥
खड़ा सामने भंगी गङ्गा था नाम।
महाराज का था वो पूरा गुलाम॥
उसे जानते थे सभी खासो आम।
दूं राजा ने सोचा इसे क्या इनाम॥
पड़ा सामने था एक सोने का थाल।
लगे हीरे मोती थे उसमें कमाल॥
उठा करके राजा ने वो देदिया।
जिसे लेके भङ्गी बहुत खुश हुआ॥
वो ले करके भङ्गी तो घर चल दिया।
तो स्त्री को जाके हवाले किया॥



जिसे लेके भङ्गिन ने फूली समाई।
कहा टोकरी क्या खूब हाथ आई॥
तो-एक रोज़ भङ्गिन ने कपड़े बदलकर।
लिया थाल सरपै चटक कर मटक कर॥
वो इस फख्र में थी कि मेरे टोकरे सा।
किसी भङ्गिन के घर में ऐसा न होगा॥
तो-हर रोज़ उसकी यही बान थी।
उठाती थी टट्टी वो सरकार की॥
ग़ुलुम थालपै नीच ढाने लगी।
सदा उसमें टट्टी उठाने लगी॥ तो॥
एक रोज़ राजा ने भङ्गी को देखा।
पुराना सा हाल और तंगी को देखा॥ तब॥
महाराज ने पूछा गङ्गा बता।
दिया था जो थाल उसे क्या किया॥ प्यारे॥
तेरी ७ पुश्त अगर बैठकर।
जो खाती न होता खतम वो मगर॥
तेरी वो दशा फिर बदस्तूर है।
उसी काम पर, फिर भी मामूर है॥
कहा सर झुका करके गंगा जनाब।
बिलाशक गया मुहतों का अजाब॥



न टूटे न फूटे न होगा खराब।
मिला सुख मुझे इससे बेहद जनाब॥
दिया था प्रभू एक ज़माना हुआ।
लो देखो न अब तक पुराना हुआ॥
वहीं थाल भङ्गी से वापिस कराया।
व एवज़ में उसको तो रूपया दिलाया॥
वही हाल इस आदमी ने किया।
प्रभू से उसे जन्म हीरा मिला॥
मगर हमने पापों से गन्दा किया। तो
भुगत अपने आप जो है धन्दा किया॥

❀ इसलिये ❀

अब न बनी तो फिर न बनेगी।
नरतन बार बार नहि मिलना फिर फिर जननी नाहिं जनेगी।
लख ८४ जाय पड़ोगे तब फिर यम से रार ठनेंगी॥
हरिगुण गाय परम यश लेले फिर तेरी नहिं तान तनेगी।
"पुरुषोतम" यह काया माटी फिर माटी मे जाय सनेंगी॥

❀ खटका ❀

ज्यों लीग को रहा करता पाकिस्तान Pakistan. का खटका।
इङ्गलैंड को रहा करता हिन्दुस्तान Hindustan का खटका॥

ज्यो चीन को रहता सदा जापान japan. का खटका।
तालिबे इल्म को रहता है इम्तहान का खटका॥
और कैशियर Cashier. को रहता है मीजान का खटका।
रागी को रहा करता है स्वर तान का खटका॥
कमजोर पहलवां को पहलवान का खटका।
पण्डित को रहा करता है अपमान का खटका॥
मुल्ला को रहा करता है ईमान का खटका।
मंझधार में मल्लाह को तूफान का खटका॥
हाकिम को रहा करता है सुल्तान Sultan. का खटका।
सुल्तान को रहता है दुश्मने जान का खटका॥
और मौसमे गर्मी मे है मुलतान Multan. का खटका।
ब्राह्मण को रहा करता महादान का खटका॥
कन्जूस को रहता सदा मेहमान का खटका।
तौहीद के बन्दे को है शैतान का खटका
औरत को अकेले में बियाबान का खटका।
मोही को रहा करता है सन्तान का खटका॥
हिन्दू का नही और न मुसलमान Musalman. का खटका।
इन्सान वो है जिसको है भगवान का खटका॥

❀ श्रीमथुराजी में ❀

* सन् १९२२ ई० की सच्ची घटना *

❀ ३३—भगवान् श्रीबाँके बिहारी जी की ❀
❀ सरे अदालत गवाही ❀

हर दिल में क्यों न हो प्रेम भगवत के लिए।
हर दम जो हैं मुस्तइद हिफाजत के लिए॥

मथुरा जी में हुआ जो इक भगत पै ज़ुल्म ।
भगवान आये थे खुद शहादत के लिए ॥
कन्हैया का जो लीला धाम है मशहूर बिन्द्रावन ।
सुना है उसमें रहता था हरी भगत इक ब्राह्मण ॥
पढ़ा लिखा तो कम था भगत था लेकिन बिहारी का ।
हमेशा लब पर उसके ज़िकर रहता था मुरारी का ॥
वो नौकर एक पंसारी के था सौदा उठाने में ।
मगन था आठ रुपया हर महीने के पाने में ॥
पिता, माता, चची, ताई चचा ताऊ थे सब उसके ।
पतीव्रत थी पत्नीं एक बच्चा गुं चयेलब उसके ॥
बड़ा कुन्बा था उसकी थी मगर तन्खवाह इतनी कम ।
रहा करता था उस पर तंगदस्ती का सदा आलम ॥
कनाअत और किफ़ायत से बसर औकात होती थी ।
शिकायत हो किसी को कुछ ना ऐसी बात होती थी ॥
चचा, ताऊ मुनीमी और तुलाई पर मुकर्रर थे ।
पिता जी एक कौमी सभा में काम करते थे ॥
नहीं रहता कभी यकसां किसी का भी ज़माना है ।
कभी इशरत कभी उसरत यही बस कारखाना है ॥
हरी इच्छा से पहले तो पिता जी कर गये "रहलत" ।
फिर उसके बाद माता जी जहाँ से हो गई ' रुखसत,, ॥

यूं ही एक-एक करके सब जहां से हो गये राही।
फ़कत इक इक साल ही में मर गया बच्चा भी स्त्री भी॥
बस इतने आदमियों में फकत ये भगत बाकी था।
जो अपने खांनदां के महकदे में मिस्ले साकी था॥
मनाया भगत ने मातम सभों का आहो जारी की।
ना लेकिन फ़र्क आया भगती में बांके बिहारी की॥
बराबर रात के ग्यारह बजे तक हाजरी देना।
भजन और कीर्तन करना जो मिल जाये वो खा लेना॥
जब उसको लोग ताने मारते खामोस हो जाता।
जवाब उनको न देता और भगती में मगन रहता॥
हवेली भी जो इक दुमंजिला पुख्ता बुजुर्गों की।
बताती थी ज़माने हाल से पहले की खुशहाली॥
उन्हीं अय्याम में जब होता था बरबाद उसका घर।
"गिरु" इक सेठ जी के पास रखी पांच सो लेकर॥-५००
उसे तनख्वाह जब मिलती तो आधी उसको दे आता।
और अपनी चार रुपया में बसर औकात करता था॥
इकट्ठा दो महीनों का कभी दस रुपया देता।
रसीद उससे मगर वो सीधेपन से था नहीं लेता॥
मगर थी सेठ की नीयत लगी उसकी हवेली पर।
तमसुक में न करता था जमा उससे रुपया लेकर॥

फकत कच्ची बही में रुपये वो उसके लिख देता।
तकाजा भी न करता ना खबर ही उसकी कुछ लेता॥
इरादा था कि कुछ दिन बाद नालिस उस पै कर दूंगा।
कराऊंगा मकां नीलाम और खुद ही छुड़ा लूंगा॥
गर्ज उसको पचास और साठ रुपया साल दे दे कर।
अदाई भगत ने करदी रहे दो रुपया ले दे कर॥
हुआ जब इस तरह पर आठ या नौ साल का अरसा।
तो मथुरा की अदालत "मुनसफी" में कर दिया दावा॥
मुकर्रर होगई तारीख भी जिस दम मुकद्दमे की।
गया तामील सम्मन के लिए मन्दिर में चपरासी॥
वो जमना में नहाने जब भजन और ध्यान करता था।
उसी हालत में उसने उस भगत को पास बुलवाया॥
कहा नालिस का सब हाल समन उसको दिखलाया।
भगत ने अर्जी दावा सेठ का भी लेके पढ़वाया॥
कहा मैं रुपये तो सेठ को हूँ दे चुका सारे।
मगर अब रुपये का करता है दावा वो किस मुंह से॥
था चपरासी भला, पूछा गवाह इसका भी है कोई।
भगत ने कह दिया- फौरन गवाह इसके "बिहारी जी"
वो समझा है बिहारी नाम का इसका कोई साथी।
जियादा और ना चपरासी ने कुछ तफतीस इसकी की॥



सकूनत उससे चपरासी ने पूछी जब बिहारी की।
भगत ने फिर सकूनत उसको मन्दिर ही की बतलादी ॥
तसल्ली सुनके चपरासी ने दी फौरन भगतजी को।
कहा पेशी पै तुम हमराह ले आना बिहारी को।
तुम्हारी बात अगर सच है तो डिगरी हो नहीं सकती।
बड़ा "मुन्सफ" है मुन्सफ बात ऐसी हो नहीं सकती ॥
समन तामील करके हो गया रुखसत जो चपरासी।
भगत को सेठ जी की खुलगई यकसर दगाबाजी ॥
तलब बाकायदा जब हो गये बांके बिहारी जी।
उसी दिन रात को सैन आरती जब हो गई उनकी ॥
भगत पहुँचा वहां बांके बिहारी जी की खिदमत में।
दिये पट भेड़ जब देखे पुजारी खूब गफलत में ॥
लगा रो रो के फिर वो अर्ज और भगवत भजन करने।
निहायत मस्त होकर नाचने और कीर्तन करने ॥
बिहारी जी से कहा चौखट पै माथा अपना धर-धरके।
गवाही दीजिये अब दास की अपनी दया करके ॥
अयां है तुम पै भगवन नेक वो बद सारे जमाने की।
तुम्हें मालूम है अहवाल मेरे ऋण चुकाने की ॥
बनाया है मुकदमे में तुम्हें मैंने गवाह अपना।
करो अब फर्ज अदा सारे जहाँ के बादशाह अपना ॥

अगर उस दिन अदालत में तुम्हें हाज़िर ना पाऊंगा ।
तुम्हारे दर की चौखट पर मैं जान अपनी गवाऊंगा ॥
उसी सूरत गई जब रात आधी बेकरारी में ।
लिया तब नींद की देवी ने उसको अपनी गोदी में ॥
भगत ने ख्वाब में भगवान को कहते हुए देखा ।
मेरे प्यारे ना घबरा मैं गवाही देने आऊंगा ॥
वचन गिरधर का ये सुनते ही उसकी खुलगई आंखें ।
खुशी से प्रेम जल बहने लगा और धुल गई आंखें ॥
भगत यूँ अति मगन होकर लगा फिर कीर्तन करने ।
मगन था वो गवाही का किया वादा है गिरधर ने ॥
पुजारी जब उठे और उनकी सुनली गुफ्तगू सारी ।
तो आने जाने वालों से भी कहदी हूबहू सारी ॥
खबर फैली ये वृन्दावन में बिजली की तरह घर घर ।
सुना जिसने मुकदमा देखने को होगया मुजतर ॥
पड़ी पेशी की तारीख सदहा आदमी पहुंचे ।
अदालत मुंशफी मथुरा की भरपूर थी आदमियों से ॥
घिरा था काले काले बादलों से आसमां उस दिन ।
जमीं पर गिर रही थीं नन्हीं नन्हीं बुन्दियाँ उस दिन ॥
समाअत इस मुकदमे की हुई पहले ही नम्बर पर ।
सभी हाजिर हुए जब मुद्दई मुद्दायला आकर ॥



चयानाते फरीकैन एकदम सुनकर अदालत ने ।
कहा ये भगत से तुम पेश कर दो गवाह अपने ॥
कहा ये भगत ने सरकार करवादें पुकार उसकी ।
सुनी मुंशफ ने जब ये बात फौरन भेजा चपरासी ॥
लगाई तीन आवाजें जो उसने देखते हैं क्या ।
कि काला कम्मल ओढ़े आता है एक सामने ग्वाला ॥
ढके कम्बल से मुंह तेजी से डेग भरता हुआ आया ।
कहा सरकार हाजिर हूँ, 'बिहारी' नाम है मेरा ॥
भगत उसके गिरा पांव पै और कुरबान जाता था ।
मसर्रत इस कदर थी प्रेम के आंसू बहाता था ॥
बिहारी ने पहुंच कर सामने मुंशफ के मुंह खोला ।
जलाल उसपर था ऐसा होगया मुंशफ भी भौंचका ॥
हुआ बेखुद वो ऐसा था न सुध थी उसको तन मन की ।
ना लाया ताब "मुसा" की तरह जिनहार दर्शन की ॥
बिहारी ने ये हालत देखकर फिर खींचली माया ।
हुआ मुंशफ को होश और उसने यूं गोया से फरमाया ॥
बतायें आप क्या कुछ जानते हैं इस मुकद्दमे में ।
किसे सच किसको झूठा मानते हैं इस मुकद्दमे में ॥
कहा ग्वाले ने मैं सब जानता हूँ वाकयात इसके ।
अभी कर दूंगा मैं रोशन सदाकत साथ है किसके ॥



इजाजत पाके मुन्शफ की जो की तकरीर ग्वाले ने ।
फसाहत पर किया कुरबान दिल हर सुनने वाले ने ॥
फलकों का कलम हाथों से इस अन्दाज पर छूटा ।
यहां छूटा, वहां छूटा, इधर छूटा, उधर छूटा, ॥
सभी ये कर रहे थे खूब है तेजियां इसकी ।
है ग्वाला होके भी शाइस्ता क्या उर्दू जबां इसकी ॥
कभी इतना कभी जिनहार ग्वाला हो नहीं सकता ।
है बेशक 'कृष्ण का अवतार' ग्वाला हो नहीं सकता ।
लगातार उसने सौ रकमों को मय तारीख के दिखलाया ।
हर इक किस सफे पर है किस वही में ये भी बतलाया ।
जबानी जोड़ कर मीज़ान भी आखिर को बतलादी ।
कहा दो रुपये हैं भगत पर अब सेठ के बाकी ॥
इरादा सेठ का है कि ले लूं मैं मकां इसका ।
जभी दायर किया दावा है झूठा जो कि सरतापा ॥
जिरह में सेठ की जानिब से बोल उठा वकील उसका ।
रहीं हैं याद कैसे इतनी रकमें ऐ करम फरमां ॥
दिमाग आलाह कसम है आपका या लायबेरी है ।
'बिहारी' ने कहा कुछ याददास्त ऐसी ही मेरी है ॥
मैं हूँ महाराज का नौकर न हो क्यों हाफिजा ऐसा ।
मेरे हाथों हजारों रुपया है आके उठ जाता ॥

कहा मुन्शफ ने ऐसा पूछना है वाकई बेजा।
बही में आप इतनी रकमें दिखला भी सकेंगे क्या॥
"बिहारी" ने कहा जी हां मैं सब रकमें दिखा दूंगा।
बही भी जिस जगह रखी हुई है मैं बता दूंगा॥
बही का जिकर सुनकर सेठजी को आगया चक्कर।
कि ग्वाला ये पते की बातें हैं बतला रहा क्योंकर॥
चले अल किस्सा मुन्शफ और बिहारी सेठ के घर पर।
ये दोनों आगे-आगे, पीछे-पीछे इक बड़ा लशकर॥
बिहारी, सेठ के घर पर मुआन मुन्शफ को ले आयो।
'बही' मतलूब थी जो कुछ पता सब उसका बतलाया॥
है तीन अलमारियां रखी हुईं कमरे में लाला के।
तुम उसके बीच की अलमारी में देखो जरा जाके॥
धरी पांच बहियां, तीसरी को तुम उठा लेना।
उसी में दर्ज है सारा भगत का लेना और देना॥
मगाई जब बही मुन्शफ ने तब उसको यकीन आया।
वही सब दर्ज है उसमें 'बिहारी' ने जो बतलाया॥
लगाने के लिये मीज़ान जो मुन्शफ ने वरक पलटा।
नजर से सबकी गायब हो गये वो भगत और ग्वाला॥
लबे मुन्शफ पै बाद अज फैसला जुमला ये जारी था।
वही बांके बिहारी था, वही बांके बिहारी था॥



गर्ज मुन्शफ़ ने इस्तीफ़ा दिया और पहुँचे वृन्दावन ।
लिया सन्यास आखिर छोड़कर संसार के बन्धन ॥
"श्रीयुत शोरनजी देहलवी"

नोट—श्रीयुत शोरनजी देहलवी सङ्गीत सम्राट पं भगवत किशोरजी "व्याकुल" के सबसे बड़े शिष्यों में से थे। जिन्होंने देहली के धर्म युद्ध में अपना प्राण धर्म के ऊपर न्योछावर कर दिया ।

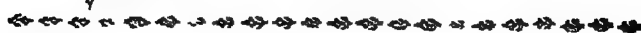
❀ रागिनी भैरवी ताल रूपक ❀

जानती जिनको है सेवक जानकी ।
जान देकर थी बचाई जानकी ॥
जानकी के जानके रक्षक हैं जो ।
वो करें रक्षा हमारे जानकी ॥

॥ नवाँ भाग ॥

३४—परम भक्त श्रीहनुमानजी की "रामभक्ति"

इक समय जब लग रही थी रामचन्दर की सभा ।
हाथ दोनों जोड़कर उस दम विभीषण ने कहा ॥
उम्र भर भक्ती करूं ये मेरी आशा है राम ।
सामने हों आप मेरे मैं करूं पूजा मुदाम ॥



बेखुदी की लहर में, एक हाथ में माला लिये।
राम के सुन्दर गले में हंस के पहनाते हुये॥
यह कहा भगवान्-मैं हूँ इक पुजारी आपका।
बख्श दीजे प्रेम भक्ति, हूं पुजारी आपका॥
भक्त की यह भेंट लेकर राम बेहद खुश हुये।
भक्त को भक्ति का सारा प्रेम रस देते हुये॥
लहर में ऐसी तबीयत आगई कृपाल की।
राम ने माला वो सीता के गले में डाल दी॥
राम के मन की हकीकत जानकी ने जान ली।
मन की महिमा भक्त-वत्सल ने सिया की मान ली॥
कह दिया-प्यारी कहो बे खौफ़ अपने मन की बात।
ये भरी भक्तों की महफिल है नहीं अमण की बात॥
देर तो इतनी ही थी बस अब इजाज़त मिल गई।
वो कली दिल की जो उलफत से भरी थी खिल गई॥
अपनी गरदन से उतारी कीमती माला वही।
प्रेम से हनुमत के सुन्दर गले में डाल दी॥
कुछ असर ऐसा दिखाया भक्ति की तासीर ने।
आंख से धन्यवाद का दरिया बहाया वीर ने॥
देर तक बैठे रहे, हनुमान बेखुद बे खबर।
फिर एकायक जा पड़ी, माला पै उनकी इक नजर॥



माला के दाने पै दाने देखते थे गौर से।
हाले दिल अपना न जाहिर किन्तु करते और से॥
यकवयक इस तरह का आगया दिल में खयाल।
अपने दांतों से वो माला चूर करदी वे मिसाल॥
यह तमाशा देखकर हैरान थी सारी सभा।
रञ्ज कुछ ऐसा हुआ उठकर विभीषण ने कहा॥
"तोड़" डाला इसको दम में आपने क्या कद्र की।
देखिये हनुमान जी माला बड़ी थी कीमती॥
ये वो माला थी कि जिसका दहर में शानी नहीं।
जो जवाहर इसमें थे हमने नहीं देखे कहीं॥
दो०—जामवन्त ने तब मसल, उन्हें दिलाई याद।
बन्दर क्या जाने भला, "अदरक का क्या स्वाद"॥
कटु वचन ये श्रवण कर, बोले रघुकुल चन्द।
माला क्यों तोड़ी कहो महावीर स्वच्छन्द॥
तब पवन सुत ने कहा, बेशक बड़ी थी क़ीमती।
अपनी नजरो में तो इसकी खाक भी कीमत न थी॥
एक भी दाने में जब लिखा न सीताराम था।
आप कहदें। क्या हमारे पास इसका काम था॥
शायद अन्दर हो छिपा ये जानकर तोड़ा उसे।
था वहां पर भी सफाया इस लिये तोड़ा उसे॥



दो०- मनके मनके पर अगर, लिखा न हो श्रीराम।
तो मणि माला से नहीं, बजरंगी को काम ॥
कहे विभीषण ने तभी, क्रोध भरे ये बैन।
बजरंगी का हृदय है, राम नाम का ऐन ॥
बजरंगी ने तब कहा, सत्य विभीषण बात।
राम राम में है लिखा, राम नाम मम गात ॥

चाहिये आंखें मगर उसके नजारे के लिये।
वरना दिल मिशकिन है अपना राम प्यारे के लिये ॥
इतना कह कर चीर डाला अपना सीना वे खतर।
और बोले राम का दर्शन करे अब हर बशर ॥
जब ये देखा सीन, चौंक उठे सभा वाले तमाम।
दिल में जिस जा देखते लिखा हुआ था राम राम ॥
"शोख" जिस भारत में ऐसे भक्त पैदा हो गये।
धर्म प्रेमी हाय उसमें आज उसका हो गये ॥

राम माथ मुकुटराम रामसिर नयन राम राम कान नासाराम ठोढ़ी राम नाम है। रामकन्ठ कान्धे राम राम-भुजा बाजूबन्द राम हृदय अलंकार हार राम नाम है ॥ रामउदर नाभी राम राम कटि कटी सूत्रराम वसन जंघराम जानू पै राम है। राम मन वचन राम राम गदा कटकराम मारुती के रोम व्यापक राम नाम है ॥

(ताल कँहरवा)

ध्वनि– घर आया मेरा परदेशी ।

घर आया मेरा सांवरिया आश लगी थी मोहे पलछिन की ।
गोपी दरश बिन रोती थी, आँसुओं से मूँ धोती थी
विपद् हरी सदा भक्तन की ॥ आश लगी ॥
याद तेरी जब आती थी नैनन नीर बहाती थी
बूँद गिरे तब अँसुअन की ॥ आश लगी ॥
मोहन मदन मुरारी हैं, भक्तन के हितकारी है
सूनी गली थी वृन्दावन की ॥ आश लगी ॥
पापों का संहार करो हरिजन का उद्धार करो
सुधि ना रही या तन मन की ॥ आश लगी ॥
मानुष तन जब पाये थे, राम रटूंगा कह आये थे
बाजी हार गई जीवन की ॥ आश लगी ॥
"व्याकुल" बिरह मिटाया कर छवि अपनी दिखलाया कर
आसरा है इन चरणन की ॥ आश लगी ॥

❀ ३५–रसखानु एवं ताज बीबी ❀
का
॥ इतिहास ॥

❋ कवित्त ❋

रसखान रहीम कबीर सूरदास हूं की ।
सुन्दर सुरस मई काव्य गिरा भीनी थी ॥



राधा कृष्ण प्रेम मे दिवानी ताजबीबी रही।
मक्के को त्याग सरन ब्रज को ही लीनी थी ॥
राम रस मधु के उपासक भौंर तुलसीदास।
राम-जानकी की कथा मृदु लिखि दीनी थी ॥
जो कवि गिनाये पढ़ो इनके वनाये ग्रन्थ।
सबने सनातन की सेवा ही कीनी थी ॥
सज्जनो ! - "व्याकुल"

मुसलमान होने पर भी रसखान को भगवान कृष्ण से कितना प्रेम था उनकी कविता को अवलोकन करें।

❋ सवैया ❋

१—धूरि-भरे अति शोभित श्याम जू
तैसी वनी सिर सुन्दर चोटी ॥
खेलत—खात फिरैं अंगना,
पग पैंजनी वाजत पीरी- कछोटी ॥
वा छविको "रसखानि" विलोकत,
वारत काम—कलानिधि—कोटी ॥
काग के भाग कहा कहिए,
हरि हाथ सो लै गयो माखन—रोटी ॥

इतना ही नहीं अन्तिम समय में भी भक्तराज रसखान भगवान श्रीकृष्णचन्द्र से कहते हैं।

१ मानुष हो तो वही "रसखान" बसो बृज गोकुल गांवके ग्वालन
जो पशु हो तो कहा बस मेरो चरो नित नन्दकी धेनु मंभारन ॥
पाहन हो तो वही गिरिको जो कियो सिर छत्र पुरन्दर कारन ।
जो खग हो तो बसेरो करौ नित कालिंदी कूल कदम्बको डारन॥

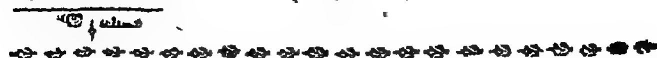
उस देश में आज हिन्दू माता पिता के रज वीर्य से उत्पन्न हिन्दू सनातन की क्या अभिलाषायें हैं, क्या आप लोग सुनने को तैयार हैं ? यदि हैं तो सुनिये

२ मानुष हो तो वही "कविचोच" वसौं सिटी लंदन के किसो द्वारे
जो पशु हो तो बनूं बुलडांग चलौं चढ़ि कार में पूंछ निकारे !
पाहन हो तो सिनेमाये हाल को बैठे जहां मिस पांव पसारे ।
जो खग हों तो बसेरो करौं किसी ओक पै टैम्स नदी के किनारे ॥

"प्रहसन"

भक्तवरों ! ये तो आपने भारत के मुसलमान भक्त रसखान के भाव का अवलोकन किया । इतना ही कृपाकर अब एक मुस्लिम ललना ताजबेगम का चरित्र सुनें जो मक्का शरीफ (मानकेश्वर महादेव) जाते समय रास्ते में श्रीवृन्दावन आया और वो भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का नाम सुनते ही मोहित हो गईं और मक्का न जाकर अपना जीवन वहीं बिताया वो कहतीं हैं ।

खाक इस दुनियां पै डाली जायगी (कब)
जब लगन हरि से लगाली जायगी ॥



※ कवित्त ※

१—छैल जो छबीला सब रंग में रंगीला बड़ा,
चित्त का अड़ीला, कहूं देवतों से न्यारा है।
माल गले सोहे नाक मोती सेत जो है कान,
कुण्डल मन मोहे, लाल मुकुट सिर धारा है।
दुष्ट जन मारे, सब सन्त जो उबारे "ताज"
चित्त में निहारे प्रन प्रीत करन वारा है।
नन्द जू का प्यारा, जिन कंस को पछारा वह
बृन्दावन वारा, कृष्ण साहब हमारा है॥

२—ध्रुवसे, प्रह्लाद, गज ग्राह से अहिल्या देखि,
शेवरी और गीध औ विभीषन जिन तारे हैं।
पापी अजामील· सूर तुलसी रैदास कहूँ,
नानक मलूक, "ताज" हरि ही के प्यारे हैं॥
धनी नामदेव, दादू, सदना कसाई जानि,
गनिका, कबीर मीरा, सेन उर धारे है।
जगत को जीवन ज़हान बीच नाम सुन्यो,
राधा के वल्मभ कृष्ण वल्मभ हमारे हैं॥

३—कोऊ जन सेवै शाह राजा राव ठाकुर को,
कोऊ जन सेवैं भैरों भूप काजसार है।
कोऊ जन सेवैं देवी चण्डिका प्रचंडी ही को,
कोऊ जन सेवैं "ताज" गनपति सिर भार है॥

कोऊ जन सेवैं भूत प्रेत भवसागर को.
कोऊ जन सेवैं जग कहूं बार बार हैं।
काहू के ईस विधि शंकर को नेम बड़ा
मेरे तो अधार एक नन्द के कुमार हैं॥

शैर—अब नहीं जाना कहे देती हूं साफ,
होने दो दुनियां अगर होती खिलाफ,
होने दो सब देखी भाली जायगी, 'कब'
जब लगन हरि से लगा ली जायगी॥
कह दो मुल्ला मौलवी और पीर को,
पूजूंगी मैं कृष्ण की तस्वीर को।
झोपड़ी बृज में बना ली जायगी 'कब'
जब लगन हरि से लगा ली जायगी॥

भगवान की ओर प्रार्थना करती है और कहती है।

※ कवित्त ※

४—सुनिये दिलजानी, मेरे दिल की कहानी।
तेरे हाथ हूँ बिकानी, बदनामी सहूंगी मैं॥
देव चर्चा ठानी, मैं नमाजहू भुलानी।
तजे कलमये कुरानी, तेरे गुनन गहूंगी मैं॥
सांवरा सलोना, सर "ताज" सर कुलहा दिये।
तेरे नेह दाग में निदाग हो रहूँगी मैं॥



नन्द के कुमार, कुर्बान तेरी सूरत पै।
हूँ तो मुस्लमानी पर हिन्दुआनी हो रहूँगी मैं ॥
तब मुल्लाओं ने कहा ये हमारे शरह के खिलाफ है। उत्तर
शेर- अब शरह मेरे नहीं कुछ काम की।
श्याम मेरे हैं मैं प्यारे श्याम का ॥
बृज में अब धूनी रमा ली जायगी, 'कब'
जब लगन हरि से लगाली जायगी ॥
इतना ही नहीं कुछ और सुनो।
५—अल्ला बिसमिल्ला रहमान वो रहीम छोड़।
पीर वो शहीदों की न चर्चा चलाऊंगी ॥
सुथना उतार पहन घाघरा घूमावदार।
फरिया को फार शीश चूनरी चढ़ाऊंगी ॥
कहत है "ताज" कृष्ण सो पैजकर।
वृन्दावन छोड़ अब कितहूं न जाऊंगी ॥
बांदी बनूंगी महा राधा रानी जू की।
तुर्कनी बहाय नाम गोपिका कहाऊंगी ॥

* इसलिये *

क्यों सताते हो मुझे पछताओगे।
दिल जलों की आहसे जल जाओगे,

वस यहाँ शुद्धी कराली जायगी 'कत्र'
जब लगन हरि से लगाली जायगी।
अन्तिमशब्द

साहब "सिरताज' हुआ नन्दजूका आप पूत
मार जिन असुर करी कालो सिर छाप है।
कुन्दनपुर जायकैं सहाय करी भीषमकी
रुकमिनीकी टेक राखो लगी नहि खाप है॥
पांडवकी पच्छ करो द्रौपदी बढ़ाय चीर,
दीन-से सुदामा की मेटी जिन ताप है।
निश्चै करि सोधि लेहु ज्ञानी गुनवान बेगि,
जगमे अनूप मित्र कृष्णका मिलाप है॥
स्याम तन स्याम मन स्याम हैं हमारो धन
आठौं जाम ऊधौ हमें स्याम ही सों काम है॥
स्याम हिये स्याम जिये स्याम बिनु नाहिं तिये
अन्धेकी-सी लाकरी अधार स्याम नाम है॥
स्याम गति स्याम मति स्याम ही है प्रानपति,
स्याम सुखदाई सों भलाई सोभा धाम है॥
ऊधौ तुम भए बौरे पाती लैके आए दौरे,
जोग कहाँ राखैं यहाँ रोम रोम 'स्याम" हैं॥

* सन्ध्या और बाँसुरी *

सन्ध्या के समय मे क्यों बाँसुरी बजाते स्याम।
धूंआ से रोज मेरी आंखै भरजाती हैं॥

सूखी सब लकड़ियाँ लेके करने रसोई बैठी।
उसी समय बंशी की तान सरसाती है ॥
बंशी की सरसता से सरसता चहुं ओर होत
सूखी लकड़ियों में भ. रस भरजाती है ॥
जलती ना लकड़ियाँ नहीं बनतो रसोई मेरी।
इसी हेतु धूआं से आंखें भरजाती हैं ॥

* ५—सवैया *

पौढ़हती पलका पर मैं निशि ज्ञान अरु ध्यान पिया न लाये।
लाग गईं पलकें पलके पल लागत ही पल में प्रिय आये॥
मै जो उठी उनसे मिलने कहू जाग पड़ी पिय पास न आये।
"मीरन" और तो सोइके रेयावत हौं हरि प्रीतम जाग गवांये ॥

* ३६—हिन्दूपति महाराणा प्रताप *

सुलह अपने में करने से हजारों जान बचती है,
हमारी भी तुम्हारी भी इसी में शान बचती है ॥
वो खत अकबर के हाथों जब गया बाँचा गया जाकर,
बड़ा कहका लगा कर शाह बोला अब मरा काफर ॥
वहीं युवराज बीकानेर पृथ्वीराज बैठा था,
बड़ा हैरान था दिल में वो: खत उस ने भी देखा था ॥
कहा इजलास में उठ कर ये खत उस का नहीं होगा,
मैं उस से पूछता हूं फैसला खत का यही होगा ॥

इजाज़त लेके पृथ्वीराज ने राणा को खत डाला,
क़लम को नोंक से तलवार की जिगर कटा डाला ॥
लिखा परताप रजपूतों का गर परताप बाकी है,
तेरे परताप से ही क़ौम का परताप बाक़ी है ॥
शुरू होती है जब ताना जनी रजपूत मुग़लों में,
सुना देते हैं तेरा मुसकरा कर नाम मुग़लो मे ॥
अभी तक मूंछ पर बल देके तेरे बल से चलते हैं,
लुढ़कने पांओ जब लगते तेरे बल से संभलते है ॥
मुगल की मूंछ का बल तेरे बल से टूट जाता है,
तकब्बर का घड़ा दुश्मन का भर कर फूट जाताहै।
हमे गर्दन उठा कर रहम कर दुनियां मे चलने दे,
ना अपनी कौम को गैरों के जूतों में कुचलने दे ॥
जो तूने मान की तलवार को फटकार डारा है,
सबर कर सामने तेरे किसी का अब न चारा है।
दवा कोई नहीं दुश्मन के तू है दर्द पहलू का
मरीज़े नातवां रोता है मारा सर्द पहलू का।
लिटा पहलू मे बेगम फिर भी वे ग़म हो नही पाते
वो: सोते बड़ बड़ाते भी मरे यू कहके डर जाते ॥
बचाले हिन्द की किश्ती शरण ले कृष्ण प्यारे की
या करदे इस किनारे की या करदे उस किनारे की
गरज के डूब ना जाये धरम की नाव पानी मे
लगा दे एक झटका ज़ोर से अपनी जवानी में ॥

तेरे कुर्बान तेरी कौम सौ २ वार जायेगी
आखीरी मौत तो अय पाक राणा सबकी आयेगी ॥
जरा फिर खेलना मैदान में तलवार के ऊपर,
जमा दे रंग अपनी तेग़ का संसार के ऊपर ॥
धर्म का वेद का, गंगा गऊ का मान तुझ पर है,
अभी हम हैं हमें कहने का भी अभिमान तुझ पर है ॥
खड़े हैं अजदहा बनकर के तेरी कौम के आगे,
निगलनां चाहते हैं आज ही दो यौम के आगे ॥
फकत तलवार तेरी हौसला इसको न दे करने
बचाती है धरम सतियों का और हमको न दे मरने ॥
तुम्हारी शान का इन्सान दुनियाँ में कहां होगा
धरम इम्दाद पर तेरी यहां भी और वहां होगा ॥
जवाब आया मेरे खत का रमज वो: क्या मुगल जाने,
दयालू की क़लम को जो बहादुर की क़लम माने ॥
अभी तलवार मेरी का सुना उसने नहीं गाना,
सनातन धर्म पर कुर्बान होंगे मिस्ले पर्वाना ।
ले०— (श्रीपीयूषमुनिजी)

※ पृथ्वीराज का प्रत्युत्तर अकबर को ※

निज गति तक त्यागे भानु सित भानु चाहे,
जीवन बितावे शेर मुर्दों के हाड़ों से ।
मण्डल अखण्ड नभ खन्ड खण्ड होवे चाहे,
वक्र धुरीधरा पड़े टूटे तूत ताड़ों से ॥

चातक तड़ाग नीर प्रण वीर त्यागें प्रण,
अङ्कूर कसेरू झड़ें बेरियो के झाड़ों से।
अकबर! परताप कभी शीश ना झुकावे,
चाहे पिंजर बनादे तन छेद छेद बाणोंसे॥

* पृथ्वीराज का पत्र प्रताप को *

नायक स्वतन्त्रता के मस्तक झुकायेगा तो,
होकर प्रकम्पित येह भूमि फट जायेगी।
भीरुता कगार पैसे दासता की सरिता मे,
कूदेगा प्रताप रजपूती घट जायेगी॥
चित्तौड़ का मान त्याग मान बन जायेगा तो,
तेरी प्रभुता की यों ही माटी छुट जायेगी।
भारत का भानु तुही चीण पड़ जायेगा तो,
हिन्दी हिन्द-हिन्दुओ की नाक कट जायेगी॥

* प्रताप का पत्र पृथ्वीराज को *

चाहे भील बीर भारी बॉकुरे लड़ाकू रण
क्षेत्र में दिखावे पीठ जीवन पे ख्वार हो।
इष्ट मित्र भाई बन्धु सारे रजपूत चाहे,
कुल्नस वजाये अल्ला अकबर से प्यार हो॥
रोटी बेटी चोटी चाहे खोटी पड़ जावे चाहे,
दिन दूना इसलाम धर्म का प्रचार हो।
विश्व की विभूति सारी शक्तियॉ हो एक ओर,
एक ओर चेतक औ मेरी तलवार हो॥



कण्टकों पै सोऊँगा पहाड़ों पै करूंगा वास,
जीवन की घाटियों में ऊधम मचाऊँगा।
जंगल औ बेहाड़ों मे डोलूंगा उराने पैर,
पादपों के फूल-पत्र बीन बीन खाऊंगा ॥
हाथ मे रहेगा हथियार जो न कोई फिर
खाली नाखूनों से शत्रु आसन हिलाऊंगा।
भूखे प्राण त्याग दूंगा बस्ती त्याग दूंगा और
हस्ती मेंट दूंगा पर शीश न झुकाऊंगा ॥

* प्रताप की तलवार *

चली विकराल होके दामिनी दमंक सी तो,
कट्ट कट्ट संड मुंड झुण्डों को बिछाती थी।
तेजधार चलती थी तेजधार सरिता सी,
हाहाकार हुंकार में वीरों को डिगाती थी ॥
कायर विचारे जब भूलते थे मारग तो,
मारग को रोकि जम मारग दिखाती थी।
उज्ज्वल पै श्याम मुख शत्रुओं के करती थी,
लाल लाल लालन को काल से मिलाती थी ॥

* हल्दी घाटी में प्रताप *

जीवन की बाग वीर जिधर घुमाता उतै,
टिड्डी दल बीच राई काई फट जाती थी।
चाबुक की चोट चाटि चमू को चबाता चापि,
चेतक की टापन से भूमि फट जाती थी ॥

मारता झपट्टा पट्ठा गिरता था हट्टा कट्टा,
ठट्ठन की ठेल पेल वादी छट जाती थी।
सेतानी प्रताप के हाँ कर में कृपाण देख,
दिल्ली की नवाबी गैल छोड़ हट जाती थी ॥

❋ चेतक की टाप ❋

भीम की गदा थी किम्वा चक्र की चपेट थी या,
वज्र का प्रहार किम्वा काल रूप आप थी।
साँगा की वे साँग थी या विश्व का विराट रूप,
दिल्ली को हकार किम्वा शूकर की खाँप थी ॥
बीरत्व बकार किम्वा ढाल थी प्रताप की या,
चित्तौड़ की शान थी या आन बान थाप थी।
एक टाप में ही अल्ला-ताला मिल जाता किम्वा,
जिन्नत निशानी युद्ध चेतक की टाप थी ॥

❋ प्रताप का प्रताप ❋

नाम सुनते ही बड़े बड़े तेजधारी शूर,
सिंह से सवाये भूमि नीचे गढ़ जाते हैं।
दण्ड भुजदण्ड चण्ड उठते फड़क शीघ्र,
कायर विचारे पड़े पड़े सड़ जाते हैं ॥
देखि के दुधार वार लाखन की भीर पर,
आतातायी यवनों के होश उड़ जाते हैं।
लखिके प्रताप का प्रताप माँहि मंडल खं,
मंडल में चन्द तारे मन्द पड़ जाते हैं ॥



* प्रताप की कलाई *

ब्रह्म में न रुद्र में शंकर—त्रिशूल—नेत्र
गाण्डीव को दण्ड मे न शक्र शुक्ताई में।
मार्तण्ड प्रचण्ड में न कृष्ण चक्र शंख में न,
द्रोण की कमान मे न देव प्रभुताई में॥
तेज तलवार में न तोप-तीर वार में न
शेष फुफकार मे न नभ की उंचाई मे।
युद्ध में प्रताप ना प्रतापियों के ताप में न,
ताप था प्रताप था प्रताप की कलाई में॥
लगते ही भाला बस कढ़ता दिवाला जंग,
झख मारते थे पड़े रुण्ड—मुण्ड खाई में।
एक बार ही में दिल्ली ढिल्ली पड़ जाती फिर,
झिल्ली फट जाती पेट तिल्ली की दवाई में॥
विजय-प्रताप इतिहास लिखती थी बैठी,
सुनती थी हल्दी घाटी मौन गहराई में।
देखिके प्रताप-मार शत्रु मुख-मुद्रा पर,
हल्दी फिर जाती हल्दी घाटी की लड़ाई में॥

॥ दसवां भाग ॥

❀ रागिनी मेघ रन्जनी ताल चार ध्रुपद ❀

स्थाई—गंग जटाधारी शिव रमत रास शंकर हर। तीन नेत्र,
त्रिय भवन लिलाट भस्म सोहे, वृषभ को हो सवारी।

शिव। अन्तरा। अर्धनयन रुण्डमाल दृग अम्बर ईश्वर,
हो पाप ताप हारी। महादेव हो मृत्युंजय, उमापती।
शंकर हो, हो त्रिशूलधारी॥ शिव॥

❁ ३७—सतीमोह ❁

गिरिजा ने महादेव से कुछ बूझने काबिल।
हैरानि से की बात जरा आगे किए दिल॥
हे नाथ जगत आपको जपता है मगर आप।
मालापै धरे किसका सुबो शाम करें जाप॥ तब
उत्तर मिला श्रीराम सियाराम सियाराम।
माला पै जपा करता हूँ श्रीराम सुबो शाम॥
तब बोली सती राम जो सीता का दीवाना।
क्या उस पै फिरा करता है रुद्राक्ष का दाना॥
हां प्यारी सती वोही जो दशरथ का सलोना।
दुष्टों की कजा और जो भक्तों का खिलोना॥
सुन कर के हँसी प्यारी सती हद से ज्यादा।
श्रीराम को अजमाने का पुख्ता ले इरादा॥
तब्दील किया सारा जिसम लेके इजाजत।
श्रीराम को देने के लिए पूरी नसीहत॥
सीता की शक्ल बनके बियाबां में उतर कर।
वो जाल बिछाया जो पड़े सबकी अकल पर॥



कुछ देर हुई कहते चले आते हैं राघव।
ओ जानकी ये मौका विछोड़े का न था अब॥
सीते मैं तुझे घर से यकीनन नहीं लाता।
यदि जानता मैं मुझ से बदलता है विधाता॥
गुल हँसते हैं और नाचती बुलबुल है चमन में।
फिरता हुआ मुझे देख के दिवाना सा वन में॥
पूछूं भी तो अब तेरा पता कैसे निकालूं।
हर शै मेरी दुश्मन है जिधर आंख उठा लूं॥ इतने में दे
तो सामने रस्ता पै चली आती है सीता।
लक्ष्मण तो बढ़े पूजने को पांव पुनीता॥
लक्ष्मण तो अभी बढ़ते ही थे सर को झुकाने।
श्रीराम ने पा पकड़ लिए उसके बहाने॥
सीता जी लगीं अपने कदम पीछे हटाने।
श्रीराम उसी तौर लगे हाथ बढ़ाने॥
अलकिस्सा वो सर धर दिया सीता के कदम पर।
लक्ष्मण को बड़ा रंज हुआ ऐसी रसम पर॥
श्रीराम लगे कहने उमां प्यारी उमां मां॥
शंकर को कहां छोड़ के आई हो बियाबां॥
मां! तेरे कदम चूम लूं शंभू का पता दे।
मां कैसे इधर आना हुआ ये तो बतादे॥



मां फिर रही हो घोर बियाबां में अकेली।
लक्ष्मण न सका बूझ ये दोनों की पहेली॥
तब शर्म से सीता ने जरा आँख झुकाई।
इतने में प्रभु राम ने निज लीला दिखाई॥
चौतरफा सियारामो लखन जल्वा नुमा हैं।
येः देख कर के दिल में परेशान उमां हैं॥
चकरा गई मां देख के श्रीराम की माया।
फिर राम ने भी अपना वही दृश्य बनाया॥

ले०—श्री पं० प्रवरमदनमोहनजी शास्त्री "मधुर"
सुल्तान विन्डरोड (अमृतसर) पन्जाब

❀ रागिनी विरहनी ताल कंहरवा ❀

धोदे धोदे रे धोबिनियां मोरी प्रेम की चुन्दरिया।
लेले साबुन लेले पानी काया मलमल धोये।
अन्त के दाग़ नहीं छुटेहैं निर्मल कैसे होय॥ धोदे २॥
सतगुरू ऐसा कीजीये जैसे धोबी होय।
जनम जनम के दाग़ को एक दम देवे धोय॥ धोदे २॥
आगे आगे दुलहा चलते पीछे चले बरात।
बाजा गाजा साथ न जावै राम नाम संग जात॥ धोदे २॥
एक दिन तुमको देखा प्यारे ओढ़े हुये दुशाल।
आज कहां जाते हो प्यारे मूं पैं कफ़निया डाल॥ धोदे २॥

आये थे जब जग के अन्दर जगत हंसे तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो प्यारे तुम हंसो जग रोय ॥ धोदे २ ॥
क्रूर संग चतुराई घटै और दुःख से घटे शरीर।
पाप किये लक्ष्मी घटे कह गये दास कबीर ॥ धोदे २ ॥

❀ ३८—सन्त कबीर ❀

शैर—कहने को एक यूं तो जुलाहे कबीर थे।
लेकिन वो अपने आपही अपनी नज़ीर थे ॥
सूफी थे मुतक्की थे वो रौशन ज़मीर थे।
हिन्दू के देवता थे मुसलमां के पीर थे ॥
इफ्लास के शिकार बला के असीर थे।
दिल में हज़ार दाग़ थे दिलके अमीर थे ॥

मगर घर की हालत—

न खाने को न पीने को गज़ब की फाका मस्ती थी।
कुशादा दिल था लेकिन घर में काफी तङ्ग दस्ती थी ॥
जो उनकी कारगह थी वो गढ़ा था क़ब्र से बदतर।
वो ज़िन्दा गोर में रहते थे ये ताक़ीद पस्ती थी ॥
वहाँ हरतार खद्दर का उधेड़बुन में रहता था।
वहाँ हशरत का अड्डा था वहां अरमां की बस्ती थी ॥
अगर भक्ती में फैय्याज़ी में उनको था कमाल हासिल।
तो उनसे बढ़के उनकी बीबी की शौहर परस्ती थी ॥

लुई की सुन्दरता—

लुई साँचे में विधना ने अपने हाथों से ढाली थी।
एक हुश्न वपा कर देती थी वो सूरत भोली भाली थी॥
दो आंखैं हिरनों वाली थी त्रिन सुरमा डाले काली थी।
चेहरे की छटा निराली थी कुछ जर्दी थी कुछ लाली थी॥
थे परमहंस उनके स्वामी वो साध्वी सती निराली थी।
वो सूख सूख कर काँटा थे ये गुलाब की सी डाली थी॥
भक्तों में कवीर दिवाकर थे वो चन्द्रजोत उजियाली थी।
वो राम प्रेम में पागल थे ये पिया प्रेम मतवाली थी॥

कबीर वो लुई कैसे रहते थे-ध्यान दें

आपस में मुहब्बत से बसर करते थे दोनों।
बुन कातके हर रोज़ गुजर करते थे दोनों॥
पामाल पशोपस्त परीशां थे विचारे।
ग़ैरों को न पर इसकी खबर करते थे दोनों॥
दुनियां में वो रहते थे मगर इससे अलग थे।
ईश्वर का भजन शामो सहेर करते थे दोनों॥
भूखा कोई आता तो वो खुद रहते थे भूखे।
सायल को न मायूस मगर करते थे दोनों॥ हुवा क्या

पद—और कोई धुन न थी बसताने बाने के सिवा।
गुण न था कुछ रामका गुण गुन गुनानेके सिवा॥

साधुओं को साथ ले भगवान आये एक दिन ।
भूख का भी प्रश्न था मिलने मिलाने के सिवा ॥
इम्तहां लेने की आदत तो इन्हें पहले से है ।
उनका मतलब और भी था आजमाने के सिवा ॥
गिर पड़े चर्णों पे गद २ होके भक्तों के कबीर ।
'बीर' कुछ करते भी आखिर सर झुकाने के सिवा ॥

भगवान के आने के बाद—

बिठाये बिछा करके खद्दर के टुकड़े । और कहते हैं
मिलेंगे अगर हैं मुकद्दर के टुकड़े ॥
अजब बेबसी है अजब बेकसी है ।
नहीं घर में दाने नहीं ज़र के टुकड़े ॥
यह कहकर गये भक्त अपने मकां में ।
कहा हाल लुई से कर करके टुकड़े ॥
तमाशा जो दुनियाँ को देते हैं रोज़ी ।
फिरे मांगते "बीर" दर दर के टुकड़े ॥ तब
दोनों कुछ कहना चाहते थे पर ज़ुबां नहीं खुल सक्ती थी ।
ताकते थे कबीर जी लुई को लुई ज़मीन को तकती थी ॥
क०-यूं सोचते हुये कबीर कहे अब क्या तदबीर बताऊं मैं ।
भूखे साधू हैं द्वारे पर क्या लाके उन्हें खिलाऊं मैं ॥

लु०-स्वामी मुझसे क्या पूछते हो मैं नारी निपट अनारी हूँ।
क्या सम्मति दूं मतवारी हूँ दासी हे नाथ तुम्हारी हूँ ॥
क०-मैं और नहीं तू और नहीं मैं साजहूँ तो आवाज है तू।
हमसर हैं हमदम सर है तू हम दर्द है हम हमराज़ है तू ॥

कबीर की बातों को सुन करके लुई कहती है

इजाज़त हो तो कहदूं राज़ कुछ दिल का अयां स्वामी।
तड़पती है दहन में मुजतरिब होकर ज़ुबां स्वामी ॥
लबों पै आके रह जाती है जो तदबीर है इसकी।
ज़ो कहना चाहती हूँ मैं नहीं काबिल बयाँ स्वामी ॥
कहूँ तो किस तरह से किस ज़ुबां से और किस मूं से।
ये भी ताक़त नहीं रक्खूं उसे दिलमें निहां स्वामी ॥
ज़ुबां खुलते ही मुझपर गिर पड़ेगी बिजलियाँ फ़ौरन।
ज़मी हिल जायगी और गिर पड़ेगा आसमां स्वामी ॥
वार्ता - लुई कहते-२ उदास हो गई तब कबीर कहते हैं। कोई बात जरूर है।

शैर-ज़ुबां के बदले मुंह का रंग ही सब हाल कहता है।
ख्याले आबरू चश्मा से पानी बनके बहता है ॥
अश्क़ आँखों से है ज़ारी किस लिये।
लुई इतनी बेक़रारी किस लिये ॥



रन्जोग़म की लग रही हो जब झड़ी।
इस घड़ी फिर अश्क बारी किस लिये॥
सर पड़ी सहनी पड़ेगी ही ज़रूर।
इसलिये ग़म आहो जारी किस लिये॥
तूं अगर कर सक्ती है कुछ इन्तज़ाम।
टाल दूं भूखे भिखारी किस लिये॥ तब
लुई ने कहा—कहनी ही पड़ेगी जो नहीं कहने के काबिल।
बैठा हुआ एक सेठ मेरे हुस्न पै मायल॥
करता नहीं मुतलक़ भी गवारा ये मेरा दिल।
पर त्याग बिना होगी न आसान ये मुश्किल॥

इस लिये

यह एक यतन एक रतन पास है मेरे।
इसको ही लुटा दूंगी जो धन पास है मेरे॥

वार्ता—सन्त कबीर ये बात सुनकर कहते हैं।

सरनगूं होना खुदा के रूबरु चाहता नहीं।
तेरी इज्ज़त खोके अपनी आबरू चाहता नहीं॥
बेच कर अस्मत खरीदें आक़बत वाहरे कबीर।
इस तरह बदनाम होना कूबकू चाहता नहीं॥
मुझको दोज़ख़ ही सही है तू अगर है साथ में।
हुरो गिल्मा बाग़े जन्नत माहरू चाहता नहीं॥



लुई का समझाना—

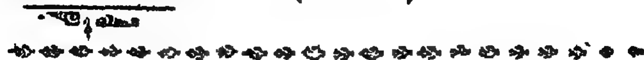
स्वामी इसमें कुछ हरज नहीं स्वामी की खातिर लुट जाऊं।
गोधर्म बिगड़ता है मेरा पर जनम मरण से छुट जाऊं ॥
फिर यह भी निश्चय नहीं है कि मैं बिगड़ूं या सुधरेगा ओ।
सम्भव है मेरी दशा देख कुछ और ख्याल करेगा ओ ॥

इधर क्या हुआ—

पड़ गये कबीर जी उलझन में कुछ पाते थे खोते भी थे।
लुई की स्वामी भक्ती देख हंसते भी थे रोते भी थे ॥
रोने में चारों आँखों के दिल आसमान का हिला दिया।
वह पानी बनकर बरष पड़ा पानी में पानी मिला दिया ॥
आखिर मजबूर कबीर हुये छाती पर पत्थर घर करके।
कन्धे पै बिठाया लुई को कम्बल डाला ऊपर सरके ॥
ऐ भक्त रतन हैं धन्य तुझे मनसे मद लोभ निकाल दिया।
अपना धन माल स्वयंम् लेकर डांकू के घर में डाल दिया ॥

वार्ता—सेठजी के घर पहुंच कर कबीर बाहर खड़े होगये और लुई अन्दर जाती है सेठ अचानक देखकर कहता है। लुई

आलमें ख्वाब है या बख्त की बेदारी है।
आहोज़ारी का असर है दिले आज़ारी है ॥
होगया दौलते दीदार से खुशहाल ग़रीब।
पास प्यासे के कुआं आया है सदशुक्र नसीब ॥



खुदही खिंच आया है बिमार के नजदीक तबीब।
अब न वो दर्द है सदमा है न बिमारी है ॥
आहो जारी. लुई कहती है—
सेठ दौलत नहीं दौलत की तमन्ना हूँ मैं।
प्यास क्या तेरी बुझाऊं लबे तृश्ना हूँ मैं ॥
दर्द हूं दर्द का दरमान मसीहा हूं मैं।
मुझ में जो खूबी है मजबूरी है लाचारी है ॥
आहो जारी का असर है दिले आजारी है ॥
शैर—मेहमान घर में आये हैं सामान घर नहीं।
इज्ज़त नहीं दिया उन्हें खाना अगर नहीं ॥
दे कुछ रकम जरूर तू इनकार कर नहीं ॥
पर्दे की बात है मुझे पर्दा मगर नहीं।
दौलत लुटाने आई हूँ टुकड़ों के वास्ते।
मैं बन गई फकीर फकीरों के वास्ते ॥

वार्ता - तब सेठजी ने कहा लुई आधी रातको और इस वारिस में क्या तुम्हारे ऊपर पानी के छींटे तक नहीं पड़े। लुई कहती है कि सेठजी सुनिये

छींटा पानी का पड़ा नहीं वह छींटा पड़ने वाला है।
इस लोक में भी मुंह काला है परलोक में भी मुंह काला है ॥
क्या हुआ नहीं दो बूंद पड़ी आतिश दिलके भड़काने को।
मेरे आँखों का पानी ही काफी था मुझे डुबाने को ॥



फिर गया आबरू पर पानी देता है परेशानी पानी ।
पड़ गया घड़ों पानी मुझ पर इज्जत से हुई पानी पानी ॥
पानी का पाना मुश्किल है पानी की बहुत सताई हूँ ।
कन्धे चढ़ भक्त कबीर के मैं इस कुयें में गिरने आई हूं ॥

वार्ता –इन शब्दों को सुनकर कबीर के पास सेठ जी आकर चरणों पर गिर कर कहते हैं कि क्षमा: माता क्षमा ।

मेरी अक्ल का ही कुसूर था । मुझे माफ करदो कबीरजी ।
ये कुसूर था वो कसूर था । मुझे माफ करदो कबीरजी ॥
आलम शबाब का जोश था । दौलत से मैं मद होश था ।
थी नशे की बात शरूर था । मुझे माफ करदो कबीरजी ॥
वो जनून सरसे निकल गया । मेरा दिल बदी से बदल गया ।
सब धुल गया जो गरूर था । मुझे माफ करदो कबीरजी ॥
ले लीजिये सब मालो ज़र । कहिये तो करदूं सर नज़र ।
तकसीर वार जरूर था । मुझे माफ करदो कबीर जी ॥

वार्ता इतने ही मे सरकार प्रगट होकर सन्त कबीर से कहते हैं कि कबीर तुम्हारी परीक्षा पूर्ण हुई । वर मांगो जो भी इच्छा होगी दूंगा और अवश्य दूंगा ।

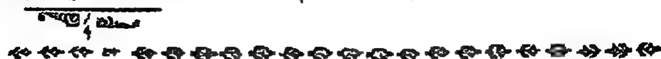
तब कबीर कहते हैं—

मन्जूर है गर देना भगवान ये वर देना ।
इफलास की दौलत से दामन मेरा भर देना ॥



इफ़लास ही ऊपर हो इफ़लास पै सोना हो।
इफ़लास का तकिया हो इफ़लास बिछौना हो॥
इफ़लास का हंसना हो इफ़लास का रोना हो।
इफ़लास से हो तो हो जो कुछ मुझे होना हो॥
इफ़लास है की दुनियां में इफ़लास का घर देना॥ मंजुर हो
भगवान पूछते हैं कि कबीर इतनी गरीबी से क्या फ़ायदा।
कबीर कहते हैं कि भगवान—
पड़ती है इबादत की बुनियाद ग़रीबी में।
होता है किफ़ायत से दिल शाद गरीबी में॥
रहता है बशरग़म से आज़ाद गरीबी में।
आता है मजा सबको फ़रियाद ग़रीबी में॥
इस आखिरी अन्जाम महरूम न कर देना। मन्जूर हो।
सरकार कहते हैं—
वर कठिन कबीर ने मांग लिया भगवान पड़े असमन्जसमें।
हो जाय न गड़बड़ सृष्टी में पड़ गये इसी असमन्जस में॥
निर्धनता सभी इसे दे दूं सृष्टी संचालन कैसे हो।
देने में करूं आना कानी वचनों का पालन कैसे हो॥
बोले संसार के हिस्से में आई जितनी कङ्गाली थी।
आधे से ज्यादा वो पहिले मैंने तुमको दे डाली थी॥
जो चाहोगे मिल जायगा इन्कार नहीं गर मांगो तुम।
इसके अतिरिक्त और सबदूं कुछ और भक्त वर मांगो तुम॥

अच्छा वही दे दो जो अब आपका मन मानें।
दुनियां को मैं पहचानूं दुनियां हमें पहिचानें।
मायूस हों सब हमसे अपने हों या बेगानें।
अपनी ही ये दुनियां हो दुनियाँ के सब ये जानें॥
वह रन्जो अलम देना वह दर्द जिगर देना। मंजूर
हो करके जुलाहः भी श्रीराम से रग़बत हो।
भगवान रटूं तो भी इस्लाम से रग़बत हो।
हिन्दू हमें अपनाय इस बात से रग़बत हो॥
अल्लाह के बन्दों को भी श्रीराम से रगबतहो।
और 'वीर' की भाषा में भी जादू का असर देना॥ मंजूर
आख़िर में हुवा वही जो कबीर चाहते थे। क्या
जिस वक्त कबीर नींद सुख की मृत्यु शैय्या पर सोते थे।
वह क़ाबिलदीद नज्ज़ारा था पत्थर दिल वाले रोते थे॥
अनमोल रतन था भारत का ये चर्चा थे ये कहते थे।
हिन्दू हो या हो मुस्लमान दोनों के आंसू बहते थे॥
भारत की गोद हुई खाली माता का एक सपूत चला।
भाई भाई में जंग हुई सज धज कर जब ताबूत चला॥
हिन्दु कहते थे हिन्दु था हम अग्नि बीच जलायेंगे।
अहले इस्लाम का दावा था था मुस्लमान दफ़नायेंगे॥
दोनों की बातें सच्ची थीं दोनों ही हक़ पर लड़ते थे।
दोनों के पास दलीलें थीं दोनों ही ठीक झगड़ते थे॥



बातों बातों में बात बढ़ी बढ़ते बढ़ते तकरार हुई ।
खूंरेज़ी की नौबत आई आपस में मारा मार हुई ॥
भाई भाई की मारकाट आखिर कुदरत को भाई नहीं ।
गुमहो गई लाश जनाजे से ढूढ़ा तो कहीं भी पाई नहीं ।
होगया फैसला दोनों का बस आधा २ कफ़न लिया ।
हिन्दू ने उसको जला दिया और मुस्लमान ने दफ़न किया ॥

* बोलो भक्त और भगवान की जय *

ले०—श्री "वीरजी" सहोदय पञ्जाब

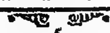
❀ रागिनी भैरवी ताल कँहरवा दादरा ❀

संवरिया तेरे लिये योगिन मैं बन जाऊँ ।
योगिन बनकर बन बन डोलूं तेरे ही गुण गाऊँ ।
निज उरकी कम्पित बीणा पर प्रेम का राग सुनाऊँ ॥ यो० ॥
निठुर जगत के कोलाहल से दूर कहीं चल जाऊँ ।
निर्जन बनमें कुटी बनाके तेरा ध्यान लगाऊं ॥ यो० ॥
पुतली का प्याला कर प्रीतम दृग झोली लटकाऊँ ।
दर्शन भिक्षा चाह हृदय में घर घर अलख जगाऊं ॥ यो० ॥
ना मैं और किसी को देखूं ना तुमको दिखलाऊं ।
मन मन्दिर का बन्दी करके नैन कपाट लगाऊं ॥ यो० ॥

३९—महासती देवी कौशकी तथा मान्डव ऋषी

लिखा है पुरानों मे एक कौशिकी नारी थी ।
पतिव्रता थी वो पति भक्ति उसे प्यारी थी ॥

पति आंख से अन्धा था. मगर आंख का तारा था।
कंगाल था कोढ़ी था मगर जानसे प्यार था॥
समयन्धी छुटे छुटा था घरवार सती से।
सब कुछ तो गया पर न गया प्यार पती से॥
मांडव ऋषि नेज़ों के ये सेज विछाये।
जंगल में रहा करते थे तन भस्म रमाये॥
गुजरी वह उधर से वहां पतिदेव को लेकर।
तपसी को लगी अन्धे के जब पांव की ठोकर॥
बस पांव के लगते ही छुटा ध्यान प्रभु का।
अन्धे की तरफ क्रोध भरी आंख से देखा॥
बोले कि इस अपमान का बदला अभी लेताहूं।
मैं तपोबल से अपने तुझे शाप ये देता हूं॥
ऋषियों के निरादर का बना है ये सबब तू।
कल सूर्य उदय होते ही मर जायगा तब तू॥
सुनकर ऋषी का शाप सती बिल बिला उठी।
लुटता सुहाग देखकर व थर थरा उठी॥
पांऊ पड़ी ऋषि के कहा कैसा रोप है।
ठोकर लगी है मुझसे तो क्या इनका दोष है॥
बस श्राप अब न दीजिये अनजान के लिये।
मुझको ही छमा कीजिये भगवान के लिये॥
बोले ऋषी गरज के कि बस चुप हो बेशऊर।
गर चाहती है खैर तो आंखों से रहे दूर॥





बोली सती कि आपको तप पर तो नाज़ है।
मुझको भी अपने स्वामी की भगती पे नाज़ है॥
जा बल दिखाओ औरों को नैनो की सेज से।
सूरज को निकलने न दूंगी अपने तेज से॥
सूरज के उदय होते ही स्वामी जो मरेगा।
तो मैं भी प्रण ये करती हूँ सूरज न उगेगा॥
शक्ति है पति भगती मे क्या आज दिखा दूँगी।
ओ शमाए आलम तुझे पल भरमेंबुझा दूंगी॥
बे नूर हुआ सूरज उदय होते से घबराया।
दुनियां में अन्धेरा था प्रलय का समय आया॥
दुनियां के सभी जीव लगे खौफ से डरने।
पानी भी समुन्द्र का लगा पृथ्वी पे चढ़ने॥
कहने पे देवताओं के अनुसूया आती है।
आकरके बहिन कौशिकी को यही समझाती है॥
दुनियां में कोई मरने से बचेगा न बचा है।
हां एकके मरने से जगत बचता है तो अच्छा है॥
कौशिकी बोली बहिन किसको तू समझाती है।
नारी होते हुए क्यो नारी को कल्पाती है॥
मानूंगी तेरा कहना सूरज ऊग ही आएगा।
मेरे सुहाग का तो चांद डूब जाएगा॥
अनुसूया बोली बहिन मैं करती हूं प्रण अभी।
तेरे पति का होने न दूंगी मरण कभी।



अनुसुया ने जब गेरवे वस्तर की कसम ली।
सूरज उदय हुवा मगर विधवा थी कौशिकी॥

वार्ता—उसी वक्त भगवान कौशिकी को दर्शन देकर

सूरज की रौशनी से कुल "आलम" को भर दिया।
मुरदा पति था कौशिकी का जिन्दा कर दिया॥



सम्पादक श्रीव्याकुलजी महाराज
अन्वेषण कर्ता श्रीरामचरितमानस

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की लेखनी से

❀ ४०—चकोर---चकोरी ❀

श्रीरामचन्द्रजी महाराज चकोर बने।

चौ० बाल०-मानो मदन दुंदुभी दीन्हीं।
मनसा विश्व विजय कहँ कीन्हीं॥
अस कहि फिर चितये चहुँ ओरा।
सियमुख शशि भये नयन चकोरा॥

तब-श्रीमहारानीजी सरकार चकोरी बनी।

चौ० बाल०-थके नयन रघुपति छवि देखी।
पलकनहू परि हरी निमेखी॥



अधिक सनेह देह भई भोरी।
शरद शशिहि जनु चितव चकोरी॥

इसके बाद सहबाला श्रीलक्ष्मणजी चकोर बने-ध्यानदें

चौ० बाल०—सिय छिय सुख बरणिय केहि भांती।
जन चातकी पाइ जल स्वाती।
रामहिं लखन बिलोकत कैसे॥
शशिहि चकोर किशोरक जैसे॥

रह गये श्रीविश्वामित्रजी महाराज, वो तो पहले ही चकोर बन चुके थे।

चौ० बाल०—मुनि चरणन मेले सुतचारी।
राम देख मुनि बिरति बिसारी॥
भये मगन देखत मुख शोभा।
जनु चकोर पूरण शशि लोभा॥

साथ ही श्रीजनकराज विदेह भी नहीं चूके चकोर बनही गये कब जब सरकार का साक्षात्कार हुवा तब।

चौ० बाल०—ब्रह्म जो निगम नेत कहि गावा।
उभय वेष धरि सोई की आवा॥
सहज बिराग रूप मन मोरा।
थकित होत जिमि चन्द चकोरा॥

साधु सन्त भी चकोर थे—

राम कथा शशिकिरण समाना।
सन्त चकोर करैं जेहि पाना॥

श्रीसुनयनाजी भी चकोरी थीं-

बिगत मास भईं सीय सुखारी।
जनु शशि उदय चकोरि कुमारी॥

साथ सब बराती, ऋषी, मुनी, राजा, प्रजा, नचनियां बजनियां इत्यादि सब चकोर बन चुके थे (प्रमाण)

दो० बाल०--रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि, लोचन, चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेमप्रमोद न थोर॥

ध्यानदें-श्रीचक्रवर्ती दशरथजी भी चकोर बनने से पिछड़े नहीं आप भी श्री अयोध्याकाण्ड में बनही गये।

चौ० अयोध्याका०--जानसि मोर स्वभाव बरोरू।
तव मुख ममदृग चन्द चकोरू॥
प्रिया प्राणसुत सर्वस मोरे।
परिजन प्रजा सकल बस तोरे॥

इतनाही नहीं। सरकार का दर्शन करके बन प्रकरण में मार्ग के नर नारियों की क्या दशा थी विचार करें।

चौ० अयोध्याका०--मुदित नारि नर देखहिं शोभा।
रूप अनूप नयन मन लोभा॥

इक टक सब जोहहिं तेहि ओरा।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा॥

धन्य २ श्रीगोस्वामीजी महाराज मानस में कोई भी बाकी न रहा जो चकोर न बना हो जैसे सन्त, महात्मा, देवता, स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध इत्यादि २ कहीं न कहीं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सबही भगवान के प्यारे भक्त चकोरी या चकोर बने देखिये आरण्यकाण्ड में।

दो० आरण्यका०--मुनि समूह में बैठि, सम्मुख सबकी ओर।
शरद इन्दु तन चितवत, मानहु निकर चकोर॥

धन्य धन्य श्रीगोस्वामीजी महाराज आपने यथोचित सबको चकोर बनाते २ अपनी रामायण का भी चकोर जगत को बना दिया।

❁ ४१—जयचन्द ❁

नौ शताब्दियाँ पूर्व दशा भारत स्वतन्त्र था अपना।
देख रहे थे तभी नीच कुछ देश द्रोह का सपना॥
पुत्र विहीन जो अनङ्गपाल थे दिल्ली के वो शासक।
वे स्वतन्त्रता शान्ति स्नेह के थे प्रयाप्ति उपासक॥
बूढ़े थे वो शक्ति नहीं थी राज काज करने की।
सोच रहे थे घड़ी निकट ही है अपने मरने की॥

पृथ्वीराज भूपको उनने पात्र ठीक ठहरा कर।
निज उतराधिकार दे दिया शासन सूत्र थमाकर॥
नीच प्रकृति "जयचन्द" नृपतिको पर यह बात न भाई।
उसके लिये हुई यह घटना लज्जास्पद दुखदाई॥
पृथ्वी को जयचन्द तभी से दुश्मन मान चुका था।
नीचा उन्हें दिखाने को वह मनमें ठान चुका था॥
रचा के जब जयचन्द नृपति ने संयोगिता स्वयंम्वर।
तब पृथ्वी की मानहानि का किया खूब आडम्बर॥
दिया निमंत्रण तक न वरना उनकी प्रतिमा बनवाकर।
उसे जगह पर द्वार पालकी खड़ाकर दिया लाकर॥
पृथ्वीराज भूप मानी थे वे झट अवसर पाकर।
नौ दो ११ हुये वहां से संयोगिता हराकर॥
फल स्वरूप इसके फिर क्या था जमकर हुई लड़ाई।
हारगया जयचन्द और पृथ्वी को मिली बड़ाई॥
पछताता जयचन्द रह गया लेकर सूरत रोती।
इस घटना ने उसके मुँ पर दोहरी कारिख पोती॥
दुराग्रही जयचन्द भूपने किन्तु न मुंह की खाई।
वरना शत्रुता की सरगर्मी उसने और बढ़ाई॥
देशी राजाओं को उसने जा-जाकर उकसाया।
हिला-मिलाकर दिल्लीश्वर से, कितनों को लड़वाया॥
किन्तु हार ही गये अन्त मे, देशी नृप लड़-लड़कर।
असफल ही जयचन्द रहा, कुविचारों में पड़-पड़कर॥



विजयी पृथ्वीराज भूप को, रह न गया था अब भय।
दबा चुके थे सब प्रकार वे, क्योंकि सभी को निश्चय ॥
था न किसी के लोहा ले सकने का उनको संशय।
इसी लिए वे कर न रहे थे, रणोद्योग का संचय ॥
जब दिल्लीश्वर राग-रंग में, सब कुछ भूल रहे थे।
आशा-तरु जयचन्द भूप के, तब भी फूल रहे थे ॥
जन्मजात वह शत्रु चूकता भी क्यों अवसर ऐसा?
सूख-साख काँटा रहता है जैसे का ही तैसा ॥
अब पयान जयचन्द नृपति ने, बस विदेश का बांधा।
यवन मुहम्मद गोरी को ही उसने जाकर साधा ॥
बोला-"दिल्लीश्वर" पर जाकर, करदो अभी चढ़ाई।
मददगार देशी नृप होंगे, लेंगे सभी लड़ाई ॥
चलो, चलें चौहान-वंश के छक्के आज छुड़ा दें।
दिल्ली का साम्राज्य छीनकर उसका गर्व मिटा दें ॥
बनी रहेगी अमर मित्रता, मेरी और तुम्हारी।
दिल्ली की यह विजय रहेगी, उसकी एक चिन्हारी ॥
जब जयचन्द देश द्रोही को यवनराज ने पाया।
'घर-भेदी लंका-छेदी' को उसने तब अपनाया ॥
इसी विभीषण के बल उसने भीषण युद्ध मचाया।
भारत से साम्राज्य हिन्दुओं का कर दिया सफ़ाया ॥



❁ ४२—व्याख्या चूड़ामणि ❁

चूड़ामणि उतार तब दयऊ ·· ······ कब

दो०·करके भूषण भेजकर, मानो कर गह लीन्ह ।
सिरके भूषण भेजकर, चरण शीश धर दीन्ह ॥ तो

जब यह जोड़ बराबर भयऊ-तब चूड़ा, अथवा

चौ०-ये प्रण कीन्हों निश्चरनाथा, मास दिवस में काटब माथा ।
प्राणनाथ जीवन रघुनाथा, अपनी कृपा बढ़ावहु हाथा ॥

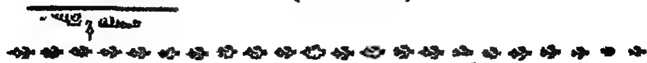
क्योंकि–सिर न रहेऊ भूषण कहँ रहेऊ–इसलिये चूड़ा अथवा

दो०–कौशिल्या इन्द्राणिने, चूड़ामणि यह दीन्ह ।
जहां कहीं भूषण रहे, कभी न हारे लीन्ह ॥

तब-चौ० चूड़ामणि सीता जो पाई, कौशिल्या दई मुँह दिखलाई ।
तो –सीता मनमें यही विचारी एक मास में रावण मारी ॥
और न चरण कभी मैं निहारौ, शीशकाट पृथ्वी पर डारी ।
तो–चूड़ामणि लंका रह जाई, तब कोई रावन मार न पाई ॥
तब प्रभु पै यह भेजन चहेऊ, इसलिये चूड़ा अथवा

चौ०-मासदिवसकाटहिं सिररावन,गिरहिं तबहिं रिपुचरनअपावन
तब प्रभु कर होइहि अपमाना- यह विचार सीता उर आना
जब यह ज्ञान हृदय उर भयऊ, तब चूड़ा । शंका ।

दो०-चूड़ामणि सोहाग था, जनकसुता क्यों दीन्ह ।
ब्रह्मचारी हनुमान थे, चूड़ामणि क्यों लीन्ह ॥



* समाधान *

चौ०-लंकागमन कीन्ह कपिनाथा, चले हर्ष हिय धरि रघुनाथा।
सोई हिय वसी साँवली सूरत सीता देखि लीन्ह सोइमूरत।
जब हनुमान चरण धरिमाथा, हियेमध्य देख्यो रघुनाथा,
पति स्वरूप को देखत भयऊ इसलिये चूड़ा अथवा।
अपने लिये न मांगेउ लीन्हा, मातु मोंहि दीजै कछु चीन्हा,
मातु शब्द जब सीता सुनेऊ, हृदय-प्रेम प्रेममय भयऊ।
जब यह ज्ञान मातु ह्वै गयऊ, इसलिये-चूड़ा शंका
दो०-और शब्द को छोड़कर, मातु कहा क्यों जाय ॥ सवाल ॥
कि-शास्त्र की मर्य्यादा कहीं, आगे मिट नहिं जाय ॥ जवाव ॥
कि—मातृ वत् परादारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत।
आत्मवत् सर्वभुतेषु, यः पश्यति स पण्डितः ॥ अथवा ॥

❀ माँ का कलेजा ❀

लें० श्रीपं० बुद्धिचन्द्रजी महाराज (पियूषमुनि) "अमृतसरी"

आह मस्तानी जवानी में भरा इक नौजवाँ।
झूमता बाजार में पहुंचा तो पाया दर्मियां ॥
नागहां इक नाजनी ने तीर मारा जोड़कर।
दिल हुवा काबू से वाहर लगगई उस पर नजर ॥
उस परीने हंसके थोड़ा उसका जी वहला दिया।
और काकुल की कटारी से उसें पटका दिया ॥

ठीक जब जाना कि अब हरकत का इसमें दम नहीं ।
इसके जख्मो के लिए मेरे सिवा मरहम नहीं ॥
तब कहा मुझसे मुहब्बत गर तुझे दरकार हो ।
तो मेरी इस बात पर तेरा न कुछ इसरार हो ॥
चीर कर मां का कलेजा तू अगर ला दे मुझे ।
तो मैं शौहर ही बना लूं जिन्दगी भरको तुझे ॥
आंख में उन नागिनी जुल्फो का जौहर भर गया ।
आंख का अन्धा छुरा हाथों में लेकर घर गया ॥
आह जालिम को उमर भर लाड लडवाती रही ।
अपनी छाती का जिसे वो दूध पिलवाती रही ॥
थपकियां देकर जिसे आंखों पै बिठलाती रही ।
गन्दगी पेशाब में जिसके वो सो जाती रही ॥
सो रही मां के कलेजा में छुरा धसका दिया ।
उसको मछली की तरह से बे वजह तड़पा दिया ॥
काट कर मां का कलेजा हाथ मे थामे हुये ।
ले चला अपना वो खामोसी से मुंह थामें हुये ॥
राह में ठोकर लगी चलते हुये तो गिर पड़ा ।
आह भर कर हाथ से मां के कलेजा ने कहा ॥
ओ मेरी आंखों के तारे ओ मेरे लख्ते जिगर ।
ओ मेरे नाजों के पाले ओ मेरे प्यारे पिसर ॥
हो गया पानी कलेजा इस तरह कहते वहीं ।
ऐ मेरे बेटा बता कुछ चोट तो आई नहीं ॥

इसलिए, जब यह जानी परम पुनीता,

पुत्र भाव देखत भईं सीता ।

क्योंकि—पुत्र से माता ममता करेऊ,

यही भाव तुलसी लिख दयऊ ।

इसलिये—चूड़ा मणि उतार तब दयऊ

शंका

दो०—पतिव्रता तिय आभरण, सदा निकाले देत ।

यहाँ उतारन शब्द क्यों तुलसीदास लिखि देत ॥

समाधान

पतिसंग थी जब विपिन में, था भूषण सिंगार ।

होते ही पति वियोग में, भूषण हो गए भार ॥

चौ० भार निकालन कोई न कहेऊ, भार उतारन सब कोऊ कहेऊ

भार रूप भूषण सिय जानी, दीन्ह उतार हियहिं हर्षानी ॥

तो यही भाव सीता उर भयऊ ।

इस लिये—चूड़ामणि उतार तब दयऊ ॥

दो -रमणी मणि के पास में, चूड़ामणी लखाय ।

रघुकुल मणिके पास में, करमणि सदा सोहाय ॥

चौ०—रमणी यहाँ पै मणी पठाई तब यह मणी तीन ह्वै जाई ।

तब माता जी ने विचारा

दो०—रघुकुल मणि बिन मणि भयो, सोहत नहिं संसार ।

चूड़ामणि को भेज दूं, सीता यही विचार ॥ अथवा

मणि मुंदरी मे राम का, बना हुआ था चित्र ।
सिय के चूड़ामणी मे, थे वो परम पवित्र ॥
यह बिचार सीता उर भयऊ ।
इसलिये चूड़ामणि उतार तब दयऊ ॥
प्रभु के करमे मुन्दरी सिय ढिग दी पहुंचाय ।
चूड़ामणि के मिलत ही, चले हर्ष कपिराय ॥

॥ ग्यारहवां भाग ॥

❀ रागिनी प्रदीपकी ताल तीन ❀

सबसे ऊंची प्रेम सगाई ।
दुरयोधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर खाई ॥
मीठे फल शेवरी के खाये बहु विधि स्वाद बताई ।
प्रेम के वस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई ॥
राजसु-यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो तामे जूंठ उठाई ।
प्रेम के बस पारथ रथ हाँक्यो भूलि गये ठकुराई ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी बृन्दावन, गोपियन नाच नचाई ।
"सूर" कूर यहि लायक नाही, कहँ लगि करौं बड़ाई ॥

❀ ४३—सती शेवरी ❀

दो०—प्रेम प्रभू ने देखकर, नहीं लगाई देर ।
शेवरी के ही हाथ से, प्रभु ने खाई बेर ॥



दोनों ही मिल गये थे, भक्त और भगवान।
सच्ची भक्ती जानकर, आप हुये मेहमान॥
"व्याकुल"

चौ०—शेवरी देखि राम गृह आये।
मुनि के बचन समुझि जिय भाये॥
सरसिज लोचन बाहु बिशाला।
जटा मुकुट सिर उर बनमाला॥
श्याम गौर सुन्दर दोऊ भाई।
शेवरी पड़ी चरन लपटाई॥
श्रीगोस्वामीजी

जो मर्ज़े मुहब्बत से कमजोर थी वो।
मगर भाव था दिल में शहजोर थी वो॥
वो पहलू में कुछ बेर रक्खे पड़े थे।
जो देखा तो श्रीराम लच्मण खड़े थे॥
तो चरणो से लिपटी उठी होश आई।
खड़े थे श्रीरामोलखन दोनों भाई॥

वार्ता-भगवान ने अपने कर कमलों से शेवरी को अपने चरणों पर से उठाया और अपने बल्कल वसन से उनके आंसू पोंछ कर बोलेः—

चौ०—कहि रघुपति सुनि भामिनी बाता।



मानहुं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई ।
धन बल परिजन गुण चतुराई ॥
भक्ति हीन नर सोहै कैसे ।
बिन जल बारिद देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहहुं तोहि पाहीं ।
सावधान सुन धरु मन माहीं ॥
प्रथम भक्ति संतन कर संगा ।
दूसरि रत मम कथा प्रसंगा ॥
गुरु पद पंकज सेवा, तीसरी भक्ति अमान ।
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान ॥
मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
षट दम शील विरत बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जन धर्मा ॥
सतईं तब मोहि मय जग देखा। मोते सन्त अधिक कर लेखा
अष्टम यथा लाभ सन्तोषा। सपनेहु नहिं देखे परदोषा ॥
नवम सरल सबसों छल हीना। मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एकहु जिनके होई। नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सो अतिशय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई। तो कह आज सुलभ भई सोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥
"श्रीगोस्वामीजी"



अचानक—ये देखा प्रभुने कि घबड़ा रही है।
कि स्वागत करूं क्या ये मनला रही है ॥
वार्ता तब सरकार ने कहा—
ऐ शेबरी वो ला बेर यूं राम बोले।
लिये आगे रक्खे और हाथों में तोले ॥ तब ॥
दो०—कन्द मूल फल सरस अति, दिये राम कहु आनि।
प्रेम सहित प्रभू खायहू, बारम्बार बखान ॥
फिर दृष्य क्या था !
वो दिये जा रही थी प्रभु खा रहे थे ॥
प्रभु साथ ही साथ गुण गा रहे थे ॥
वार्ता—भगवान रामचन्द्र मर्य्यादा पुरुषोत्तम अवतार थे इसी लिये यहां भी उन्होंने अपनी मर्य्यादा निभाई। कहते हैं
ऐ लक्ष्मण तो खा इनमें उल्फत की बू है।
नहीं बेर ये दीन की आरजू है ॥
तो लक्ष्मण ने वो बेर पीछे गिराये।
ये समझा प्रभु की तो दृष्टि न आये ॥
पीछे को फेंक तो दिया मगर दिल में कुछ खटका बना रहा।
अन्तरयामी की आंखों से यह राज भला कब छुपा रहा ॥
एक मर्तबा सरकार ने क्षमा करके फिर कहा—
कहा राम ने कि कुछ और लोगे।
नहीं ऐसे मीठे कभी खाये होंगे ॥

तो लच्मण ने वो भी कहीं फेंक डाले।
ये किस प्रेम के हैं न देखे न भाले ॥

उस समय भगवान को सहन नहीं हुआ और कहा

ऐ लच्मण भगत का निरादर किया क्यूं।
ख्याल ऐसा दिल में समाया तेरे क्यूं ॥
ये है नीच जाती ये ही तुमने जाना।
भरी इसमें उल्फत ये कुछ न पहिचाना ॥
तो जा! तुझको किसी वक्त मुर्छा जो होगी।
ये हां बेर सँजीवनी बूटी होगी ॥
मशक्कत से उसको तो लानी पड़ेगी।
कहीं जाके फिर तेरी मुर्छा टलेगी ॥

इस लिये तो—

जब मुर्छा लगी थी लच्मण को तब हनूमान वह लाये थे।
तब इसी बेर की बूटी ने लच्मण के प्राण बचाये थे ॥
जो कुछ हो यही कहेंगे हम यह भाव यहां का ऊँचा है।
लेखनी यहां की नीची है भक्ती का दर्जा ऊँचा है ॥

ध्यान दें.........."श्लोक प्रमाण"

फलानि च सुपक्वानि मूलानि मधुराणि च।
स्वयमास्वाद्य माधुर्य परीक्ष्य परिभक्ष्य च ॥



पश्चान्निवेदयामास राघवाभ्यां दृढ़व्रता।
फलानास्वाद्य काकुत्स्थः तस्यै मुक्तिं परां ददौ॥
(पद्म पुराण)

भूले नहीं

वार्ता— शेवरी बनके पके हुये कन्द मूल फल जो चख चख कर लाई थी वही भगवान को प्रेम से खिलाने लगी। और प्रभू प्रेम से पाने लगे॥

❀ ४४—वीर दुर्गादास राठौर ❀

औरङ्गजेबी जेहल में राठौर दुर्गादास था,
शायरों के वास्ते ये चुल्बुला इतिहास था
किसकदर जकड़े हुए थे दस्तोपा जंजीर से,
कह रहे थे खड़खड़ा कर वीर की तकदीर से
अब बता तेरा बने क्या अय मुहिब्बाने वतन,
सोच ले अपने छुड़ाने के लिये कोई यतन।
ठीक ऐसे वक्त पर आहट पड़ी कुछ कान में,
एक बिजली सी फटी उस जेल के मैदान में
देख करके जल मरें ईमान भी शैतान में,
मच रहा झगड़ा था आलों और सनम की रान में
एक दम से चौंक कर मारी नज़र जब उस तरफ
उस तरफ से भी लबों से एक दो निकले हरफ

मस्त हो करके कहा बस जान से प्यारा है तू,
शाह की बेगम के पहलू का ही नजारा है तू।
देखले जौहरी इधर हीरा हूँ मैं कश्मीर का,
हो चुका हूँ मैं नजर तेरी निगाहे तीर का
खातमा औरङ्ग का इक जहर की चुटकी में है,
तू मुझे अपनी बना ले येः तमन्ना जी में है,
तखत का मालिक बना दूंगी सहर होते ही मैं,
लाश पटका दूंगी उसकी बेखबर होते ही मैं।
शेरेनर यूं थूंक कर बोला परे हट बेहया,
धोखेबाजी से न मुझको तख्त का मालिक बना
सुनते ही त्यूरी बदल बेगम ने इशारा किया,
झट किसी ने तानकर पिस्तौल सीधा कर लिया
सामने राठौर भी बैठा है सीना तान कर,
है किसी इन्सान ने पिस्तौल छीना आन कर।
था सिपासालार कोई लश्करे औरङ्ग का,
है नजारा उसकी आंखों में नये ही ढङ्ग का।
हथकड़ी बेड़ी से उसको खोल कर सिज़दा किया,
उस मुसिलमां ने उसे था पीर का रुतबा दिया।
प्यारे दुर्गादास हूँ कुर्बां तेरे ईमान पर,
तेरी खातिर खेल जाऊंगा मैं अपनी जान पर

उस परीरुह के तो रुखसारों पै ज़रदी छा गई,

अपनी हसरत दिल में लेकर वो भी वापिस आगई।

श्रीपियूष मुनि जी महाराज

❀ पञ्च-सती ❀

(१)

❀ सावित्री ❀

मनसे वरण एक बार जिसका है किया,

शरण उसीकी ले बढ़ाती वहीं रतिको,

होवे अल्पजीवी या अनेक कल्पजीवी वर,

पर उस ओर से हटाती नहीं मतिको।

धर्मबलसे ही धर्मराजको सदल जीत,

अदल-बदल देती विधिकी नियतिको,

नित नतभाल होके करती सँभाल सती,

कालके भी मुखसे निकाल लाती पतिको॥

(२)

❀ शैव्या ❀

तन-मन-प्राणसे सतत अनुगामी रह,

स्वामी के न सत्य और धर्मको निभाती जो,

भारी ऋण-भारको उतार कैसे पाते प्रिये,
चेरी बन विप्रकी न आप ही विकाती जो।
आते देव होकर अधीर क्यों ? पतिव्रता न-
चीर निज चीर सुत-कफन बनाती जो,
'हरिश्चन्द्रचन्द्र'–से चमक उठते क्या ? नहीं
शैव्या के सतीत्वकी अमंद रश्मि आती जो ॥

(३)

❋ सीता ❋

सेवा हाथ आये वनमें भी प्राणनाथकी जो,
साथ-साथ मनमें मुदित वहाँ जातीं ये,
सोनेके सुमेर मिलें, वरुण कुबेर मिलें,
ढेर मिलें रत्न-राज्य, तो भी ठुकरातीं ये।
कर अपमान नहीं बचता दशानन भी,
लङ्कापुरीकी भी धुरी धूलमें मिलातीं ये,
शिक्षा हेतु, स्वर्ण-से सतीत्वकी परीक्षा हेतु,
ज्वलित चिताग्नि बीच जीते-जी समातीं ये॥

(४)

❋ दमयन्ती ❋

आये द्वार देवों को विसार प्यार-प्रेरित हो,
निज प्रिय कंठमें पिन्हाती जयमाला है,

दीनदशा पतिकी विलोक लोक-लाज त्याग,
साथ नाथ के ही रह सहती कसाला है।
तुल्य पतिव्रतके न मानती अमूल्य धन,
प्राण दे-दे पाला, उसे सतत सँभाला है,
आये कालनाग या सताये विकराल व्याध,
दग्ध किये डालती सतीकी क्रोध ज्वाला है॥

(५)

❀ देवहूति ❀

राज-तनयासे मुनिराजकी वधूटी हुई,
छूटी हुई संपदाकी किन्तु नहीं चाह है,
निज पतिदेवके सदैव लगी सेवनमें,
सीमाहीन प्रणय--पयोनिधि-प्रवाह है।
गाते गुण-गौरव अघाते नहीं देववृन्द,
रम्य रूप-शीलकी अनूप धूप छाँह है,
प्यार मिला प्रियका अपार वैभवों के साथ,
महिमा सती की अहो ! अमित अथाह है॥
"कल्याण से"

❀ जौहर ❀

शौहर को भेज रण, आप व्रत जौहर ले,
जौहर सतीत्वका सुदिव्य दरसा गयीं।

अगणित बाला गले बीच मीच–माला मेल
भव्य देहको ही हव्य–आहुति बना गयीं ॥
दुर्ग-यज्ञशाला में हुताशन की ज्वाला बीच
होम अपने को, व्योम–रन्ध्रमें समा गय ।
नारी-मेध रचके सुमेध्य यश भारी लिये
वेध रवि-मण्डल अवेध पद पा गयीं ॥१॥
क्षण भी जिन्होंने नहीं पाया पति–स्वागत का
सुन्दरी नवागत नवोढ़ा नयी नारियाँ ।
प्रान-संग आकुल अधूरे अरमान लिये
साध-भरे हियकी सजाये फूल–क्यारियाँ ॥
फूलकी भी चोट जिन्हें शूल-सी असह्य होती,
होनीवश सहज सलोनी सुकुमारियाँ ।
ब्याहका उछाह मनही में लिये आह भर
ज्वाला में जली थीं, जहाँ कितनी कुमारियाँ ।२।
राजपूतनी थीं, पूत नीति उनकी थी दिव्य,
जानकी-सी जानभी न भीति मन लाईं वे ।
पावन पतिव्रत अपावन नरोंसे बचा,
दुर्ग-सम दुर्गम चिताकी ओर धाईं वे ॥
पेज इतिहास का सुवर्ण-अक्षरों से सजा,
सुकृत सहेज तेज–निधि में समाईं वे ।



मान सतियों का, पतियों का अभिमान राख,
राख बनकर भी शत्रुओं के हाथ आई वे ॥३॥

'राम'

❀ बीकानेरी वीराङ्गना ❀

रानी पृथिराज की निहारति सिंगार हाट,
पारति सु दीठि गथ विविध बिसाती पै।
कहै रतनाकर फिरी त्यों फँसो फंद बीच,
लपक्यौ नगीच नीच धरम अराती पै॥
परसत पानि अनवान राजपूती आनि,
औचक अचूक घात कीन्हीं घूमि घाती पै।
चटकि चटाक कर पटकि धरा पै धरी,
काती-नोक गब्बर अकब्बर की छाती पै॥ ४॥

❀ महारानी लक्ष्मीबाई ❀

पीठि बाँधि बालक बिराजि बर वाजि ईठि,
जाकी दौर देखि दीठि छलित छली गयी।
कहै रतनाकर विपच्छिनिके कच्छिनि सौं,
लच्छमी प्रतच्छ अच्छि आगे निकली गयी॥
अचल उदंड बरिवंडनिके मंडल मैं,
डंड लौं अखंडल के खंडत हली गयी।

झारति कृपान सौं गुमान ज्वान जंगिनि के,
फारत फिरंगिनि के फर कौं चली गयी ॥ ५ ॥
दो०—किरन सिंहनी सी चढ़ी, उर पर खींच कटार।
भीख माङ्गता प्राण की, अकबर हाथ पसार ॥

❀ नारी के दो रूप ❀

(रचयिता—श्रीछोटेलालजी मिश्र)

एक वे नारी, जिन संतति विद्वान होत,
एक वे नारी, जिन संतति अनारी हैं।
एक वे नारी, जो घर तन सफाई राखें,
एक न न्हायँ, देयँ घरमें ना बुहारी हैं ॥
एक वे नारी, जो बालकको डराय राखें,
एक वे कायरको बनावें बलधारी हैं।
एक वे नारी, बिना पढ़ी लिखी पालें धर्म,
"छोटे" एक, ठोकर धर्म ऊपर जिन मारी हैं ॥ १ ॥
एक वे नारी, बन पठावें सौत-लालनको,
एक वे नारी भेजें सौति संग अपना।
एक वे नारी, जो विषय में लिप्त रहें,
एक वे त्याग सब हरी नाम जपना।
एक वे नारी, जो मोह, ना बिसारि सकें,
एक वे, बिसारें मोह, समझें जग सपना।



एक वे नारी, जो दोऊ कुल तारि देयं,
'छोटे' एक नारी, जो न तरि सकें अपना ॥ २ ॥
एक वे भोर होत ईश्वर-गुणगान करें,
एक वे देन लगें भोर होत गारी हैं ।
एक वे नारी, जो दाता और दानी जनें,
एक वे नारी, जनें चोर और ज्वारी हैं ॥
एक वे, जिनके पूत देश-धर्म-रक्षक जो
एक वे जिन्न---जमदूत उन्हारी हैं ।
'छोटे' द्विज चाहो कल्याण तो सुधार लेहु,
कर्ता और कारण तो हमारी महतारी हैं ॥ ३ ॥

❀ कबित्त ❀

पति ही सों प्रेम होय पति ही सों नेम होय,
पति ही सों छेम होय पति ही सों रत है ।
पति ही है जोग यज्ञ पति ही में रस भोग ।
पति ही सों मिटै सोक पति ही को जत है ॥
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुन्य दान ।
पति ही है तीर्थ स्नान पति ही को मत है ॥
पति विनु पति नहीं पति विनु गति नहीं ।
"सुन्दर" सकल विधि एक पतिव्रत है ॥ ४ ॥

प्रात के होते ही जुल्फें सजाय ।
बाला आला शृङ्गार सज सोलहू दर्शायेंगी ॥
मुख में दै पान तेल डाल सिर लवंडर क्रीम ।
साबुन सो धोय धोय मैल को छुड़ायेंगी ॥
कंघी पिन दीन्हे हाथ रिस्टवाच शोभित जन ।
बेश्या नवेली कीर्ति कुल की डहायेंगी ॥
ऐड़ीदार जूती पुनि चश्मा सो राजित नैन ।
क्या ऐसी ये कुल्टा धर्म पातिव्रत निभायेंगी ॥ ५ ॥

(दिखाय के ताल) कंहरवा

ध्वनि—चले जाना नहीं नैना मिलाय के ॥
ऊधो जाना नहीं बृज मे भुलायके, वहां गोपी रक्खेगी भरमायके
अपनी झोली के ज्ञान ऊधो अपने पास रखना ।
ज्ञान की बात किसी गोपी से नही तो कहना ॥
रह जाओगे वहां पै बौराय के, वहां गोपी रक्खेगी भरमाय के ॥
बन के बैरागिन गोपी बाट निहारती ॥
प्रेम मयी हो कृष्ण कृष्ण को पुकारती ॥
"व्याकुल" बिरही को दरश दिखाय के, वहां गोपी रक्खेगी ॥
"व्याकुल"

४५—है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नही

कहा घनश्याम ने ऊधो से बृन्दावन ज़रा आना ।
वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना ॥



विरह की वेदना में वे सदा बेचैन रहती हैं।
तड़पकर! आह भर कर और रो--रो कर ये कहती हैं॥
है प्रेम जगत में सार......॥
कहा ऊधो ने हँस कर मैं अभी जाता हूँ वृन्दावन।
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बन्धन॥
हैं कैसी गोपियाँ जो ज्ञान बल को कम बताती हैं।
निरर्थक लोक लीला का यही गुण गान गाती हैं॥
है प्रेम जगत में सार......॥
चले मथुरा से जब कुछ दूर वृन्दावन निकट आया।
वहीं से प्रेम ने अपना अनोखा रंग दिखलाया॥
उलझ कर वस्त्र में कांटे लगे ऊधो को समझाने।
तुम्हारा ज्ञान--परदा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने॥
है प्रेम जगत में सार......॥
विटप झुक कर यह कहते थे इधर आओ--इधर आओ।
पपीहा कर रहा था पी कहाँ, यह भी तो बतलाओ॥
नदी यमुना की धारा, शब्द हर--हर का सुनाती थी।
भ्रमर गुन्जार से भी यह मधुर आवाज़ आती थी॥
है प्रेम जगत में सार......॥
ग़रज पहुँचे वहां था गोपियों का जिस जगह मण्डल।
वहां थी शांति पृथ्वी वायु धीमी व्योम था निर्मल॥



सहस्रों गोपियों के मध्य में थीं राधिका रानी, ॥
सभी के मुख से रह-रह कर निकलती थी यही वानी।
है प्रेम जगत में सार..... ॥ ५ ॥

कहा ऊधो ने यह बढ़कर कि मैं मथुरा से आया हूं,
सुनाता हूं सन्देशा श्याम का जो साथ लाया हूं।
कि जब यह आत्मसत्ता ही अलख निर्गुण कहाती है,
तो फिर क्यों मोह वश होकर, वृथा यह गान गाती है ॥
है प्रेम जगत में सार ... ॥ ६ ॥

कहा श्री राधिका ने तुम सन्देशा खूब लाये हो,
मगर यह याद रक्खो ? प्रेम की नगरी में आये हो।
संभालो योग की पूंजी, न हाथों से निकल जाये,
कहीं विरहाग्नि में ये ज्ञान की पोथी न जल जाये ॥
है प्रेम जगत में सार... ...॥ ७ ॥

अगर निर्गुण हैं हम-तुम कौन कहता है खबर किसकी,
अलख हम तुम हैं तो किस किस को लखती है नजर किसकी।
जो हो अद्वैत के कायल, तो फिर क्यों द्वैत लेते हो ?
अरे! खुद ब्रह्म होकर ब्रह्म को उपदेश देते हो ?
है प्रेम जगत मे सार... ॥ ८ ॥

अभी तुम खुद नहीं समझे कि किसको योग कहते हैं,
सुनो इस तौर, योगी द्वैत में अद्वैत रहते हैं।



उधर मोहन बने राधा वियोगिन की जुदाई में,
इधर राधा बनी हैं श्याम, मोहन की जुदाई में।
है प्रेम जगत में सार……॥ ९ ॥

सुना जब प्रेम का अद्वैत, ऊधो की खुली आंखें।
पड़ी थी ज्ञान मद की धूल जिनमें वह धुली आंखें।
हुआ रोमांच तन में "बिन्दु" आंखों से निकल आया,
गिरे श्री राधिका पग पर, कहा गुरु मन्त्र यह पाया।
है प्रेम जगत में सार…॥ १० ॥

ले० पूज्यपाद श्री १०८ बिन्दुजी महाराज वृन्दावन

❀ रागिनी भैरवी ताल कहरवा ❀

मैं हरि, पतित-पावन सुने।
मैं पतित, तुम पतित-पावन, दोऊ बानक बने॥
व्याध गनिका गज अजामिल, साखि निगमनि भने।
और अधम अनेक तारे, जात कापै गने॥
जानि नाम अजानि लीन्हें, नरक जमपुर मने।
दास तुलसी सरन आयो राखिये आपने॥

❀ ४६—संकीर्तन ❀

चौपाई—कृत युग सब योगी विज्ञानी।
करि हरि ध्यान तरहिं भवप्रानी॥ सतयुग॥

त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ।
प्रभुहि समर्पि कर्म भवतरहीं ।। त्रेता ।।
द्वापर करि रघुपति पद पूजा ।
नर भव तरहिं उपाय न दूजा ।। द्वापर ।।
कलियुग केवल हरि गुण गाहा ।
सुमिरत नर पावहि भवथाहा ।। कलयुग ।।
कलयुग योग यज्ञ नहिं जाना ।
एक अधार रामगुण गाना ।
सब भरोस तजि जो भज रामहिं ।
प्रेम समेत गाव गुण ग्रामहिं ।।
सो भव तर कछु संशय नाहीं ।
नाम प्रताप प्रकट कलिमाहीं ।।

दोहा - कलियुग समयुग आननहिं, जो नर कर विश्वास ।
गाई रामगुण गण 'विमल'भव तरि त्रिनहिं प्रयास ।।

चौपाई—नट कृत कपट, विकट खगराया ।
नट सेवकहिं न व्यापै माया ।।
छल तजि करहिं रामगुण गाना ।
शुक सनकादि सकल यह जाना ।।

दोहा—सब जग ईश्वर रूप है, भलो बुरो नहिं कोय ।
जैसी जाकी भावना, तैसो ही फल होय ।।

इसलिये हरि भजो

तुलसी कौशल राजभज मत चितवै चहुं ओर ।



सीताराम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥
हाथ उठाके कहत हैं, कहूँ बजाई ढोल।
स्वांसा खाली जात है, तीनों लोक का मोल ॥

"श्रीगोस्वामीजी महाराज"

परम भक्त रविदास भी यही कहते हैं—

हरि सा हीरा छाड़िके, करे आन की आस।
ते नर यमपुर जायँगे सत भाखै "रविदास" ॥

श्लोक-कृते यद्ध्यातो विष्णु त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यातः कलौ तद्धरिकिर्त्तनात् ॥

वार्ता सत्ययुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञों और द्वापर में परिचर्या से जो पद प्राप्त होता था वही कलियुग में केवल श्री हरिनाम-कीर्त्तन से प्राप्त होता है।

❀ ४७—सुखी स्वराज्य ❀

पूज्य श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज ने स्वराज्य का स्वरूप बतलाते हुये लिखा कि

चौ०—राम वास बन सम्पति भ्राजा।
सुखी प्रजा जनु पाई सु राजा ॥
अलिगण गावत नाचत मोरा।
जनु स्वराज्य मंगल चहुँ ओरा ॥

अर्क जवास पातविनु भयऊ।
जनु स्वराज्य खल उद्यम गयऊ॥
विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा।
प्रजा बाढ़ि जिमि पाइ स्वराजा॥ इत्यादि॥

वार्ता-इन युक्तियों में सुखका वर्णन मिलता है इसके विपरीत होने पर श्रीविश्वामित्र जी महाराज श्रीदशरथजी के यहां पहुंचे और कहा कि—

चौ०—असुर समूह सतावहिं मोही।
मैं याचन आयहुं नृप तोही॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा।
निश्चर बध मैं होब सनाथा॥

वार्ता—स्वराज्य की प्रजा भी मन माने कर्म करने वाली उच्छृ-ङ्खल (अथवा) स्वार्थ पूर्ण नहीं होती "परहित चिन्तन' धर्म प्रेम" स्वत्माभिमान के गुण उनमे कैसे होते हैं। यह श्रीरामचरित मानस मे इस प्रकार दिखाया है कि—

चौ०-पुर नर नारि सुभग शुचि सन्ता।
धर्म शील ग्यानी गुण वन्ता॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती॥

और भी अवलोकन करें।

जाई सुराज सुदेश दुखारा।
भई भरत गति तेहि अनुहारो॥ इत्यादि॥



श्रीरामचरित मानस के अनुसार 'स्वराज्य" के प्रबन्ध कर्ता कैसे हों कृपया ध्यान से पढ़ें और मनन करें।

सकल अंग सम्पन्न सुराऊ।
राम चरण आश्रित चित चाऊ॥
सचिव विराग विवेक नरेशू।
विपिन सुहावन पावन देशू॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी।
माधव सरिस मीत हितकारी॥
भट यम नियम शैल रजधानी।
शान्ति सुमति श्रद्धा प्रिय रानी॥
चारि पदारथ भरा भँडारू।
पुण्य प्रदेश देश अति चारू॥

जीति मोह महिपाल दल, सहित विवेक सुआल।
करत अकटंक राज्य पुर, सुख संपदा सुकाल॥

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवश नरक अधिकारी॥
मुनि तापस जिनते दुख लहही।
ते नरेश बिन पावक दहहीं॥
गुरु सुर सन्त पिता महिदेवा।
करहि सदा नृप सबकै सेवा॥
दिन प्रति देइ विविध विध दाना।
सुनइ शास्त्र वर वेद पुराणा॥

मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहि एक।
पालहि पोषहि सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

उस समय—

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहीं काहुहि व्यापा॥
अल्प मृत्यु नहीं कवनिउ पीरा। सब सुन्दर सब बिरुज शरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहि कोउ अबुध न लच्छनहीना
सब गुनज्ञ पंडित सब ज्ञानी। सब कृतज्ञ नहि कपट सयानी॥

लेखक—

प्रातः स्मरणीय पूज्य १०८ श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज

❋ बारहवां भाग ❋

❋ ४८—स्वतन्त्रता ❋

आज हिमालय की चोटी पर भगवा ध्वज लहरायेगा।
हिन्दू राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥
इसी ध्वजा को रामचन्द्र ने जा लङ्का पर फहराया।
इसी ध्वजा को चन्द्रगुप्त ने हिन्दूकुश पर लहराया॥
हूण और शक कुचल इसी ने भारत का गौरव गाया।
मरहठों से मुग़ल तख्त को चूर-चूर कर तुड़वाया॥
वीर शिवा राणा प्रताप के पद चिन्हों पर जायेगा।
हिन्दू-राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥१॥

इसकी रक्षा हित महिलाओं ने गोली बर्छी खाई।
सती पद्मिनी ने जीते जी देह चिता में जलवाई॥
इसी ध्वजा को लिये हाथ में झाँसी की रानी आई।
इसकी रक्षा हित कितने ही वीरों ने फाँसी पाई॥
भारतीय बलिदानों की यह गौरव-गाथा गायेगा।
हिन्दू-राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥२॥
देश जाति पर आत्म-त्याग का पावनतम संदेश लिये।
हिन्दू-राष्ट्र की एक भावमय समता का निर्देश लिये॥
आत्मज्ञान है लक्ष्य हमारा यह उज्ज्वल उपदेश लिये।
स्वतंत्रता की रक्षा में रणचण्डी का आदेश लिये॥
भारत माँ के शुभ भाल पर कुंकुम सा लहरायेगा।
हिन्दू-राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥३॥
सिक्ख जाति इसकी रक्षा को कर में लिये कृपाण खड़ी।
जाट गोरखे और मराठों की सेना तय्यार खड़ी॥
सावरकर के सिंहनाद से हिन्दू जनता जाग पड़ी।
हिन्दुस्तान हिन्दुओ का है चारो ओर पुकार पड़ी॥
हिन्दू द्रोही जिधर बढ़ेगा लोहे से टकरायेगा।
हिन्दू-राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥४॥
इसी ध्वजा को लेकर कर में मातृभूमि स्वाधीन करें।
जीवन हो या चिर-निद्रा पर इसी हेतु संघर्ष करें॥

ऊँच नीच का भेद मिटा दें माँ का दुःख दारिद्र हरें।
फिर जन्में हम इसी भूमि पर यही भाव उर धरें मरें॥
देखें कौन हमारे जीते इसका मान घटायेगा।
हिन्दू-राष्ट्र हुआ जाग्रत भारत को स्वर्ग बनायेगा॥

❀ रागिनी भैरवी ताल कंहरवा ❀

जो जीतते हैं मनको विजयी वो कहाते हैं।
दुनियां में कुछ तो वहही करके भी दिखाते हैं॥
फुलवारियों में रहती लाखों तरह की कलियां।
आती सुगन्ध जिसमें वो फूल कहाते हैं॥
दुनियां में बहुत योघा होंगे बहुत हुये हैं।
पर-बचता बुराइयों से जो वो वीर कहाते हैं॥
पन्डित बहुत से पोथी पढ़ते हैं रात दिन वो।
पढ़कर हुआ जो ज्ञानी पन्डित वो कहाते हैं॥
पाकर मनुष्ययोनी हरिको न याद करते।
यूं ही जनम वो अपना "व्याकुल" हो गवाते हैं॥

❀ ४६—वीर अर्जुन वो उर्वशी ❀

दो०—चर्णों में मस्तक झुका, कर मन मोहन ध्यान।
अर्जुन से रण वीर का, करूं आज गुणगान॥
इस भारत के लाल थे, कैसे परम पवित्र।
अर्जुन वो उर्वशी का, सुनिये आज चरित्र॥

यह कथा इन्द्र दर्बार की है अति सुन्दर वो सुकुमारी थी ।
संगीत कलामें भी प्रवीण उर्वशी नाम की नारी थी ॥
दर्बार में जाकर प्रतिदिन वो संगीत सुनाया करती थी ।
अपनी ही कला वो कौशल से तो जी बहलाया करती थी ॥
जब बांण पाशुपत लेने को अर्जुन इन्द्रासन जाते हैं ।
सब देव गणों के साथ साथ आदर से बिठाये जाते हैं ॥
तब वहां एक दर्बार हुआ उर्वशी उस समय आती है ॥
अर्जुन को स्वच्छ हृदय से वो संगीत वहां पै सुनाती है ॥
पर इन्द्र वहां पर सोच रहे पहिले इसकी परीक्षा लेगें ।
है कृष्ण चन्द्र का पुर्णभक्त इसको अवश्य शिक्षा देगें ॥
दोहा – हुवा इशारा इन्द्र का, डिगे ये भारत वीर ।
ऐसा बांण चलाओ तुम, चुभ जाये जो तीर ॥
समय सुबह काथा वहां, शुरू हुवा जब गान ।
उधर उदय हो रहे थे, श्रीभास्कर भगवान ॥
प्रथमहि भैरव रागकी, सरगम दी जब टेर ।
मस्त हो गये देवगण, लगी नहीं कुछ देर ॥
फिर भैरव को प्रिय भैरवी उर्वशी वहां पै सुनाने लगी ।
मधु माध वैराटी बंगाली सिन्धवी वहां पै गाने लगी ॥
फिर टौड़ी आसावरी को गा सबके दिल को वो रिझाने लगी
और मालकौश को गा करके पत्थर सा दिल पिघलाने लगी

दो०–रागरङ्ग का जब हुवा, किस्सा यहाँ समाप्त।
आगे का है दृश्य ये, हुई जब आधी रात॥
कर सोलह शृंगार वो, आई वो बलखात।
अर्जुन से कहने लगी, करनी है कुछ बात॥

वह कृष्णचन्द्र का सच्चा भक्त कुन्ती के आँख का तारा था
था कुटी में अर्जुन वीर पड़ा और मुसीबतों का मारा था॥
फौरन उठ करके वीर धनुष कन्धे पे अपने डाल लिया।
जो भरा था तर्कश बाणों से हाथों से उसे संभाल लिया॥
तब कहा पार्थने ऐ देवी किस कारण से तुम आई हो।
ये साफ साफ बतलाओ हमें किस बात से तुम घबराई हो॥
जो भी विपदा हो पड़ी हुई उसको मैं जल्द मिटाऊँगा।
बतलाओ शीघ्र अभी हमसे मैं जल्दी उसे हटाऊँगा॥
अपने बाणों से पापी को क्षण भरमें मार गिराऊँगा।
सौगन्ध से कहता हूँ देवी आकर तब मुँह दिखलाऊँगा॥

दो०–कहा उर्वशी ने सुनो, मेरे हृदय का हाल।
मेरे वचनों पर अभी, करना होगा ख्याल॥
ये तन ये मन धन आपका, करें आप विश्वास।
हेतु प्रेम आई यहां, पार्थ तुम्हारे पास॥

हो आप की तरह वीर पुत्र ये इच्छा लेकर आई हूँ।
भारत वसुन्धरा के हो लाल ये भिक्षा लेने आई हूँ॥

और मेरा प्रेम भी पूरा हो जो दिलमें मेरे लगी हुई।
बस आप आज से सगे हुये और मैं भी आपकी सगी हुई॥
दो०-ये सुनते ही पार्थ के, रक्त हो गये नैन।
क्रोध दबा बोले तभी, सुनो मेरी एक बैन॥
हूँ मैं जहां का उर्वशी, है मुझको ये हर्ष।
सबमें वो सिरमौर है, है वो भारत बर्ष॥
मैं भारत बर्ष का सेवक हूं इस कार्य्य से हमें, लानी है।
मैं ऐसा कभी न करने का इससे बहुतेरी हानी है॥
खन्डन जब ब्रह्मचर्य्य होगा चेहरा फीका पड़ जायेगा।
भारत मां के सिर पै कलंक का टीका भी लग जायेगा॥
फिर वृथा ही तू ६ मांस की मां क्यों कर तकलीफ उठायेगी
पालन पोषन के करने में क्यों कर ये समय गवांयेगी॥
ये हृदय से कहता हूं कि तूं अब मेरी जन्म दाता बनजा।
मैं आज से तेरा पुत्र बनूं और तूं मेरी माता बनजा॥
दो०--गिरिजा नन्दन गज बदन, शंकर तनय गणेश।
जय जय माता सरस्वती, जय जय भारत देश॥

श्री "व्याकुल" जी महाराज

❀ ५० श्रीकृष्णजी के प्रति ❀

(रचयिता कुँवर श्रीराजेन्द्रसिंहजी एम०ए० एल०एल०बी०)

मेरे उरदेशमें समाया घोर अन्धकार,
मायाकी मरीचिका भी व्याप गई तनमें।

मोह, मद, मत्सर, सचेत प्रहरीसे यहाँ
जाग रहे देखो इस विजन भवन में ॥
आपके मनोनुकूल योगोंका सँयोग मंजु
सहज दिखाई पड़ता है मेरे मनमें।
भाता अवतीर्ण होना बंदीगृह में ही नाथ।
लेते अवतार क्यों न मानस-सदनमें ॥ १ ॥
बोलते नहीं हो, मौन कैसे हो रहे हो नाथ।
कबसे पुकारता हमारा कण्ठ-कीर है।
जाने कबसे हैं प्राण व्याकुल तुम्हारे लिये।
अब तो हमारा धीर भी हुआ अधीर है ॥
चरण-सरोजके पखारने को एक बार,
झर झर बहता सदैव नैन-नीर है।
कैसे समझाऊं तुम्हें कैसे समझोगे तुम
कैसी पीर मनके भरोरकी गंभीर है ॥ २ ॥
आओ व्रजराज! आज स्वागत तुम्हारा करें,
अश्रु-मोतियोंकी मृदुमाला पहिनायें हम।
जैसे सहते सदा ही रहे दुख द्वन्द,
तिनकी कहानी नेक तुमको सुनायें हम ॥
माया के प्रपंचमें फँसाया हमको जो यहां
खोल उर-द्वार निज हृदय दिखायें हम।
देखें हम भी तो तुम कैसे हो निठुर नाथ,
क्यों न मन प्राण दे, तुम्हारे बन जायें हम ॥ ३ ॥



पातक अपारका हमारे पारावार नहीं,
तो भी क्या तुम्हारे होके हम दुख पायेंगे।
क्या न तुम्हें आयेगी कहो तो ब्रजराज लाज;
कातर हो नैन जब नीर झर लायेंगे॥
तुम अपनाओ हमें चाहे भूल जाओ देव
हम तो तुम्हारे सब भांति कहलायेंगे।
क्यों न नाथ। लेते फिर तार या उबार हमें,
हमभी तुम्हारा गुणगान सदा गायेंगे। ४॥
स्वागत तुम्हारा हो हमारे मनोमन्दिर में,
कोमल कलेजे में निवास छविधाम हो।
अङ्ग अङ्ग में हो सुघराई छटा छाई हुई
ललित लुनाई लोल लोचनाभिराम हो॥
प्राणोंमें सदा ही पहुनाइ हो तुम्हारी मंजु,
साँसो में समायी नाथ। सुरभि ललाम हो।
रोम-रोम मे हों पगे भक्तिभावनाके भाव,
रसना रसीली पै तुम्हारा शुभ नाम हो॥ ५॥

❀ ५१ स्वराज्य सन्ताप ❀

दो०-देश भक्ति सस्ती भई, यह स्वराज्य का हाल।
खद्दर पहिने सेठजी, बना रहे हैं माल॥
माया जाल रचा करें, और मचावैं शोर।
जगमें सुख से रहत हैं, केवल चन्दा खोर॥
मित्रो जो धन चाहिये, लो यह मन्त्र विचार।
आंख मूँद बेफिक्र हो, करो चोर बाजार॥

पद पाये जबते नये, चलै न पद दुइचार ।
अबतो नेता बन गये, बिना कार बेकार ॥
नेता बनिये लघु नहीं, मिलिये सबसे धाय ।
ना जाने केहि कालमें, को मन्त्री बन जाय ॥
सत्य रहित हिंसा सहित करें कर्म अतिनिन्द ।
तबहूँ द्वारे पै लिखें, जै गान्धी जै हिन्द ॥
करके सकल कुकर्म भी, जो लोगे धन जोड़ ।
निश्चय सब छुप जायगा, कितना हूँ हो कोड़ ॥
कलयुग के गुण बहुत हैं, कितना करूं बखान ।
खावैं पीवैं लूट लें, सबमें वही महान ॥
नेता बनना होजिसे, सरल सुलभ यह सार ।
चमकेगी नेतागिरी, ले लो मोटर कार ॥
बाबू यह जग आइके, पहले हो यह काम ।
अखबारों में रोज ही, छपे किसी विधि नाम ॥
कुंडली-पहले दन्ड प्रणाम था, नारायण गोविन्द ।
अब पकड़ नमस्ते का गला, चढ़ बैठा जयहिन्द ॥
चढ़ बैठा जयहिन्द हिन्द की भई सफाई ।
पट परि गयो प्रणाम पैलगी दूर भगाई ॥
आदाबअर्ज़ तस्लीम बन्दगी गुडमानिङ्ग सलाम ।
सब जाये जन्मभूमि से बचा रहे जैराम ॥



❀ श्रीहरिः ❀

१२-१२-२६

भारतवर्ष में अनादिकाल से संगीत विद्या का प्रचार सुनने में आता है। इसके आविर्भावक प्राचीन समयके देवगण तथा ऋषि गण इतिहास से अवगत होते हैं। भगवान शंकर इसके प्रथम आचार्य हैं। उनके डमरूवाद्य से स्वर, ताल, लय, आविर्भूत हुए हैं। इनके अतिरिक्त जगदम्बा सरस्वती, देवर्षि नारद, विश्वावसु और तुम्बरू आदि उनके देवी और देवगण पूर्वकालमें इनके प्रचारक हुए हैं। इस विद्या का अधिक सम्बन्ध सामबेद से है। संगीत पारिजात,आदि उनके ग्रन्थ इस विद्या के महत्व का परिचय करा रहे हैं। भरत मुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र इस विषय का अलौकिक रहस्यपूर्ण तथा भावमय अद्वतीय ग्रन्थ है। इस विद्या का उपयोग शृङ्गार से लेकर शान्तरस तक पूर्वाचार्यों ने किया है भारत के दुर्भाग्य से आज कल इस विद्या का अस्पृश्य नीच जातियों में अधिकतर प्रचार पाया जाता है। इसी कारण इस कार्य के करने वाले उच्च कोटि के सज्जन भी हीन दृष्टि से देखे जाते है। परन्तु वास्तव में यह विषय उपेक्षा का नही है। इसके मर्मज्ञ विद्वान आजकल भी अनेक स्थलों मे भारत में पाये जाते हैं। जो इस कला से परिचय नहीं रखता है वह साहित्यज्ञों की दृष्टिमें 'पुच्छ विषाण हीन' पशु समझा जाता है। इसके परिज्ञान के लिये स्वर ताल लय, राग, रागिणी आदि का परिज्ञान अत्यावश्यक है जो आजकल के गायकों में बहुत कम पाया जाता है। आज कल जो भजनोपदेश यत्र तत्र उपलब्ध होते हैं वे प्रायः राग रागिनी के परिज्ञान से सर्वथा शून्य है। और जो संगीतज्ञ हैं वे सनातन धर्मसभाओं के प्लेटफार्म पर अपनी संगीतकला के

कमजोर होने के कारण भजनोपदेशक होना स्वीकार नहीं करते हैं। इस कसमकस में सनातनधर्म सभाओं का मंच नीरस सा हो जाता है।

हर्ष की बात है कि हमारे चिरपरिचित पं० भगवतकिशोरजी 'व्याकुल' सि०हि० इस कलामें हमको बहुत योग्य प्रतीत हुये हैं। हम इनको सनातनधर्मसभाओं में कार्य करते हुये पचीस वर्ष से देखते हैं। इनमे संगीत कला का पाण्डित्य तथा धर्मप्रेम दोनों ही एक साथ मिलते जुलते काम करते हैं। ये वर्तमान समय के समस्त गायकों में हमें उच्चतर आदर्शभूत प्रतीत हुये हैं। इनको हमने सर्वत्र विजेता ही पाया है। भारत के किसी भी प्रान्त में इनके टक्कर का सनातनधर्मावलम्बी, भजनों पदेशक नहीं पाया है। हम सनातनधर्मावलम्बी जनता से आग्रह पूर्वक अनुरोध करते हैं कि वे इनको अपने उत्सवों में तथा विवाह यज्ञोपवीत आदि वैदिक संस्कारों के समय में बुलाकर धार्मिक संगीतों का अलौकिक प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें। जनता से इतना अनुरोध करने पर हम 'व्याकुल, जी को भी आशीर्वाद देते हैं कि वे उत्तरोत्तर धार्मिक संगीतों का जनता में प्रचार कर धर्म और अर्थ का संचय करने मे सर्वदा पुरुषार्थी रहें।

शास्त्रार्थ महारथी— ह० अखिलानन्द 'कविरत्न'
मु० पो० अनूपशहर
जि० बुलन्दशहर यू० पी०

॰ श्रीविश्वनाथो विजयते ॰

❀ श्लोक ❀

श्रीमच्छारवत् धर्मकर्मनिपुणः संगीतविद्यानिधिः ॥
विद्वद्भक्तिपरायणः प्रतिपल सम्मर्दयन्नास्तिकान् ॥
श्रीमद्वैदिकधर्म मर्मनिवहे दत्तादरः सर्वदा ॥
श्रीमान् श्रीभगवतकिशोर सुजनेजीव्याच्चिरं "व्याकुल,, ॥

युक्त प्रान्तीय मु० सुरतानपुर पो० पवई जि० आजमगढ़ निवासी संगीत सम्राट सितारेहिन्द संकीर्तन कलानिधि श्रीमान् पं० भगवतकिशोरजी "व्याकुल,, को मैं अनेक वर्षों से जानता हूं। मैंने इनको अनेक सनातनधर्म सभाओं में अनेक बार सुमुधुर संगीत द्वारा एवं वीच २ में भव्य भूमिका के अपूर्व भावों से जनता को मुग्ध करते हुये देखा है। जिन सभाओं में "व्याकुल, जी ने एक बार भी भजनोपदेशों से धर्मप्रचार का कार्य किया है वे सदा "व्याकुल,, जी के लिये व्याकुल, एवं लालायित रहते हैं। इनके द्वारा सनातनधर्म का अच्छा प्रचार हो रहा हैं। इन्होंने सनातनधम का मर्म जताने वाले संगीत के विविध पुस्तकों का प्रणयन किया है। ये संगीत के उच्च कोटि के विद्वान् और धर्म प्रचार शैली के पूर्ण मर्मज्ञ होते हुए भी बड़े ही विनोत और भगवान् तथा विद्वानों के परम भक्त हैं। इन्हें भगवान् विश्वनाथ चिरंजीवो एवं उन्नति पथ पर अग्रसर करें।

शास्त्रार्थ महारथी— द० गङ्गा विष्णु शास्त्री
भारतधर्म महामण्डल काशी
१२—१२—२६

ऐलान—

संगीतसम्राट श्रीपं० भगवतकिशोरजी व्य

स० ध० प्र० को बुलाने का नियम

शेर-शर्त जो लिक्खा है इसमें, उसको पहले मान लें
हेतु गायन वाद्य के जायंगे तब ये जान लें ॥

१—श्री पं० जी को केवल धार्मिक भाव के ही सज्जन अपने यहां बुलायें अन्य नहीं। फूहर और फोश गायन सुनने वाले सज्जन कृपया कभी न बुलायें।

२—पं० जी का गायन वाद्य कथा कीर्तन इत्यादि ये सब चीजें व्यास गद्दी पर बैठ कर ही हो सकेगा नीचे बैठ कर कदापि नहीं।

३—२४ घण्टे के अन्दर सिर्फ एकही बार २॥ या ३ घण्टे तक सभावों मे जनता जनार्दन की सेवा हो सकेगी साथ ही रात्रमें १० बजे के बाद किसी भी हालत में श्री पं० जी सेवा न कर सकेंगे।

४—बैरङ्ग या उर्दू में चिट्ठियां न भेजे सिर्फ हिन्दी वो टिकट लगा हुआ ही भेजें। वह भी १ माह पहले सेही पत्र व्यवहार करें क्योंकि पं० जी को समय बहुत कम रहता है।

५—पं० जी का गायन वाद्य एवं व्याख्यान शहर गश्त या नगर कीर्तन में कदापि न हो सकेगा। भूलें नहीं पं० जी की सभी शर्तें अच्छी तरह समझलें सोचलें, तब बुलायें अन्यथा नहीं।

६—पं० जी के गायन वाद्य कथा कीर्तन एवं सत्संग सभा में बैठे या खड़े हुये सज्जनों को कोई भी मादक वस्तु नहीं खाना पीना होगा। न खा पीकर आनाही चाहिये।

७—दक्षिणा वगैरह के विषय में बुलाने वाले सज्जन स्वयं पत्र व्यवहार करें विवाह बारातों में श्री पं० जी बहुत कम जाते हैं सवारी का पूर्ण प्रबन्ध होने पर ही किसी ख़ास ख़ास स्थान पर पं० जी जाते हैं अन्यथा नहीं।

प्रार्थी—

प्रबन्धकर्ता निःशुल्क संगीतसदन

मु० पो० श्रीअयोध्याजी (धाम) उत्तर प्रदेश

पुस्तक मंगाने एवं पत्र व्यवहार, करने का (स्थाई पता)

प्रबन्धक नि शुल्क संगीतसदन,

पोष्ट-श्रीअयोध्याजी (धाम) उ० प्र०